साधना की सौरभ

'शासनश्री' साध्वी राजकुमारी

'गोगुन्दा'

'शासन श्री' साध्वी पानकुमारी (प्रथम)
डॉ. साध्वी परमयशा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शासन श्री साध्वी राजकुमारीजी के संथारा में उनके दर्शन हेतु पधारे
बीकानेर महंत सोमगिरी जी उपस्थित साध्वीवृंद एवं संसारपक्षीय परिवार

शासन श्री साध्वी राजकुमारीजी (गोगुन्दा) का संसार पक्षीय
गोगुंदा उदयपुर का चोरड़ीया परिवार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साधना की सौरभ

'शासन श्री' साध्वी राजकुमारी

'गोगुन्दा'

'शासन श्री' साध्वी पानकुमारी (प्रथम)

डॉ. साध्वी परमयशा श्री डूंगरगढ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं–341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080/224671
ई–मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

ISBN : 978-81-7195-306-6

संस्करण : प्रथम संस्करण 2016

मूल्य : ₹ 50/– (पचास रुपये मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर, फोन : 2418482

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

22 अगस्त 2015

जन्म लेना एक सामान्य बात है, परन्तु गुणसंपन्न जीवन जीना विशेष बात होती है। जो व्यक्ति संयम और परोपकार का जीवन जीता है, वह स्वयं धन्य बन जाता है।

साध्वी राजकुमारीजी 'गोगुन्दा' जीवन के प्रथम दशक में धर्मसंघ में दीक्षित हुई। उनका संयम पर्याय सुदीर्घ रहा। उन्हें तेरापंथ के चार आचार्यो के शासनकाल में साधना करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैंने उन्हें श्शासनश्रीश के रूप में संबोधित किया । उनका जीवनवृत्त पाठकों को आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाला बने, शुभाशंसा।

विराटनगर 'नेपाल' **आचार्य महाश्रमण**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रम

नए इतिहास का सृजन

❋ शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी का नाम तेरापंथ के इतिहास में अमर रहेगा। 01
❋ शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी का जीवन 03

पारिवारिक परिवेश–

❋ गोगुन्दा की राजकुमारी 05
❋ माँ की ममतामय छाँव 05
❋ गोगुन्दा की गरिमा 06
❋ शोभजी श्रावक की वंशज 07
❋ मुझे शोभजी ज्यों नया काम करना 07
❋ गोगुन्दा का चोरड़िया परिवार 08
❋ आचार्य श्री महाप्रज्ञ का अनुग्रह कन्हैयालाल जी एडवोकेट पर 08
❋ चम्पालाल स्वामी शासन श्री के पूज्यतात 09

कालू –युग का स्वर्णिम आलेख–

❋ कालू कर कमलों में सेवा का मेवा 10
❋ दीक्षोत्सव का अपूर्व उल्लास 11
❋ क्यों ले रही हो दीक्षा ? 12
❋ सिर पर बाल नहीं आए 13
❋ चारित्र चक्रवर्ती ने दिया चारित्र रत्न का वरदान 13
❋ प्रणम्य बन गयी साध्वी राजकुमारी 14
❋ 45 वीं कुंवारी कन्या 14
❋ मै 94 की नहीं, 96 की हूँ 14
❋ झमकू सति द्वारा प्रथम लोच 15
❋ संघ साधना का कल्पवृक्ष 15
❋ जीवन यात्रा में एक भूचाल 16

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

❋ उम्र से भी छोटी, कद से भी छोटी 16
❋ कालूगणि की अनपार कृपा 17
❋ गुरूकृपा का प्रसाद दोपहरी 17
❋ कालूयशोविलास से श्वास लयबद्ध 18
❋ साध्वी प्रमुखा कानसति की कृपा 19
❋ बचपन की बाल सुलभता 19
❋ सुन्दर और सुकुमार 19
❋ बड़ों से वंदना कैसे कराऊँ 20
❋ राजकुमारी नृपकन्या 20

गुरू द्धय का वरदहस्त –

❋ महामनस्वी महाप्रज्ञ की भगिनी 21
❋ आशीष अनुग्रह की बरसात 21
❋ प्रमोद भावना प्रशस्त है 22
❋ गुरूदेव के नाम से हिचकी रूक जाती 22
❋ आचार्य श्री तुलसी के समग्र शासन की द्रष्टा 23
❋ रामायण तो मुझे भी नहीं आता 23
❋ सफलता के सूत्र 24
❋ मैं वृद्ध नहीं हूँ 26
❋ कंठस्थ की कला 26
❋ कुशल व्याख्याता 27
❋ आलोक बांटा ज्ञान का 27
❋ स्वाध्याय की सुगंध 27
❋ पुरूषार्थ की दीपशिखा 28
❋ स्वस्थ जीवन शैली 29
❋ आहार संयम आरोग्य का प्रतिनिधि 29
❋ श्वास प्रेक्षा से मिलती है शक्ति 29
❋ आसन प्राणायाम का आकर्षण 30
❋ आदर्श दंत पंक्ति 30

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

❋ शिकवा शिकायत से दूर 31
❋ संघीय कला का नमूना 31
❋ लिपिकला में माहिर 31
❋ पदयात्रा से प्रभावना 32
❋ सतरह बार किए गुरूदर्शन 32
❋ स्थिरवास केन्द्र में नहीं रहना 33
❋ ज्योतिष की ज्ञाता 34
❋ तुला राशि न्याय प्रवण 34
❋ प्राचीन समय की मापक 34
❋ त्याग तप की दीप्ति 35
❋ सेवा से महानिर्जरा 35

पावन सन्निधि –परम पाथेय–

❋ साध्वी श्री खूमां जी की सेवा का मेवा 36
❋ 36 वर्ष 63 ज्यों खूमांजी के साथ 36
❋ साध्वी पान प्रथम के साथ सत्तर वर्ष 37
❋ 70 वर्षीय जोड़ी छोड़ चले 38
❋ सहयोग से अच्छा साधुपन पाला 38
❋ साध्वी पानकुमारी जी की विनम्रता अनुकरणीय 38
❋ काली मिर्च और नीम का अनुपान 39
❋ ईडवा चातुर्मास गुरूकृपा का प्रसाद 39
❋ बाढ़ की चपेट में गाँव जलजलाकार 40
❋ दो बालक चमत्कार दिखा गए 40
❋ वात्सल्य की सरिता ने कराया एम.ए. 41
❋ तुम्हें पीएच.डी. करना है 42
❋ द्वितीया के चन्द्रदर्शन की शौकीन 43

शासन कल्पतरू की छाँव –

❋ भिक्षु शासन का सहारा 44

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

❋ कोई बेडशोर नहीं 44
❋ हाथ पकड़कर ऊपर चढ़े 45
❋ सतरह घंटा कुर्सी पर विराजना 46
❋ न शुगर न प्रेशर न हॉर्ट प्रॉब्लम 46
❋ होम्योपैथिक दवा में विश्वास 47
❋ सोना समय को खोना है 47
❋ एक करवट में सोने की कला 47
❋ अल्पौपधि और अल्प बिछौना 48
❋ जापान की गुड़िया 48
❋ साता में असाता का उदय 49
❋ सर्दी में पैरों में घाव 49
❋ गैस क्या होती है ? 49
❋ चिकनाई क्यों लगाए ? 50
❋ एक माह से वस्त्र प्रक्षालन 50
❋ बुढ़ापे में बचपन की झलक 50
❋ न्यूज पेपर पढ़ने की शौकीन 51

महातपस्वी का आशीर्वाद–

❋ गुरूदृष्टि का वरदान 'शासन श्री' अलंकरण 51
❋ शासन श्री अग्रगण्य तुल्य है 52
❋ जागृत संयम की प्रतिनिधि 53
❋ दो–दो शासन श्री महामहिम का प्रसाद 53
❋ तेरापंथ में एक नम्बर रत्नाधिक 54
❋ आपको शतक बनाना है 54
❋ कालूगणि की शिष्या को देख आनन्दमग्न 54
❋ साधन द्वारा यात्रा का आदेश 55
❋ पांच चाकरी का अहोभाग्य 55
❋ चार पाट की सेवा का सुअवसर 55
❋ चार साध्वी प्रमुखाओं की ऊर्जा 56

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

❋ सात आचार्यों के साधु साध्वियों को देखा 56
❋ चार महामाताओं का दर्शन 56

नया अध्याय : नई रोशनी संथारा –

❋ अस्थमा का अटैक आठ जनवरी को 57
❋ 13 जनवरी को संथारे की भावना 58
❋ गुरू चरणों में निवेदन–एक दिन में तीन संदेश 60
❋ उदासर में अभूतपूर्व तैयारियां पूज्य स्वागत की 62
❋ पौष शुक्ला पूर्णिमा को पूज्यपाद उदासर में 63
❋ महासृजन के देव ने बनाया महाअध्याय संथारे का 64
❋ कीर्तिमान व्यक्तित्व आचार्य श्री महाश्रमण 65
❋ पूज्यप्रवर द्वारा अनशन अनुमोदना में त्याग प्रत्याख्यान 66
❋ दीपता संथारा –भजन मंडलियों का जयकारा 67
❋ महातपस्वी को जो कहा – कर दिखाया 67
❋ समता की वादियों में साधना की महक 68
❋ मैं मेरू ज्यों मजबूत हूँ 69
❋ मेरी क्या ताकत गुरूदेव की ताकत है 69
❋ संथारे में 13 से 23 तक कुर्सी पर 70
❋ एक जनवरी तक हाथ ऊँचा कर जीकारा 70
❋ अन्तिम सांस तक जागरूकता 70
❋ अद्भूत याद्दाश्त क्षमता 71
❋ ब्रह्म मुहूर्त्त में प्रत्येक मांगलिक कार्य 71
❋ शास्त्र सम्मत संलेखना 71
❋ संथारे का चमत्कार बिना चश्मे के देखना 72
❋ गुरूदेव ने संथारे का इन्हेलर दे दिया 72
❋ पूज्यपाद मुझे दर्शन देने पधारेंगे 72
❋ दो पूनम दो पक्खी महरबानी से 73
❋ परिषद् के मध्य दिया प्रभु ने संदेश 73
❋ प्रेक्षाध्यान से पादोपगमन ज्यों स्थिति 74

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

❋ एक फरवरी अंतिम रात 74
❋ अंतिम संस्कार का मेला 76
❋ परम पावन के उद्‌गार 76
❋ तन छूटे पर संकल्प न टूटे– महामहिम के विचार 77
❋ गुण गरिमा गीत 78
❋ पूज्यवरों के संदेश 79

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुति
नये इतिहास का सृजन – साध्वी राजकुमारी जी का जीवन

जिन्दगी दरिया नहीं जो लहरों में खो जाए,
जिन्दगी ख्वाब नहीं जो सपनों में खो जाए,
जिन्दगी का मकसद है नर से नारायण बनना,
जिन्दगी दर्पण नहीं है, जो चेहरों में खो जाए।

जिनके मन में मनस्विता, तन में तपस्विता, वचन में जिनवाणी की वर्चस्विता और आत्मा में अर्हम् ओजस्विता है। इन आराध्यों के नमन में जिनके हाथ जुड़े रहते। प्रकाशपुंज अनुशास्ताओं की अर्चा में सदैव विनतमुद्रा में मस्तक झुका हुआ रहता। उनके हाथों में कला थी। पैरों में अध्यात्म परिमल बांटने की गतिशीलता थी। उनकी शान्त सौम्य मुद्रा, मृदुभाषिता, अल्पभाषिता हर दर्शक को सम्मोहित कर लेती। जो भी आपके दर्शन करता, धन्यता का अनुभव करता।

स्वनामधन्या साध्वी श्री राजकुमारी जी आजन्म महावीर शासन का सुयश गाती रही। वीर भिक्षु की यथोगाथा का सितार बजाती रही। तेरापंथ शासन की अभिनव स्फुरणाए चाहे दान हो दया–अनुकंपा। अणुव्रत हो या प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान हो या नया मोड़ का अभियान– इनकी प्रेरणा में अपने समय को सार्थक समझती।

साध्वी श्री आगम ज्ञान, इतिहास ज्ञान, तत्त्वज्ञान की त्रिवेणी में अभिस्नात रहती। हमें समय–समय पर ज्ञान की गंगा, दर्शन की दीप्ति एवं चरित्र की चिन्मय लौ में चैतन्यमय बनाती रहती। समता–सरिता जीवन का हर घटक सौम्य था। उन्होनें तेरापंथ शासन की सुखशय्या में शयन करते हुए सब कुछ विलक्षण पाया। उनकी विलक्षणताओं का आंकड़ा चकित करने वाला है। नन्हीं वय में जैन संन्यास स्वीकार करना, जैनधर्म तेरापंथ भिक्षु शासन में 86 वर्ष का रिकॉर्ड संन्यास काल प्राप्त करना, अन्तिम वय में संथारा संलेखना ग्रहण करना, 21 दिवसीय संथारा संलेखना में अद्भूत नजारा दिखाना –ये ऐसी विरल विशेषताएं है जो हमें गौरवान्वित करती है।

साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) को शासन श्री का अलंकरण प्रदान करना आचार्य श्री महाश्रमण जी की महनीयता का परिचायक हैं। हमें सात्विक नाज है जो हमें शासन श्री जी की सेवा का स्वर्णिम अवसर मिला।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी राजकुमारी जी की स्मृतियां शेष है। हमें तरोताजा करती हैं एक ज्ञानमयी, एक दर्शनमयी, एक चारित्रमयी, एक तपोमयी और एक वीर्यमयी की यादें।

कितने खुशमिजाज शासनश्री साध्वी राज हम कैसे बताएँ,
गरिमामयी के अरमानों की शान-षौकत कैसे दिखाएं।
आचार-विचार, निष्ठा कमाल कमनीय थी उनकी,
चंद शब्दों मे, समतामयी की खूबियां कैसे गिनाएं ।।

परम कृपालु कालूर्गाण की वत्सलता ने जिनको मंगलमय बनाया। चारित्र चक्रवर्ती धर्म–धुरन्धर नवमासन पूज्य गुरूदेव आचार्य श्री तुलसी के समग्र शासन को जिन्होंने देखा। महामहिम की 'शुभ स्नेहिल' दृष्टि आपको अनवरत मिलती रहीं।

दशम् आचार्य, प्रज्ञापुरूष आचार्य श्री महाप्रज्ञ का उन्हे अनुग्रह प्राप्त हुआ उसे शब्दों में कहा नहीं जा सकता।

शांतिदूत, महातपस्वी, महामनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी के रूप में चतुर्थ आचार्य के जिस दिन उन्होनें दर्शन किए वे गद्‌गद् हर्ष विभोर हो गयी। उनकीं प्रसन्नता उस दिन शिखरों को छू रही थी। परम आचार कुशल एकादशवें अनुशास्ता की आपने तहेदिल से वर्धापना की।

साधना की दिशा में प्रस्थित साध्वी श्री की यथोगाथा लिखते हुए हमें अत्यन्त आहलाद् हो रहा है। परमश्रद्धेय महमनीषी आचार्य श्री महाश्रमण जी का आशीर्वाद, वन्दनीया महाश्रमणीजी की सतत प्रेरणा, शासन श्री साध्वी पान कुमारी जी (प्रथम) की मंगलभावना हमारी दिशा दर्शक रही है। साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी की सेवाभावना सहयोग सौहार्द और गौरवशाली तथ्यों संस्मरणों को यथावत् सांचे में फिट करने की मनोभावना उल्लेखनीय अनुकरणीय है इस कृति के धारने में सोनम रामपुरिया, उदासर, अंकिता चोरड़िया, उदासर, नीलम डागा, बीकानेर का सहयोग रहा। इसकी टाईप करने में सुशील जी बैद, व्यास कॉलोनी, बीकानेर वालों का विशेश सहयोग रहा। असीम उपकार है जिनका हमारे जीवन निर्माण में, गुरूकृपा से उन्हीं की यश परिमल उन चरणों में सादर समर्पित.....

डॉ. साध्वी परमयशा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गोगुन्दा की राजकुमारी–

साध्वी राजकुमारी जी का जन्म वि.सं. 1977 श्रावण शुक्ला अष्टमी को गोगुन्दा (उदयपुर) में हुआ। बालिका राजकुमारी ने दुनिया में पहली सांस ली, दादा पेमचन्दजी चोरड़िया के पैर धरती पर नहीं टिक पा रहे थे। दादी मां को अपार हर्ष था। पिता श्री चम्पालाल जी एवं मातु श्री फूलीदेवी की संस्कारी रत्नकुक्षि आपको पाकर खिल उठी। जनक जननी की गोद में किलकारिया करती, चोरड़िया परिवार में राजकुमारी सबके आकर्षण का केन्द्र थी। दादा–दादी ने लोरियों से नवकार मंत्र की जन्म घूंटी दी। ऊँ भिक्षु की आस्था के मनके पिरोए। नानी ने कहानियों से बालिका को संस्कारी बनाया। मां ने सिखाया – नवकार मंत्र बोले बिना मुंह में पानी भी नहीं लेना, पूज्यतात चम्पालाल जी ने अपनी लाडली बिटियां को सिखाया –ऊँ भिक्षु का जाप करो – भव सागर को पार करो। कोमल मानस की उर्वरा में चोरड़िया परिवार ने संस्कारों का बीज वपन किया। बीज वैराग्य के बरगद में परिणत होने लगा।

मां ने दिए संस्कार –

बचपन की बाल सुलभ चंचलता आप से कोसों दूर थी। नन्हीं बालिका लेटे लेटे घंटों आंखे बन्द कर रखती, मानो कायोत्सर्ग कर रही हो। अपलक आँखों से आकाश दर्शन करती जैसे अनिमेष प्रेक्षा कर रही हो। बालिका ने बैठना शुरू किया तो घंटों ध्यान की मुद्रा में स्थित रहती मानों पूर्व जन्मों से ध्यान साधना के संस्कार साथ लेकर आयी हो।

राजकुमारी को मां सहेलियों के साथ खेलने भेजती। थोड़ी देर सहेलियों के साथ क्रीडा करती और फिर कब आँख मिचौनी करती हुई राजकुमारी घर में आकर ध्यानस्थ हो जाती। मां फूली बाई ने पूछा – सब बच्चे खेलते है क्या तुझे खेलना अच्छा नहीं लगता। राजकुमारी ने जबाब दिया –मां ! ये खेल तो बहुत खेले है। मुझे रस्सी कूदना अच्छा नहीं लगता। गड्डे खेलना भी नहीं जचता। लुकमिचनी खेलना भी नहीं रूचता। निसरणी का खेल भी पसन्द नहीं है। खिलौनों से खेलने में भी आनन्द नहीं आता।मां ने कहा – बच्चे खेलते है। उनके शरीर का विकास होता है। हड्डियां मजबूत होती है। मांसपेशियां शक्तिशाली बनती है। शरीर में खून का संचार होता है तू ये खेल नहीं खेलेगीं तो तेरा तन कमजोर रह जायेगा।

राजकुमारी –मां ! मुझे ये सब खेल नापसन्द है। मुझे तो एक नया खेल खेलना है। वह खेल है ध्यान, जाप और स्वाध्याय का। मां ! तुम जब भिक्षु

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वामी का सुमिरन सुबह गाती हो तो मैं आत्म विभोर हो जाती हूँ। मां ! तुम सामयिक में नवपद का जाप करती हो तब मैं भी सोयी–सोयी जाप में तन्मय हो जाती हूँ। मां ! तुम ब्रह्म मुहूर्त्त में ध्यान करती हो, तब मैं नींद में नहीं होतीं तुम्हारे ध्यान के परमाणु मुझे भी ध्यानमय बना देते है। मां ! मुझे तो ये नये–नये खेल अच्छे लगते है।

गोगुन्दा की गरिमा –

महाराणा प्रताप के देश मेवाड़ में राजकुमारी ने जन्म लिया। राणाप्रताप की तरह राजपूती शान का परिचय दिया। गोगुन्दा की एक नामी हस्ती है मंत्री मुनि श्री मगनलाल जी स्वामी। जिन्होंने पांच आचार्यों का शासन देखा। गुरूओं की इंगित आकार की आराधना की। शासन के गौरव को दिग्दिगन्तव्यापी बनाया। गोगुन्दा वह ग्राम है जिसमे घोर तपस्वी मुनि श्री सुखलाल जी स्वामी शासन को दिए। मंत्री मुनि के गोगुन्दा में, घोर तपस्वी के गोगुन्दा में राजकुमारी का जन्म हुआ। इसे वे अपना सौभाग्य मानती। इस धरती से शासन में समर्पित है, मुनि श्री रवीन्द्र कुमार जी स्वामी, साध्वी दिव्य प्रभाजी, साध्वी मर्यादा श्री जी, साध्वी मलय प्रभाजी आदि .....गोगुन्दा के लिए एक युवक ने मुनि श्री सोहनलाल जी स्वामी को समस्या पूर्ति के लिए कहा। मुनि श्री सोहनलाल जी (चुरू) एक आशु कवि थे। धुरन्धर विद्वान थे उन्होंने गोगुन्दा की गरिमा का बयान करते हुए इस छन्द की रचना कर डाली। वह छन्द है –

विषम पहाड़ आसमान तै लड़ाई लेत,
कंदरा विषम बैठे सिंध छाक छूंछा है।
झंगी और झाड़ी कांटा कांकरा अपार ता मैं,
दौड़ा दौड़ बंदर लगावै लंब पूंछा है।
नदी और नाला खालां पाणी अणपार बहै,
ठोर ठोर मारग में खाड़ा और खूंचा है।
वायु की झकोल और बारिष की मोलजा मैं,
गोगुन्दा नगर नेक आबू से भी ऊँचा है॥

गोगुन्दा नगर को आबू से ऊँचा बताया गया है। ऐसी गरिमामयी धरा पर राजकुमारी का जन्म हुआ। एक राजदुलारी बालिका से नानाणा दादाणा सभी प्रसन्न हो रहे थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शोभजी श्रावक की वंशज –

आचार्य श्री भिक्षु संघर्षों की गहन घाटियों को पार करते हुए केलवां पधारे। आषाढी पूनम वि.सं. 1817 को तेरापंथ की स्थापना हुई। उस समय स्वामीजी के श्री मुख से सर्वप्रथम गुरूधारणा वहां के कोठारी चोरड़िया परिवार ने की। उनमें मुख्यतः ये व्यक्ति थे – केलवां, ठिकाणे के प्रधान मूणदास जी, सुप्रसिद्ध श्रावक शोभजी के दादा भैरोजी और केसोजी आदि। प्रारंभ में राजघराने में कोठयार का काम करने से इन्हें कोठारी जी कहा जाने लगा। वैसे ये सभी चोरड़िया थे। तेरापंथ के श्रावकों की ख्यात में जिन्होंने पहला दर्जा प्राप्त किया। कालान्तर में ये परिवार गोगुन्दा, उदयपुर आदि में बस गया। साध्वी राजकुमारी गौरव के साथ फरमाती –मैं शोभजी श्रावक की वंशज हूँ। मुझे किसी से कम मत समझना।

चाहें कितने तूफां आए, भले आए गमों की आंधिया।
इरादें मजबूत हैं मेरे, मुझको लिखनी नयी कहानियां॥

वे बहुधा फरमाती – शोभजी श्रावक उपसर्गो की घाटियों के बीच भिक्षु भक्त बने। भिक्षु स्वामी के 100 श्लोकों के पीछे वे दस श्लोकों की रचना करते। स्वामी जी ने 38000 पद्य प्रमाण रचना से संघ के भण्ड़ार को समृद्ध किया। वैसे ही शोभजी श्रावक 3800 गाथाओं का सृजन करते हुए भिक्षु भक्त हनुमान कहलाए। स्वामी जी के पद्चिन्हों पर चलते हुए शोभजी मजबूत इरादों से नयी कहानियाँ लिखते रहे। साध्वी राजकुमारी ने अपने ग्रन्थ लिपिबद्ध करके संघ के भण्डार की सुषमा बढ़ायी। आप भी आशु कविता करने मे निष्णात थी कोई तपस्वी ठिकाने में दर्शन करने आता। आप तत्काल दोहा बनाकर उसे सुना देती। हम साध्वियों का दीक्षा दिवस आता– आप हमारा हर्षवर्धन करते हुए प्रेरणा पाथेय स्वरूप तत्काल रचना करके दोहा फरमा देती। न कॉपी, न कलम सिर्फ जुबां और मस्तक का कमाल देख हम नतमस्तक हो जाती।

मुझे शोभजी ज्यों नया काम करना –

साध्वी श्री कहती – मैं शोभजी श्रावक की वंशज हूँ। मेरे हौसलें बुलन्द है। हौसलों को कभी पस्त नहीं करना चाहिए। जिसे खुद पर यकीन होता है वह हर घड़ी , हर पल चुस्त रहता है। पचपन में भी बचपन जैसा नजर आता है। गोल्ड मेडलिस्ट बनने की ऐसी जादूई छड़ी थी आपके पास। आप फरमाती तुम देखना मैं एक दिन नया आलेख रच कर जाऊँगी।

''आत्मशुद्धि के लिए मुझे प्राणवान काम करना है।
आकाश से उँचा भिक्षु शासन का नाम करना है।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वाकई में उन्होंने संथारा संलेखना, सुदीर्घ जीवन हमें दिखा दिया। शोभजी श्रावक की वंशज साध्वी श्री की बलिहारी जाते है।

तारीफ उनकी की जाती है जो काबिले तारीफ होते है।
उनकी क्या तारीफ करें जो खुद एक तारीफ होते है।

चोरड़िया परिवार की गौरवशाली विरासत –

सुखलाल जी चोरड़िया हाईकोर्ट के वकील थे। वे आपके बाबाजी के बेटे चचेरे भाई थे। वे एक नामी वकील थे। गणगणपति के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी। देव, गुरू निष्ठा के हंसते खिलते सदाबहार गुलाब थे। गुरूदेव तुलसी की उन अपार कृपादृष्टि थी। वे हर साल केन्द्र की सेवा में दीवाली पर आते। गुरू चरणों में गुरू उपासना का हार्दिक लाभ लेते। जैन समाज के कोर्ट के मुकदमें निष्काम भाव से सेवाभावना से हाथ में लेते और उन्हें जीत की मंजिल तक पहुँचा देते। सुखलाल जी चोरड़िया अपनी भगिनी राजकुमारी जी की सेवा में हर वर्ष आते। सामयिक, जाप, माला फेरना, प्रवचन सुनना, स्वाध्याय करना, नैतिकता से मुकदमें को सुलझाना उनकी दिनचर्या का विशिष्ट अंग था।

सुखलाल जी चोरड़िया के पुत्र श्रीमान् कन्हैयालाल जी चोरड़िया, रोशनलाल जी चोरड़िया अपनी बुआजी महाराज की सेवा करने अपने पिताजी की तरह आते। कई दिनों तक सेवाभक्ति का लाभ लेते हुए धन्य धन्य हो जाते दोनों ही भाईयों का दर्शन करने का हर साल का कार्यक्रम रहता।

आचार्य महाप्रज्ञ जी का अनुग्रह कन्हैयालाल जी चोरड़िया पर –

कन्हैयालाल जी चोरड़िया हाईकोर्ट के वकील है। मेवाड़ भर में जैन संस्थाओं के जितने भी मुकदमें होने है वे आप निस्पृहता से सफल बनाते है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शासन में तेरापंथ धर्मसंघ में बालदीक्षा का विरोध हुआ। कुछ मनचले लोगों ने मुकदमा कर दिया। कन्हैयालाल जी चोरड़िया ने जीजान से मेहनत करके मुकदमें को जीताया शासन का गौरव शिखरों पर चढ़ा दिया। आपके भीतर कोई अहं नहीं है। आप कहते है – हमारी क्या ताकत है जो हम मुकदमें को जीता सके। यह सारा भिक्षु स्वामी का, पूज्य गणाधिपति गुरूदेव तुलसी का, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का प्रताप और प्रभाव है। संघ जयवंता है परमपुण्यवान है इसी वजह से सर्वत्र इस शासन की जीत का डंका बजता है।

प्रज्ञा पुरूष आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने कन्हैयालाल जी पर अनुग्रह

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बरसाते हुए ''शासन सेवी'' अलंकरण प्रदान किया। लाडनूं चातुर्मास में महासभा के तत्वाधान में आचार्य प्रवर के दरबार में कन्हैयालाल जी का अभिनन्दन किया गया। पुनः श्रीडूंगरगढ़ मर्यादा महोत्सव में आपको ''श्रद्धानिष्ठ श्रावक'' का गौरव बगसाया। कन्हैयालाल जी साध्वी श्री के संसार पक्षीय भतीजे है। सेवा भावना के संस्कार उनमें कूट–कूट कर भरे है। इन दस वर्षों में तो इतनी बार दर्शन करने आते रहतें जब भी समाचार मिलता कि आपका स्वास्थ्य कुछ नरम है। गर्मी में लू लग रही है। सर्दी में श्वास लेने की तकलीफ, खांसी का प्रकोप ज्यादा हो रहा है तो आप तत्काल पहुँच जाते।

शासन श्री की सेवा में चोरड़िया परिवार –

उदासर में कितनी बार दर्शन किये जिसकी गिनती ही नहीं है। वे सेवा में आते तो शक्तिपीठ के सामने आशीर्वाद भवन में ठहरते। वहां के कर्मचारी जब आपसे पूछते कि आप बार–बार यहां क्यों आते है ?तब कन्हैयालाल जी कहते – हमारे बुआजी महाराज उदासर में विराजते है वे वयोवृद्ध है। उनका दशवां दशक चल रहा है वे हमारे परिवार की अमूल्य निधि है। तेरापंथ शासन की वे दुर्लभ आचार–निधि है। उनकी सेवा से हमें भारी लाभ होता है। सेवा हमारा दायित्व भी है।

साध्वी श्री की अन्तिम सेवा में आप 17 जनवरी को आए 2 फरवरी तक अनवरत संथारा संलेखना में सपरिवार कन्हैयालाल जी, भाई रोशन, टिलू, अरविन्द लब्धि, कुसुम, चन्दनबाला, हेमा, नियति जवाइंयों सहित रहे।

पूज्यतात चम्पालाल जी स्वामी –

चम्पालाल जी और फूली देवी की फुलवारी में एक फूल खिला। जिसे राजकुमारी नाम दिया गया। कहा जाता है सिंह के एक ही संतान होती है साध्वी श्री अपनी माता–पिता की इकलौती बेटी हुई। एक बेटी के जन्म के बाद माता–पिता ने आजीवन ब्रह्मचर्य का संकल्प ग्रहण कर लिया।

वि.सं. 1983 में पत्नी फूली देवी की अनुमति पाकर चम्पालालजी ने कालूगणि के कर कमलों से दीक्षा स्वीकार की। हालांकि वैराग्य रस से ओत–प्रोत फूली देवी भी थी। राजकुमारी भी जैन संन्यास ग्रहण करने की इच्छुक थी पर उन्हें दीक्षा का कल्प नहीं आया। तब मां ने बेटी राजकुमारी के दीक्षा कल्प के इन्तजार में गृहवास में रहने का निश्चय किया।

गोगुन्दा के चम्पालाल जी तेरापंथ में मुनि चम्पालाल जी बन गए। जन–जन के लिए वन्दनीय हो गये। उन्होंने गुरू चरणों में रहते हुए सेवा,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रद्धा, सहजता, सरलता का परिचय दिया। दशवैकालिक उत्तराध्ययन आदि ग्रन्थों का कंठीकरण किया। आगम बतीसी का वाचन किया। तत्त्वज्ञान के कई थोकड़ों को मुखस्थ किया। आचार–विचार कुशलता के साथ प्रवचन पटुता को हासिल किया।

वे बच्चों में अच्छे संस्कार भरते। युवाओं को धार्मिक प्रेरणा देते। वृद्धजनों की त्याग प्रव्याख्यान से झोली भरते। किसी को श्रावक के 12 व्रत धराते। किसी को 14 नियमों की प्रेरणा देते। किसी को शील की नवबाड़ सिखाते। किसी को थोकड़े याद करवाते। किसी को विध्नहरण मुणिन्द मोरा, विमल–विवेक आदि गीतों को सीखने की ऊर्जा भरते।

स्वाध्यायी, ध्यानी, मौनी, ज्ञानी मुनि श्री तुलसीगणि के कर कमलों में संयम साधना करते करते वि.स. 2000 को फाल्गुन शुक्ला नवमी चुरू में देवलोक पधार गए।

गुरूकृपा से उन्हें अन्तिम समय में संथारा आया। वे ऐसे दृढ़ मनोबली मुनि प्रवर थे कि 18 दिन चौविहार प्रत्याख्यान एक साथ किए। 13 वें दिन उनका संथारा सीझ किया। साध्वी राजकुमारी जी उनके संथारे में पिता मुनि श्री के दर्शन करने पधार रही थी। उनके वहां पहुँचने से पहले मुनि श्री का महाप्रयाण हो गया। कई बार मुनि श्री का दिव्य शक्ति के रूप में साध्वी राजकुमारी को साक्षात्कार होता था। साध्वी श्री के संथारे में भी पूज्य पिता मुनि श्री का पूर्व संकेत एवं साझ मिला। ऐसा उन्होंने अनुभव किया।

आचार्य श्री तुलसी ने मुनि श्री के स्वर्गवास के बाद दोहा सोरठा फरमाया –

''तप दस दिन चौविहार, तीन दिवस अणसण रही।
कीन्हों खेवो पार, चंगो मोटे गाँव को ''।।

गोगुन्दा का चोरड़िया परिवार सौभाग्यशाली है जिसमें भव्य आत्मा के रूप में मुनि श्री चम्पालाल जी आए। जिनशासन की जहाज में अवस्थित हुए। संयम के साम्राज्य की मौज करते हुए अलविदा हो गए। साध्वी राजकुमारी अपने पूज्य पिताश्री की हर मासिक पुण्यतिथि पर छः विगय का परिहार करती एवं उनकी स्मृति में रचित गीतों का संगान करते हुए हर्ष का अनुभव करती।

कालू कर कमलों में सेवा का मेवा –

मुनि श्री चम्पालाल जी गृहस्थी के ताने बाने छोड़ मुक्तिपथ के राही बन गये। बालिका राजकुमारी को साथ लेकर फूली बाई कालूगणि के कर कमलों

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

में सेवारत हो गयी। चार वर्ष की उम्र से गुरूकुलवास में आयी। उनके लिए नित्यक्रम थे – प्रवचन सुनना, दोपहर की सेवा करना, शाम को गुरू उपासना करना, चारित्रात्माओं के दर्शन करना, तत्त्वज्ञान सीखना, ढालें याद करना, हर वक्त अध्यात्म सत्संग से ऊर्जा प्राप्त करना, परमपूज्य से वार्तालाप करना। कभी–कभी गुरूदेव मां बेटी से बात करते। परमपूज्य श्री पूछते–क्या चम्पालाल जी स्वामी याद आते है ?माता–पुत्री ने जबाब दिया – वे संयम की मौज करते है। हम गुरूचरणों में मौज करते है। तब भला हमें उनकी याद क्या आएगी ?गुरूवर! आप ही हमारे माता–पिता एवं बन्धु और सर्वस्व है। हमारे पास तो हर समय गुरूता पूर्ण गुरूदेव की छतरी है। गुरूवर के रक्षा कवच में हम रहते है। मां बेटी ने कहा – गुरूदेव हम दोनों की दीक्षा लेने की तीव्र भावना है। हम संयमी जीवन का पल–पल इंतजार कर रही है। वह सौभाग्य शाली दिन कब आएगा ? जब हम भी चम्पालाल जी स्वामी की तरह साधुत्व के सुखों का आनन्द लेगें।

मां फूली बाई ने कहा – गुरूदेव अब राजकुमारी का दीक्षा कल्प आने वाला है। सेवा में रहते रहते यह परिपक्व हो गयी है। अपने पिता के साथ यह दीक्षा नहीं ले सकी क्योंकि उस समय इसकी उम्र छोटी थी। अन्यथा हम तीनों साथ में दीक्षा लेते। प्रभो ! मैं इसके लिए रूकी। चम्पालाल जी स्वामी को मैनें अन्तराय नहीं दी।

गुरूदेव हमें आपकी सेवा का मेवा मिल रहा है। यह हमारी किसी जन्म की पुण्याई का सुफल है। आप जहां जहां पधारते है हम भी साथ में सेवा करते है। नये–नये क्षेत्रों को देखते है। महामहिम खमाघणी अन्नदाता! आप कृपा कराएं। हमें दीक्षा का आदेश दिलाएं।

कालूगणि ने फरमाया – राजकुमारी को दीक्षा दे दे। तुम्हारें बारे में फिर सोचेगें। नन्हीं सी राजकुमारी ने कहा – आप करूणा के सागर है। हम मां बेटी दोनों को साथ में दीक्षा का आदेश फरमाएं।

कालूगणि ने माता–पुत्री की भावना को सुना, परखा और चैत्र शुक्ला सप्तमी को पड़िहारा में दीक्षा का आदेश घोषित कर दिया। माता–पुत्री की सहदीक्षा की उद्घोषणा से वातावरण जयकारों से गूंज उठा।

दीक्षोत्सव का अपूर्व उल्लास –

नन्हीं बालिका राजकुमारी साध्वी प्रमुखा कान कुमारी जी की दुलारी थी। गले में फूलों की माला पहने रमक–झमक करती कान सती के पास पहुँची। सविनय वंदना की। साध्वी प्रमुखा कान सती ने फरमाया – राजकुमारी पक्की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रही। देखो दीक्षा का आदेश ले लिया। सर्वत्र मां बेटी की दीक्षा की चर्चा होने लगी। राजकुमारी की उम्र भी छोटी और कद भी छोटा था। वह जन–जन के लिए आकर्षण का केन्द्र थी। वैरागिन मां बेटी को श्रद्धालु अपने घर बुलाते वन्दोला जीमाते।

''म्हारी छोटी सी वैरागण नै वैराग लागै प्यारो।
वैराग लागै प्यारो, संसार लागै खारो।।''

मेवाड़ गोगुन्दा से गार्हस्थ्य की अन्तिम विदाई लेने राजकुमारी अपनी मां के साथ अपने घर आयी। वहीं खुशनुमा माहौल गोगुन्दा में नजर आने लगा। सभी स्वजन, परिजन वैरागण को बुलाते है गीत गाते है। शुभ भविष्य की मंगलकामना करते है। राजकुमारी अपनी मां के साथ कुछ दिनों दादाणा में एवं नानाणा में रही। मामाजी ने दीक्षा का महोत्सव मनाया। गोगुन्दा में भव्य वरघोड़ा निकाला। बन्दोरा दिया। पूरे गोगुन्दावासी मां बेटी और पिताजी के दीक्षा की भूरि–भूरि प्रशंसा करते है। दीक्षा की सारी तैयारियां सम्पन्न करके पुनः गुरूचरणों में उल्लास के साथ पारिवारिक जनों के बीच पहुँची मां फूली देवी और राजकुमारी।

क्यों ले रही हो दीक्षा –

नन्हीं राजकुमारी से लोग पूछते – वैरागण बाई आप दीक्षा क्यों ले रही हो ?राजकुमारी भोलेपन से कहती – संसार नश्वर है। यहाँ क्षणभर का भी भरोसा नहीं है। कब काल का बुलावा आ जाए, कहा नहीं जा सकता। अतः मैं दीक्षा लेकर आत्म–कल्याण करना चाहती हूँ।

राजकुमारी ने बताया –हमारे पड़ोस में एक आदमी की मृत्यु हो गयी। उसकी पत्नी को एक कोने में बिठाया गया। लम्बी काली कांचली पहनाई गयी। रूदन से घर हाहाकार मय हो गया। तब मैनें अपनी मां से पूछा –मां! क्या सभी को मरना पड़ता है। मां ने कहा – जो जन्मा है उसकी एक दिन मृत्यु भी होती है। एक मात्र धर्म की शरण ही हमें जन्म–मरण से बचा सकती है। तब मैनें अपनी मातुश्री से कहा – मां! मैं ऐसे संसार में नही रहूंगी। मैं कभी शादी नहीं करूंगी। मैं जन्म–मृत्यु के बंधन को तोड़ने वाले राजमार्ग पर जाऊंगी। आचार्य श्री कालूगणि के सान्निध्य में धर्म के महापथ पर ऊर्ध्वारोहण करूंगी क्योंकि –

''धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सयामणो ।।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सिर पर बाल नहीं आए –

गुरूदेव कालूगणि ने एक दिन पूछा – क्या तुम्हारे सिर पर बाल कभी नहीं आए ? राजकुमारी ने बद्धाञ्जली होकर कहा – गुरूदेव! पहले तो बाल बिल्कुल नहीं आते थे। एक बार श्री चन्द जी गधैया (सरदारशहर) की बहू ने कहा –अगर सिर पर बाल नहीं होगे तो दीक्षा नहीं होगी? तब मैने सिर पर पाछणा (उस्तरां) फिरा लिया। तब गाय के रोम जैसे सोनेया बाल उगने लगे। गुरूदेव ने करूणा बरसाते हुए कहा – क्या दारिद्रय बढ़ाने का कोड आया था ? गुरूवाणी से वातावरण स्मितहास्य में बदल गया। आपके कभी लोच नहीं हुआ। कभी रूई जैसे 5–10 छोटे–छोटे से बाल आए होगें। पर आप केश लुंचन करने में निष्णात थी।

गुरूदेव कालूगणि फरमाते – सिर पर बाल न आना इस बात का प्रतीक है मानो अपने पूर्वजन्मों की साधना, तपस्विता, तेजस्विता साथ लेकर आयी है। साधु बनने के लिए ही इसका जन्म हुआ है।

चारित्र चक्रवती ने दिया–चरित्र रत्न का वरदान –

वैराग्य दो प्रकार का होता है – अधिगम और निसर्ग। राजकुमारी निसर्ग वैराग्य जन्मान्तर की पुण्याई से साथ लेकर आयी। अधिगम वैराग्य पिताश्री की आस्था से उद्दीपन को प्राप्त हो गया।

राजकुमारी को जैन धर्म जैसा महान् धर्म मिला यह उनका भाग्य है। भगवान महावीर का शासन मिला यह उनका अहोभाग्य है भिक्षु शासन तेरापंथ की सम्प्राप्ति उनका सौभाग्य है। महामना परमपुण्यवान कालूगणि राज की प्रवर प्ररवर सन्निधि प्राप्त होना उनका परम सौभाग्य है।

मां बेटी श्वेत परिधान में वैरागण के रूप में पारिवारिक मेवाड़ी वीरों के साथ वीरांगना के रूप में गुरूचरणों मे उपस्थित हुई। पड़िहारा का भव्य प्रागंण। उच्च सिंहासन पर विराजित शोभित वंदनीय व्यक्तित्व के धनी गुरूवर। हजारों नयन उत्सुक थे नयनाभिराम दृश्य को निहारने। दीक्षा के पंडाल में मामाजी राजकुमारी को गोदी में लेकर आए। गुरू शरण में नन्हीं बालिका को समर्पित किया। कालूगणिराज ने करेमि! भंते सव्वं सावज्जं जोगं .....पाठ के साथ जीवनभर का संन्यास ग्रहण कराया माता–पुत्री की जोड़ी को। अब वे मां बेटी सांसारिक जीवन की बहिर्यात्रा से अन्तरयात्रा के परकोटे में आ गयी। धर्मसंघ की बाह्य परिषद् से अन्तरंग धवल अमल परिषद् में सम्मिलित हो गयी। एक छोटे से परिवेश को छोड़कर विशाल वृहद् परिवार के साथ जुड़ गयी। वे अहिंसा की पहरेदार बन गयी। सत्य की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्तता में रम गयी। अचौर्य की आदर्श बन गयी। ब्रह्मचर्य की विपुल सम्पदा पा हर्षित हो गयी। अपरिग्रह के आलोक से आलोकित हो गयी।

नन्हीं राजकुमारी बालयोगिनी साध्वी राजकुमारी बन गयी। मां फूलीबाई सुहागन अवस्था में दीक्षा लेकर साध्वी फूलांजी बन गई।

प्रणम्य बन गयी साध्वी राजकुमारी –

वि.स. 1985 चैत्र कृष्णा सप्तमी (शीतला सप्तमी) का दिन साध्वी राजकुमारी के लिए मंगलमय हो गया। जब उन्होंने 8 वर्ष 7 माह 14 दिन की वय में जैन संन्यास का बीहड़ पथ स्वीकार किया। जीवन यात्रा का हर पल प्रमत्त संयत छठे गुणस्थान को पाकर प्रणम्य बन गया। आनन्दमय कल्यागमय सुखमय बन गया।

''किसी को अपने काम की चिन्ता है,
किसी को अपने नाम की चिन्ता है।
बहुत कम है ऐसे दुनिया में लोग,
जिन्हें सच्चे मन से राम की चिन्ता है॥''

साध्वी राजकुमारी ने अपनी चिंता की चादर गुरूचरणों में डाल दी। वे निश्चिंत निर्भीक हो गयी। साध्वी राजकुमारी गुरू चरणों में समर्पित हो अपनी भाग्य लिपि लिखने लगी।

45 वीं कुंवारी कन्या –

मृदुता के महामंदार कालूगणि राज के शासन में जैन भागवती दीक्षायें बहुत हुई। कुंवारी कन्याएँ पूज्यप्रवर के शासन में सैकड़ों दीक्षित हुई। साध्वी राजकुमारी जी 45 वीं कुंवारी कन्या के रूप में गुरूचरणों में आयी। 4 + 5 = 9 करने से नौ अंक अक्षय होता है। साध्वी श्री जी ने भी 9 का अंक पार किया। यानी जिन्दगी के 90 वसन्त पार किए। दसवें दशक में प्रविष्ट हुई और 94 वर्ष की वय में संथारा संलेखना से आत्म–कल्याण किया।

मैं 94 वर्ष की नहीं, छिन्नू वर्ष की हूँ –

साध्वी श्री बहुधा फरमाती – मातु श्री छोगांजी ने 96 वर्ष लिए। वैसे ही मुझे 96 वर्ष लेने है। हमसे कोई पूछता –साध्वी श्री जी कितने वर्ष के है। हम कहते आप 94 वर्ष के है। आप तत्काल फरमाती – मैं 94 की नहीं, 96 वर्ष की हूँ। ऐसा कई बार कहने का अवसर आता। तब जीवराज जी महनोत (जो उदासर के श्रावक है शासन श्री को अपनी मां तुल्य मानते। उनकी चिकित्सा सेवा में विशेष ध्यान रखते) ने एक केल्कूलेशन किया कि तीन साल में एक माह ज्यादा होता है। 94 वर्षों के बढ़ोतरी महीनों की गिनती से 24 माह ज्यादा होते है अतः साध्वी श्री 94 वर्ष की नहीं 96 वर्ष की है– सही फरमाया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

झमकू सति द्धारा प्रथम लोच–

साध्वी राजकुमारी फरमाते – मेरी दीक्षा पड़िहारा में हुई। तब साध्वी प्रमुखा कानसति वहां किसी कारण विशेष से नहीं पधार सके। हालांकि मैनें उन्हें बहुत अनुरोध किया।

उनकी अनुपस्थिति में साध्वियों की संभाल का काम झमकू सति देखती थी। अतः मेरा लोच झमकू सति ने किया। इस दृष्टि से मैं झमकू सति की प्रथम शिष्यणी हूँ। झमकू सति की वत्सलता, विशेषता का बयान करते हुए आपने आचार्य श्री महाश्रमण जी को बताया –झमकू सति पोथिया पुट्ठे बहुत अच्छे बांधती थी। उनके द्वारा बांधी गयी पोथी के लिए कहा जाता –यदि पानी में भी उनकी बांधी गयी पोथी तिरादें तो पोथी में पानी नहीं जाता।

झमकू सति के प्रति कालूगणि राज की महत्ती कृपा थी। वे गुणों का समन्दर थी। गुरूदेव की सेवा में सदा हाथ जोड़े विराजी रहतीं। कभी आलथी पालथी मारक बैठना उन्हें पसन्द नहीं था।

उनका जीकारा सबसे अलग होता। वे तीन जीकारा एक साथ देती। वन्दना करने वाले व्यक्ति का नाम लेकर, जै कहकर, गर्दन हिलाकर। ये झमकू सति के जीकारे की विशेशतांए थी। जिससे बाल साध्वी राजकुमारी बहुत प्रभावित होती। मुझे संस्कारों की संस्कृति झमकू सति से मिली है। जिसे मैं कभी भूल नहीं सकती। झमकू सति ने शिक्षा सूत्र दिया – ''चारित्र चोखो पालणो।'' चारित्र की सम्पदा जन्म जन्मान्तर की पुण्याई से प्राप्त होती है। अतः मर्यादा अनुशासन की लक्ष्मण रेखा में रहना है।

संघ साधना का कल्पवृक्ष–

कल्पवृक्ष चिन्तामणि कामधेनु के लिए कहा जाता है वे हर इच्छा आशा अभिलाषा को पूरा करते है। साध्वी राजकुमारी जी 'संघ शरणं गच्छामि, मेरं शरणं गच्छामि, आणं शरणं गच्छामि'' की स्वीकारोक्ति के साथ ही संघ कल्पतरू की साधनामयी छत्रछांह में आ गयी। उन्होंने संकल्प किया –''मुझे अच्छी साध्वी बनना है। मुझे सवा सोलह आना आचार–विचार की कसौटी पर खरा उतरना है। मुझे बाईस परीषहों को सहन करते हुए कर्मों की महानिर्जरा करनी है। गुरू दृष्टि की आराधना करनी है। शास्त्र सम्मत गुणराशि से अनमोल खजाना भरना है। मुझे आत्म विजेता इन्द्रिय जेता बनना है।

''हत्थ संजए, पाय संजए, वाय संजए, संजइंदिए
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा सुत्ततथं च वियाणइ जे स भिक्खु।''

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपके जीवन का दूसरा आदर्श था। मुझे कषाय चौकड़ी से ऊपर उठना है क्योंकि आगम कहते है।

''कोहो पीइं पणासेइ माणो विणय णासणो।
माया मित्ताणिणासेई लोहो सव्वविणासणो ॥''

जीवन यात्रा में एक भूचाल –

आपके पिताश्री चम्पालाल जी स्वामी दो साल पहले दीक्षित हो गए। माता–पुत्री दो साल बाद गुरू चरणों में अदम्य आत्म विश्वास के साथ संन्यस्त हुई। माता साध्वी फूलांजी को सोलह माह हो गए पर साधुत्व में आत्मरमण नहीं हुआ था कर्मोदय का योग था या फिर कोई ऊपरी उपद्रवी छाया का उपसर्ग था या अन्तराय का भारी भूकम्प था पर कुछ हुआ जरूर था जो कि केवलीगम्य है। उनके भाग्य के सारे पासे प्रतिकूल पड़ रहे थे। संयमी जीवन की आशाओं पर हिमपात होता नजर आया। अनायास जीवन यात्रा में एक भूचाल आया। मां साध्वी फूलांजी संघ से अलग हो गयी पर उन्होंने अपनी पुत्री साध्वी राजकुमारी को घर जाने के लिए न प्रलोभन दिया न विचलित किया न साथ ले जाने की कोशिश की। परिस्थिति के प्रतिकूल थपेड़ो से भी साध्वी राजकुमारी जी का मन आहत नहीं हुआ। साध्वी राजकुमारी जी की अवस्था उस समय लगभग दस वर्ष की थी। फिर भी मां के प्रति बिल्कुल मोह नहीं किया। आजन्म वे भिक्षु शासन में खैरखवा बनकर रही।

हर बात ऐसी करो इतिहास बन जाएं
हर कदम के गवाह चांद तारे बन जाएं
किस्मत के भरोसे जिन्दगी न डगमगाए
कर्म ऐसे करो कि किस्मत खुद बन जाएं।

साध्वी राजकुमारी जी ने उन मुश्किल घड़ियों में नन्हीं सी साध्वी होते हुए भी साहसिक फैसला लिया। गुरूकृपा से कमाल का इतिहास रच दिखाया।

उम्र से भी छोटी–कद से भी छोटी–

मंजिल उसे मिली है जो कांटों पे चल सके।
पैदाकर यह कमाल कि तकदीर बदल सके।

गोगुन्दा के चोरड़िया परिवार को नाज है जो आप जैसी बेटी शासन को सौंपी।

आप उम्र से भी छोटी थी और कद से भी छोटी दिखायी देती अतः किसी को संदेह नहीं हो इसलिए मंत्री मुनि मगनलाल जी स्वामी आपकी जन्म कुण्डली अपने पास रखते थे। यदि किसी को शास्त्र सम्मत दीक्षा वय में भ्रम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हो जाए तो संदेह निवारण के लिए तत्काल किसी को जन्म, तिथि, वार, संवत् कुण्डली प्रमाण बता सके।

कालूगणि की अनपार कृपा –

साध्वी राजकुमारी जी को गुरूकुलवास में 10 वर्ष तक रहने का स्वर्णिम अवसर मिला। तीन वर्ष तक आप समुच्चय में रही। उस समय बाल साध्वियाँ गुरूदेव के ठिकाने में आहार करती थी। आपको भी गुरू सान्निध्य का अभूतपूर्व उल्लास लम्बे समय तक मिला। एक बार कालूगणि राज ने सेवा में समुपस्थित साध्वी राज से पूछा – नानकी क्या सीख रही हो ? साध्वी राज – गुरूदेव! भक्तामर सीख रही हूँ। गुरूदेव – हमें सुनाओ भक्तामर। साध्वी राज ने भक्तामर के 4–5 पद सुनाएं। गुरूदेव ने करूणा का अमृत उडेलते हुए कहा – नानकी की बोली साफ है। उच्चारण भी शुद्ध है। अच्छा याद किया है। दिमाग तेज है।

एकदा गुरूदेव ने पूछा – नानकी! आजकल क्या सीख रही हो ? साध्वी राज ने कहा – गुरूदेव! दशवैकालिक सीख रही हूँ। कितने अध्ययन सीख लिए। पांच अध्ययन याद कर लिए है छठा याद कर रही हूँ। गुरूदेव ने पूछा –छज्जीवणिया सुनाओ। साध्वी राज ने बेझिझक छज्जीवणिया के कुछ सूत्र सुनाए। गुरूदेव ने कान सति की ओर संकेत करते हुए कहा – नानकी होशियार है। कंठस्थ करने में निपुण है। इसको जितना सीखा सको उतना अच्छा है। गुरूदेव इस प्रकार कई बार साध्वी राज से सुनते और कल्याणक की बख्शीश करवाते। सीखने के लिए प्रोत्साहित करते रहते। दस वर्षीय गुरूकुलवास में आपने रेत में अक्षर लिखना सीखा। फिर पाटी पर अक्षर लिखना सीखा। संस्कृत प्राकृत हिन्दी भाषाओं का ज्ञान किया। उस समय नाश्ता करने की परम्परा नहीं थी। गुरूदेव की इतनी मर्जी थी आपके लिए नाश्ता मंगाने का निर्देश कराते।

गुरूकृपा का प्रसाद

साध्वी प्रमुखा झमकू सति प्रायः दोपहर को विहार करवाती तब विहार के समय गुरूदेव के दर्शन करने पधारती। गुरूदेव कालूगणि कृपा से फरमाते –नानकी को दोफारी करायी या नहीं। साध्वियाँ कहती– गुरूदेव ये करती नहीं है। तब गुरूदेव पातरी में नाश्ता डालकर खाने के लिए दिराते। राजकुमारी जी नाश्ता करती तब तक सभी साध्वियाँ कंधों पर बोझ लिए प्रतीक्षा करती। आपके नाश्ता करने के बाद विहार होता। नाश्ता बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है गुरूकृपा का प्रसाद प्राप्त करना। जो किसी पुण्यशाली को मिलता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बीकानेर में घटित पिस्तौल की घटना हमने पढ़ी है इतिहास में। बीकानेर चतुर्मास की भी आप साक्षी है। गुरूदेव ने संथारा ग्रहण किया, महाप्रयाण पूज्यपाद का हुआ, उस समय भी आप झमकू सति के साथ गुरू सन्निधि में मौजूद थी।

गुरूदेव कालूगणि राज ने अन्तिम समय में गुरूकुलवासी साधु साध्वियों को बख्शीश रूक्का प्रदान किया। उसका एक रूक्का हमें शासन श्री जी के पुट्ठे में मिला। जिसमें इस प्रकार लिखा है –

श्री श्री श्री 1008 श्री श्री कालूगणिराज महाराज कृपा
करके राजकंवर ने ढोय सीयाला सर्व राज रा काम री बगशीश करायी।
ई. सं. 1993 भादवा शुक्ला तृतीया।
श्री श्री श्री 1008 तुलसीगणिराज कृपा करके 1400 सो गाथा 1000 परठणा
बगशीश कराया।
वि.सं. 2001 पौष शुक्ला त्रयोदशी।

साध्वी राजकुमारी जी कालूगणि के लिए फरमाती – मैनें ऐसा महान् व्यक्तित्व कालूगणि जैसा अन्यत्र कहीं नहीं देखा। हम पूछते –क्या कालूगणि सांवले वर्ण के थे। वे कहते –मेरे गुरूदेव सांवले नहीं थे। वे गेहूएं वर्ण के थे। गुरूदेव की पैंसी अवगाहना थी। सैकड़ों साधुओं के बीच गुरूदेव की शिखा सबसे अलग नजर आती। गुरूदेव आकर्षक, जितेन्द्रिय, प्रज्ञासम्पन्न, परमप्रतापी, पुण्याई के पोरसे एवं भावितात्मा अणगार थे। गुरूदेव की वचन सम्पदा अमोघ थी। गुरूदेव जो आशीर्वाद दिराते वह फलवान हो जाता। गुरूवर के लिए आप एक श्लोक प्रयुक्त करती –

''यों तो दुनिया के समन्दर में मोतियों की कमी नहीं।
पर महाप्रभु कालू की आप जैसा दूसरा मोती नहीं ॥''

कालूयशोविलास से श्वास गति का लयबद्ध होना –

कालूयशोविलास आपका पसंदीदा महाकाव्य था। उसके प्रति आपकी धनीभूत श्रद्धा थी। कालूयशोविलास की प्रायः समग्र रागें आपको आती थी। बहुत सारे पद, गीत याद भी थे। आपने मुझे कालूयशोविलास का हृदय, रहस्य, राग–आलाप सिखाएं। आपकी सन्निधि में मैनें कितनी बार कालूयशोविलास का वाचन किया। कालूयशोविलास के दौरान आप अनुभव करती जैसे कालूगणि सामने खड़े शक्ति दे रहे है।

उम्र के आखिरी पड़ाव में आपका श्वास बहुत उठता था। दिन में 3–4 बार इन्हेलर लेना पड़ता। इन्हेलर भी कभी काम करता और कभी काम नहीं करता। रात्रि के समय कुर्सी से उठते ही श्वास गति तेज हो जाती। उस

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समय हम साध्वियाँ आपको कालूयशोविलास का गीत सुनाती –''सुगुरू म्हारो मन मोहयो। मन मोहयो मृदुता भर्‌यो रे मृदुता भर्‌यो '' आदि गीत के सुरों के साथ आपका श्वास उठना बंद हो जाता। यानी श्वास में जमावट आ जाती।

साध्वी प्रमुखा कानसति की कृपा –

साध्वी राजकुमारी जी ने दीक्षा लेने के बाद साध्वी प्रमुखा कानसति के दर्शन किये। कानसति नानकी के सिर पर हाथ फिराती। नानकी का हाथ पकड़कर टहलती। नानकी को अपने पास रखती। कभी तत्त्वज्ञान के बोल सीखाती, कभी सम्यक्त्व का बोध देती। कभी पापभीरूता की शिक्षा फरमाती। कभी आचार–विचार में पक्का रहने का पाठ पढ़ाती। कभी पारस्परिक व्यवहार का पाथेय दिराती। कानसति की पाठशाला में आपने जीवन निर्माण के कई पाठ सीखे और पढ़े।

बहुत बार आप कानसति को याद करती और कहती – मैं कानसति की कृपा को भूल नहीं सकती। उस समय की गुरूकुलवासी साध्वियों के लिए मैं छोटी होने के कारण आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होती। कोई दर्शनार्थी आता तब कानसति मेरे से ढाल गुवाती। दोहा सुनाने को फरमाती। कानसति की कृपा का बयान करते–करते आप कई बार गद्‌गद् हो जाती।

एक बार साध्वी राजकुमारी के हाथ का सहारा लिए कानसति टहल रही थी। रास्ते में पानी गिरा हुआ था राजकुमारी फिसल गयी और महासती जी भी गिर गए। पर चोट किसी को भी नहीं लगी। साध्वी राजकुमारी ने कहा – गुरूदेव कालूगणिराज का आशीर्वाद हमारे साथ है, तभी न आपको चोट लगी और न मुझे चोट लगी।

बचपन की बाल सुलभता –

बचपन का माधुर्य कुछ अलग होता है। बालसुलभ चपलता से आप एक दिन रेत के लड्डु बनाने लगी। साध्वी प्रमुखा कानसति और साध्वी सोनाजी ने नानकी को लड्डु बनाते हुए देखा। सोनाजी साजनवासी बोली – नानकी! ऐसे क्या करती हो ? सर्प निकल आएगा। संयोग ऐसा बना कि सचमुच सर्प निकल आया। आप डरकर ठिकाने में आ गयी। आपने उस दिन के बाद रेत के लड्डु बनाना छोड़ दिया।

सुन्दर और सुकुमार –

आप कान्त और प्रिय दोनों थी। सुन्दर और सुकुमार थी। एक बार आपने ज्यादा राख का पानी पी लिया। तत्काल आपको उल्टी हो गयी। उस दिन के बाद कानसति ने फरमाया – नानकी कोमल है इसका ध्यान रखना चाहिए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भोजन कैसा कराना, पानी कैसा पिलाना, वस्त्र कैसे पहनाना, कैसे शयन करना, कैसे बैठना, चलना आदि क्रियाओं का कानसति स्वयं ध्यान रखाते।

बड़ों से वंदना कैसे कराऊँ –

उम्र से बड़ी 13 साध्वियाँ आपकी दीक्षा के कुछ माह बाद दीक्षित हुई। नवदीक्षित साध्वियाँ कानसति के साथ ठिकाने में आयी। उनमें सतियों का नाम नानूजी, झमकूजी, केसरजी, वृद्धांजी, सुन्दर जी, मनोहरां जी, लाधू जी, लिछमां जी, भत्तू जी आदि थे। साध्वी जी के नाम लेकर कोई पुकारता तो बाल साध्वी राजकुमारी जी कहती – छीः छीः कितना गन्दा नाम है। साध्वी प्रमुखा कानसति विनोद कराते हुए फरमाते – तुम इनके नामों को गन्दा कहती हो तो मैं भी तुम्हें राजूड़ी कहूँगी। सब नाम अच्छे होते है ऐसे नहीं बोलना चाहिए। तहत्त कहते हुए साध्वी राजकुमारी ने महासति जी से बोध प्राप्त किया। सभी नवदीक्षित साध्वियाँ उम्र में वयस्क थी। वे जब आपको वंदना करने लगी तब आप कानसति के पट्ट के नीचे जाकर छिप गयी। कहने लगी – ये सब मेरे से उम्र में बड़ी है मैं इनसे वंदना कैसे कराऊँ।

कानसति ने फरमाया – नानकी अब तुम बड़ी हो गयी हो। ये दीक्षा पर्याय में तुम्हारे से छोटी है भले ही उम्र से बड़ी है। वंदना व्यवहार करना इनका फर्ज है तुम दीक्षा पर्याय में इनसे ज्येष्ठ हो। तब तुम वंदना कराने में आनाकानी क्यों करती हो।

राजकुमारी नृप कन्या –

साध्वी प्रमुखा कान कुमारी जी राजकुमारी को लाड प्यार से नृप कन्या कहके पुकारती। उस समय नामों की ऐसी प्रथा भी थी। नृप यानी राजा, कन्या यानी कुमारी अर्थात् राजा की कुमारी। राजकुमारी का नाम नृप कन्या प्रसिद्ध हो गया। बहुत सारी साध्वियाँ बाल साध्वी राजकुमारी को नृप कन्या से सम्बोधित करने लगी। वह नाम आपको भी प्रिय लगता था। सन् 2007 के मर्यादा महोत्सव में साध्वी राजकुमारी ने महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनक प्रभाजी को एक बधाई पत्र चयन दिवस पर प्रदान किया। जिसमें नीचे नाम लिखा था नृप कन्या। साध्वी प्रमुखा कनक प्रभाजी ने तत्रस्थ साध्वियों से पूछा – नृपकन्या का बधाई पत्र आया है। ये नृप कन्या कौन है ? बताओ। साध्वियाँ एक दूसरे का मुंह ताकने लगी। किसी को जबाब देना नहीं आया। समुपासना में समुपस्थित साध्वी जिनप्रभाजी ने बताया –नृपकन्या का मतलब है राजकुमारी। महाश्रमण जी ने भी फरमाया – कालूगणिराज के शासनकाल में इस प्रकार नामों को गौरव से लिया जाता था। तत्रस्थ नयी पीढ़ी की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वियों ने नया संदर्भ नया अवबोध नृपकन्या यानी शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी का माना।

महामनस्वी आचार्य महाप्रज्ञ की जात भगिनी –

तेरापंथ के दशम् अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ से आप उम्र में 40 दिन छोटी थी। दीक्षा आपने पहले ली। आचार्य प्रवर की दीक्षा आपसे बाद में हुई। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी कई बार विनोद कराते हुए फरमाते – ''ए राजकुमारी तो म्हाकै साइना है। म्है दीक्षा लेकर आया जद ऐ छोटा सा हां। गुरूदेव कालगणि की आंपरघणी किरपा ही।''

महामहिम आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की जात चोरड़िया थी। शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी की जात भी चोरड़िया थी। अतः आप हमेशा आह्लाद् का अनुभव करती हुई फरमाती – आचार्य महाप्रज्ञ जी मेरे भाई महाराज है। जब भी आचार्य प्रवर का जन्मोत्सव, प्रज्ञादिवस, पदाभिषेक या दीक्षा दिवस आता तब आप गर्व से बोलती – आज मेरे भाई महाराज का जन्मोत्सव है इसलिए गण में उल्लास और वैभव है। महाप्रज्ञ की अभिवंदना में आपके स्वर होते –

''चमक तुम्हारी महक तुम्हारी, जागरण की नव कहानी।
चलना है चलते रहना है महामना की सीख सुहानी ॥''

आशीष अनुग्रह की बरसात –

आचार्य प्रवर को आपने कई बार मर्यादा महोत्सव पर पट्टोत्सव बेला में बधाई पत्र अपने हाथों से दिए। आचार्य प्रवर प्रसन्नमना उनके द्वारा प्रदत्त बधाई पत्र ग्रहण करते और मंद मुस्कुराहट का वरदान दिराते।

आपका स्वास्थ्य 9 वें दशक प्रवेश में कुछ कमजोर रहने लगा। फिर भी उनकी मर्यादा महोत्सव में जाने की इच्छा रहती। शासन श्री साध्वी पान कुमारी जी (प्रथम) आदि साध्वियों के साथ जब वे गंगाशहर, बीदासर, श्रीडूंगरगढ मर्यादा महोत्सव पहुँची। उन्हें पकड़कर ले जाना पड़ता। ठिकाने तक साधन में ले जाना होता। पंडाल में कुर्सी पर बिठाना पड़ता। गुरूदेव उनकी वृद्धावस्था को देखकर फरमाते –राजकुमारी जी का गुरूदर्शन का मनोबल कितना ऊँचा है। रास्ते में कितनी कठिनाइयां आती है। दो को साधन में लाना मुश्किल होता है। फिर भी ये साध्वियाँ (परमयशा जी, विनम्रयशा जी, मुक्ता प्रभाजी) हिम्मत करके इन्हें महोत्सव में ले आयी। हमारी साध्वियाँ कितनी निर्जरार्थी है। दो दो साध्वियों की (पानकुमारी जी, राजकुमारी जी) सेवा करती है ये भाग्यशाली है गुरूमुख से ये शब्द क्या

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

निकले हमारे लिए अमृत पाथेय बन गए। गुरू वचनों ने हमारी यात्रापथ की थकान को काफूर कर दिया।

जब हम साध्वी राजकुमारी जी को पकड़कर गुरूदेव के कमरे तक ले जाते। सभी को साथ में देखकर महामना गुरूदेव फरमाते – ये पांचों साध्वियाँ साथ ही आती है। ये कितनी अच्छी है कितने अहोभाव से सेवा करती है। गुरू का महान् प्रसाद हमें प्रसन्नता, पवित्रता से भर देता।

प्रमोद भावना प्रशस्य है –

कई बार हम दर्शन करने जाते। आचार्य प्रवर विश्राम की मुद्रा में पोढ़ाए हुए होते – तब भी वंदना स्वीकार करते हुए गर्दन उठाकर कहते – हां पानकुमारी जी , हां राजकुमारी जी। ठीक हो। सतियां सेवा करती है ना। शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी कहते –गुरूदेव आपके प्रताप से मेरी इस शासन में बहुत सेवा हो रही है। मैं इस शासन में निहाल हो गयी। यह शासन नन्दन वन है। इस भिक्षु गण में आनन्द ही आनन्द है। मैनें आपके प्रताप से बहुत संयम समाधि की मौज की है। शासनपति– शासन की गरिमा जितनी गाए उतनी कम है।

''धरती सब कागद करूं लेखनीं सब वनराय।
सात समन्दर की मसि करूं, गुरू गुण लिख्या न जाय ॥''

मैंने पूर्व जन्मों में महापुण्य का संचय किया है तभी मुझे प्रबल प्रतापी भिक्षु शासन मिला। महावीर भगवान के इस शासन में आकर मैं तो भव सागर से तर गयी। आपकी प्रमोद भावना की ओर इंगित करते हुए आचार्य प्रवर संतों को फरमाते – देखो, सुनो, जीवन में अपनाओ, राजकुमारी जी में गण गणपति के प्रति कितनी सघन निष्ठा है जो प्रशस्त है।

गुरूदेव के नाम से हिचकी रूक जाती –

आपको कभी भी हिचकी आती तब आपके मुख से सहसा गुरूदेव का नाम निकलता और हिचकी बंद हो जाती। यह आपकी श्रद्धा व आस्था का ही परिणाम था। आप फरमाती – मुझे गुरूदेव याद करते है। देखो गुरूदेव का नाम लेते ही मेरी हिचकी बन्द हो गयी । हम कहते –गुरूदेव के इतने सारे काम है। क्या वे आपको याद करते है। वे तपाक से कहती – तुम भले कुछ भी कहो पर मेरी हिचकी तो गुरूदेव का नाम लेते ही बन्द हो गयी। मेरे तो जीवन, प्राण, आस्था, आदर्श सर्वस्व गुरूदेव ही है। गुरूदेव के नाम से तो बड़े–बड़े संकट दूर हो जाते है। विध्न बाधाएं मिट जाती है। गुरू कोई व्यक्ति नहीं, अन्तस्तल की आस्था के आदित्य होते है। हमने देखा गण अनुशास्ताओं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के प्रति श्रद्धा के संस्कार उनके नस–नस में भरे थे। बात–बात में वे गण गणि का गुणानुवाद करते रहते। उनकी अगाध आचार्य निष्ठा को देखकर ये पंक्तियां याद आने लगती है–

''बात बात प्रवचन प्रवचन में गण गणपति रो नाम।
सुविनीतां री सरल कसौटी, दो चावल कर थाम ।।''

विश्व प्रकाशी आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण पूरे धर्म संघ को जिन शासन को, अखिल विश्व को आहत करने वाला था। साध्वी राजकुमारी जी इस घटना से प्रकम्पित हो गयी। आपका मन, मस्तिष्क आन्दोलित हो गया। आप बार–बार फरमाते – मैं बैठी हूं मेरे भाई महाराज देवलोक पधार गए। उनके लिए महाप्रज्ञ का महाप्रयाण मुश्किल ही नहीं महामुश्किल था पर काल के आगे किसी का जोर नहीं चलता। इस शाश्वत सत्य को याद करते हुए आप कहती – गुरूदेव को कैसे भूलाएं। वे तो मेरे प्रभु महाप्रभु थे। वे मन मन्दिर में बसे हुए थे।

आचार्य श्री तुलसी के समग्र शासन की साक्षी –

साध्वी राजकुमारी जी गंगापुर में मौजूद थी जब मुनि तुलसी को युवाचार्य तुलसी बनाया गया। आप साक्षी थी भाद्रव शुक्ला नवमी वि. 1993 की जब युवाचार्य तुलसी आचार्य श्री तुलसी बने। आचार्य श्री तुलसी आपको बहुमान देते। कृपापूर्ण शब्द कई बार फरमाते – साध्वी राजकुमारी जी पर कालूगणिराज की बेहद शुभ दृष्टि थी। कालूगणि राजकुमारी जी को होनहार साध्वी मानते थे। उनकी बुद्धि तेज थी। याद जल्दी कर लेती। गुरूदेव को कंठस्थ पाठ हुबहु सुना देती। मां साध्वी के उत्प्रव्रजित हो जाने पर भी उनका धैर्य संयम साधना में अडोल रहा। इस तथ्य से गुरूदेव बहुत प्रभावित थे। वे कालूगणि की कृपा पात्र जैसे रही है वैसे ही तुलसी गणि का प्रोत्साहन पाथेय आपको सदा मिलता रहता। आपका बनाया गया रजोहरण खास होता। गुरूदेव उसकी तारीफ करवाते। गुरूदेव फरमाते – राजकुमारी जी पहले भी छोटी सी लगती थी वैसे ही अब भी छोटी सी लगती है।

रामायण तो मुझे भी नहीं आती –

आपको कई बार रामायण वाचन की दृष्टि से गुरूदेव ने कई सिंघाड़ों में भिजाया। साध्वी जुहारा जी के साथ बागोर में रामायण व्याख्यान के लिए भिजाया। गुरूदेव ने फरमाया – जुहाराजी को रामायण नहीं आता अतः तुम्हें भेज रहे है। गुरूदेव कालूगणि को आपने निवेदन किया–प्रभो ! रामायण तो मुझे भी नहीं आता है। गुरूदेव ने फरमाया – तुम याद करके गा सकती हो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यह मुझे विश्वास है। गुरूदेव कालूगणि के इस दृढ़ विश्वास को आपने जीवन भर सफल बनाया।

साध्वी केसरजी के साथ आप 5 वर्ष रहीं। गुरूदेव तुलसी ने रामायण के व्याख्यान की अपेक्षा से आपको वहां रहने का सुअवसर प्रदान कराया।

साध्वी टमकूजी की लाडनूं चाकरी थी वहां रामायण का व्याख्यान देने वाली साध्वी की अपेक्षा थी। गुरूदेव तुलसी चिन्तन करा रहे थे। सहसा गुरूदेव को याद आयीं खूमां जी (लाडनूं) के सिंघाड़े में निरत सेवाभावी साध्वी राजकुमारी जी। साध्वी राजकुमारी जी धन्य हो गयी गुरूकृपा की विरासत को पाकर।

बडा सोना जी के साथ पड़िहारा में आपको व्याख्यान के लिए भेजा गया। आपको भेजने से पूर्व पूज्य श्री फरमाते – तुम्हें वहां पूरा नहीं भेज रहे है। प्रातिहारिक भेज रहे है। व्याख्यान की दृष्टि से भेज रहे है।

सफलता के सूत्र –

व्यक्तित्व विकास के कई महत्वपूर्ण घटक तत्त्व है। जो साध्वी राजकुमारी जी की जीवन प्रयोगशाला में परिलक्षित होते रहे।

एकाग्रता –

ऐसा पहलू है जिसके द्वारा विद्यार्थी जीवन का विकास होता है। एकाग्रता के अभाव में किसी भी कार्यक्षेत्र में सफलता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है। आप जिस समय जो कार्य करती, पूरी तन्मयता से करती। जिस पाठ को याद करना शुरू करती उसमें दत्तचित्त हो जाती। जिस काम को हाथ में लेती उसे एकाग्रता के द्वारा करते हुए निष्ठा के मुकाम तक पहुँचा देती। यह उनकी कला हमने उनके बचपन में भले नहीं देखी क्योंकि हम उस समय इस धरती पर नहीं आए। 30 वर्षों से मैनें बारीकी से उनका जीवन दर्शन पढ़ा है।

याद्दाश्त –

आपकी जन्मजात थी जो आप जन्मान्तर से साथ लेकर आयी थी और पौरूष की पैनी धार से उन्होंने बुद्धि को तीक्ष्ण बनाए रखा। देवलोकगमन वाले दिन तक उनकी यादाश्त वैसी की वैसी ही थी। शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी उन्हें विध्नहरण की, मुणिन्द मोरां की, विमल विवेक की ढाले रोजाना सुनाते। संथारे से पूर्व आप दोनों स्वाध्याय, ढालों का संगान साथ–साथ करते। साध्वी पानकुमारी जी कोई पंक्ति भूल जाती तो आप तत्काल उन्हें याद दिला देते।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आत्मविश्वास – साध्वी श्री का हमने हमेशा निराला देखा। लोग कहते है कि हम सांस के सहारे जीते है मगर हकीकत यह है कि हम विश्वास के सहारे जीते है। कार्य प्रारंभ करने से पूर्व लोग भयभीत रहते है। आपके भीतर अद्‌भूत आत्म विश्वास था। आप द्वारा किया गया संथारा संलेखना आपके अदम्य आत्मविश्वास का परिचायक है।

निर्णय शक्ति –

व्यक्तित्व विकास को बहुआयामी बनाता है कब किस समय क्या फैसला लेना – इस मायने में साध्वी श्री माहिर थी। छोटी उम्र में दीक्षा लेना आपके जीवन का ऐतिहासिक फैसला था। अपनी मां साध्वी के अपक्रमण पर संघ बलिवेदी पर समर्पित रहना दूसरा ऐतिहासिक फैसला था। ईडवा पावस के अवसर जलराशि के बीच विहार करते हुए चतुर्मास स्थल पर पहुँचना तीसरा ऐतिहासिक फैसला था। जीवन की सान्ध्य बेला में आचार्य श्री महाश्रमण जी के कर कमलों से संथारा स्वीकार करना चौथा ऐतिहासिक फैसला था। यह सब उनकी निर्णायकता का कमाल था।

आप लगभग 70 वर्ष की उम्र तक तीन वक्त गोचरी करती। 80 वर्ष की वय में भी एक बार गोचरी पधारती। 90 वर्ष की उम्र तक आप जोड़ी की पातरिया करती। हम कहते – आप क्या पातरिया ही करते रहेगे ?साध्वी श्री फरमाती – काम करने से कोई छोटा नहीं होता काम करने से निर्जरा होती है। शरीर ठीक रहता हे। तुम्हारे तो गोचरी, पानी आदि लाने के बहुत सारे काम होते है। इतना सहारा तो मैं भी दे सकती हूँ। रजोहरण निर्माण में कई घंटों समय का सम्यक् नियोजन करते। उनकी हर कला में कुशलता का निदर्शन होता जिनसे हमें सतत् प्रेरणा मिलती।

संकल्प बल –

आपका असंभव को संभव बनाने वाला था। आप फरमाती – असंभव और संभव में ज्यादा दूरी नहीं है। सिर्फ एक अ ही तो हटाना है। असंभव संभव बन जाएगा। अ हटाना कहना तो सरल है पर करना मुश्किल है। आपने योग्य योग्यत्तर हमारे संघीय कोर्स की परीक्षाएँ दी। 75 वर्ष तक की उम्र में भी परीक्षाओं का मन बना रहता। केन्द्र में दशवैकालिक उत्तराध्ययन चौबीसी, तत्त्वज्ञान या कोई भी प्रतियोगिता अन्त्याक्षरी होती। आप उनमें प्रसन्नता से भाग लेती। कई बार साध्वी प्रमुखा श्री कनक प्रभाजी फरमाती – इतनी बड़ी उम्र मे साध्वी राजकुमारी जी का उत्साह सराहनीय है। हर परीक्षा में आपका उल्लास नयी पीढ़ी को सीखना चाहिए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैं वृद्ध नहीं हूँ –

90 वर्ष की वय के बाद कई बार हम कहते– क्या आप प्रोग्राम में सहभागिता कराएंगे। आपको तकलीफ होगी स्टेज तक पधारने में। आप कहती – मैं वृद्ध नहीं हूँ –मैं युवा हूँ। मै हर प्रोग्राम में साथ में बोलूगी। सामूहिक गीत गाऊँगी। उम्र से भले वयोवृद्ध हूँ पर मेरे विचार युवा है। आप 93 साल तक प्रायः सभी कार्यक्रमों में कविता, गीत, मुक्तक, छन्द, वक्तव्य फरमाती। जबकि आपका श्वास उठता था। कभी–कभी व्हील चेयर से ले जाना होता। उनके हौसलों की उड़ान के लिए कहा जा सकता है –

मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है।
परों से कुछ नहीं होता हौसलों से बाजी जीती जाती है।

कंठस्थ कला पर हमें नाज –

''दाम अण्टा ज्ञान कंठा'' सूक्त आपके रोम–रोम में वसा था। कंठस्थ ज्ञान का उन्होंने रिकॉर्ड स्थापित किया। आगम के अन्तर्गत दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आयारो वेदकल्प, सूयगडो, आवश्यक विपाकश्रुत आदि आपको कंठस्थ थे। संस्कृत भाषा में जो ग्रन्थ याद किए वो इस प्रकार है – शान्त सुधारस, सिन्दूर प्रकर, पंच–सूत्रम, भक्तामर, कल्याण–मंदिर, कालू कल्याण मंदिर, संस्कृत चौबीसी, देव गुरू धर्म स्त्रोत, मनोनुशासनम्, अयोग व्यवच्छेदिका, अन्ययोग, व्यवच्छेदिका, षड्दर्शन समुच्चय, जैन सिद्धान्त दीपिका, श्री भिक्षु न्याय कर्णिका आदि।

व्याकरण सम्बद्ध ग्रन्थ है – अष्टाध्यायी के सूत्र, सारस्वत व्याकरण, शारदीया नाममाला, अभिधान चिन्तामणि नाममाला, कालू कौमुदीपूर्वार्द्ध, उत्तरार्ध साधनिका, शिक्षाषण्णवति, तत्त्वज्ञान के आलोक में आपने सिखा – जैन तत्त्व प्रवेश भाग –1–2, पच्चीस बोल, इक्कीस द्वार, तेरह द्वार, बावन बोल, लघुदंडक संजया–नियंठा गुणठाणा द्वार, शेर्या, पानां की चर्चा, तत्त्वज्ञान की चर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, भ्रम विध्वंसनम्। राजस्थानी भाषा में शील की नव बाड़, चौबीसी, आराधना, दानदया अनुकंपा की कई ढ़ालें, औपदेशिक ढ़ालें आपके कंठों में बसी थी। कंठस्थ की कला पूर्व जन्मों के क्षयोपशम् से आप साथ लेकर आयी। आपने तेरापंथ प्रबोध मात्र सात दिनों में याद कर लिया। तुलसी–प्रबोध के कंठीकरण में लगभग10–11 दिन का समय लगा। महाप्रज्ञ प्रबोध जैसे ही आया 94 वर्षीय साध्वी श्री उसे भी याद करने लगी। उन्होंने महाप्रज्ञ प्रबोध के कुछ पद याद कर लिए। आप फरमाते – महाप्रज्ञ प्रबोध तो सीखने का भाव है क्योंकि ये तो मेरे भाईजी महाराज का जीवनवृत है। श्रावक संबोध आपको पूरा याद था।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार बोध, संस्कार बोध, व्यवहार बोध की जैसे ही गुरूदेव तुलसी ने संरचना की आप उसे याद करने लिया। लगभग 4–5 दिनों में ये बोध आपने मुखस्थ किये।

महावीर अष्टकम्, भिक्षु अष्टकम्, जयाचार्य अष्टकम्, कालू अष्टकम्, तुलसी अष्टकम्, महाप्रज्ञ अष्टकम्, महाश्रमण अष्टकम् आपको याद थे। जीवन के आखिरी समय तक आप चितारते।

कुशल व्याख्याता –

व्याख्यान देना भी एक कला है। जो स्वाध्यायशील होते है वे व्याख्यान में निश्णात हो जाते है। साध्वी राजकुमारी जी की राग मधुर और सरस थी। रामचरित का व्याख्यान देना आपको सदैव अच्छा लगता। प्राचीन समय में रामायण का प्रचलन ज्यादा था। रामायण का प्रवचन जब शाम को होता, सैकड़ों लोग व्याख्यान श्रवण में उपस्थित होते। आप साध्वी खूमां जी के साथ वर्षों तक रामायण का व्याख्यान फरमाती रहीं। मुनिपत, भरत मुक्ति, पानी मे मीन पियासी, अग्निपरीक्षा आदि कई व्याख्यान आपको कंठस्थ थे। लगभग 70 वर्ष की उम्र तक आप शाम को व्याख्यान दिराती। व्याख्यान में प्रयुक्त सामग्री कहानी, किस्से, छन्द, दोहें, ऐतिहासिक घटनाएं, हर जस आपको याद थे।

आलोक बाँटा ज्ञान का –

मैनें दोनों साध्वी श्री की सन्निधि में व्याख्यान देनी की प्रविधि सीखी। आपने मुझे दीक्षा लेते की कई व्याख्यान याद करा दिए क्योंकि उस समय रात को बिना लाइट के व्याख्यान होता था। आपने मुझे कालूयशोविलास, माणक महिमा, डालिम चरित्र, मगन चरित्र, पानी में मीन पियासी, अग्निपरीक्षा, चन्दन की चुटकी भली, मैं तिरूं म्हांरी नाव तिरैं आदि व्याख्यानों की प्रायः सभी राग रागिनियाँ सिखा दी। आपका सिद्धान्त था –''बांटी तो विद्या बढै'' विद्या बांटने से बढ़ती है। तुम्हें ज्ञान देने से, राग सिखाने से मेरा ज्ञान पक्का हो जाता है। हमें हमारी अगवानी ने ज्ञान का आलोक दिया। वैसे ही मैं तुम्हें सिखा रही हूँ। ज्ञान सीखने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहना चाहिए। हर दिन कुछ नया सीखना चाहिए। एक–एक पद, दोहा, प्रसंग याद रखने से वर्ष भर में कितनी सामग्री हो जाती है। आपकी अमूल्य ज्ञान राशि हमारे लिए व्याख्यान की सामग्री बन गयी। ''

स्वाध्याय की सुगंध –

''सज्झायसमं तवो नास्ति'' स्वाध्याय को महान् तप बताया गया है। स्वाध्याय आत्मा का रसायन है। कर्म निर्जरा का साधन है। ज्ञान–विज्ञान के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खजानों को समृद्ध करने का माध्यम है। साध्वी श्री प्रातः ब्रह्म मुहूर्त्त में 3–4 बजे से ध्यान, जाप, स्वाध्याय में तन्मय बन जाती। 1700 गाथाओं का स्वाध्याय करना आपका प्रतिदिन का संकल्प था। चार घंटे मौन करना, आधा घंटा ध्यान करना आपका नियम था। आपने आगम बत्तीसी का कई वार पारायण किया। भगवती की जोड़ का पांच बार वाचन किया। वयोवृद्धा साध्वी श्री खूमां जी की नजर न होने के कारण उनको सूत्रादिक सुनाने का अवसर मिलता। संघीय साहित्य, इतिहास, तत्त्वज्ञान एवं पत्र–पत्रिकाओं के रूप में लाखों पृष्ठों का स्वाध्याय किया। 93–94 वर्ष की उम्र में प्रतिदिन विराजकर प्रतिक्रमण सुनना, श्रुत सामायिक करना, स्वाध्याय के तौर पर एक पुस्तक अपने पास रखना उनका नित्यक्रम था। एक पुस्तक पूरी पढ़ लेते तब दूसरी पुस्तक का स्वाध्याय शुरू करा देते।

आप केवल किताब ही नहीं पढ़ती, उसके विचारों को आत्मसात करने का लक्ष्य रखती। आपका सकारात्मक सोच का दायरा स्वाध्याय की देन है। स्वाध्याय के दौरान कई बार कहते –देखो कितनी नयी बात है ?गुरूदेव ने कितना अच्छा प्रसंग घटित किया है। ये प्रसंग तुम्हारे व्याख्यान में काम आ सकता है। मेरे ख्याल से संघीय साहित्य का शायद ही कोई ग्रन्थ उसकी निर्मल, स्वाध्याय चेतना से अछूता रहा हो। स्वाध्याय में खास तौर पर आप महाप्रज्ञ साहित्य की पाठक थी। आचार्य श्री महाश्रमण जी की ''संवाद भगवान से, सुखी बनो, सम्पन्न बनो, विजयी बनो, क्या कहता है आर्हत् वाऽमय, आओ हम जीना सीखे'' किताबों का आपने स्वाध्याय किया। गुण ग्राहकता से फरमाती –गुरूदेव के प्रवचन कितने सटीक, ठोस और आगम सम्मत होते है जो हमारे वैराग्य का वर्धन करते है। हमें भी प्रेरणा देते रहते – कि हमेशा स्वाध्याय करते रहो। अनमोल मोती पाते रहो। साध्वी श्री की स्वाध्याय प्रिय दृष्टि हमारे भीतर नव चेतना का संचार करती है। कालूगणि की शिक्षा को याद रखती –''घोची पूली करै जद आवै व्याकरण'' यानी घोटना, चितारना, पूछना और लिखना ये चार घोष उनके हृदय में जम गए। जीवन भर स्वाध्याय की सुगंध में आप अभिस्नात रहे। स्वाध्याय की सौरभ बांटते रहे।

प्रबल पुरूषार्थ की दीपशिखा –

आपकी विकास यात्रा का सूत्र है सहनशीलता, श्रमशीलता, स्वाध्यायशीलता, विनयशीलता। आपने रक्षिता और रोहिणी बनकर धर्मसंघ की गौरव– गरिमा में सदा चार चाँद लगाए। आचार्य महाप्रज्ञ जी के पंचसूत्री अभियान से आप गौरव का अनुभव करती। आप फरमाती –

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सहन करो – सफल बनो। श्रम करो – सफल बनो।
सेवा करो– सफल बनो।
संयम करो – सफल बनो। स्वभाव बदलो – सफल बनो।

अगर ये सूत्र हमारी साधना के परम अंग बन जाए तो साधक के जीवन में कोई कठिनाई रह हीं नहीं सकती। इन पांच सूत्रों को अपनाने वाला साधना का शिखर बन जाता है।

स्वस्थ जीवन शैली –

''सभी कलाएँ है विकलाएँ – पंडित सभी अपंडित है।
नहीं जानते कैसे जीना – केवल महिमा मंडित है ॥''

आचार्य श्री तुलसी की ये पंक्तियां आपकी कलात्मक जीवनशैली की प्रतीक थी। कैसे जीएं ? आपसे पूछा गया – तो जबाब दिया – शांति से जीएं, सहजता, सरलता से जीएं। आचार में निष्ठा बनाए रखे। ध्रुवयोगों में चित्त –चेतना को लीन बनाए रखे। प्रतिक्रिया में अपने संयम को न खोये। प्रसन्नता का टॉनिक सदा अमृतमय बनाता रहे। कम खाना, गम खाना और नम जाना की विशिष्टता सीखे। प्रवृत्ति और निवृत्ति का जीवन में संतुलन होना चाहिए।

आहार संयम आरोग्य का प्रतिनिधि –

मैनें एक दिन पूछा – आपकी लम्बी उम्र सुसमाहित चित्त, प्रसन्न इन्द्रियां, पल–पल आनन्दानुभूति का राज क्या है ?

आपने शांत संतुलित जीवन के रहस्यों का अनावरण करते हुए कहा – भोजन का संयम मैनें हमेशा रखा। मैं प्रतिदिन तीन विगय से उपरान्त सेवन नहीं करती। पूर्वाचार्यों की पुण्यतिथि पर 5–6 विगय का परिहार करती हूँ। द्रव्यों की सीमा, ऊनोदरी की भावना, उपवास, आयम्बिल आदि करना मेरी स्वस्थता और दीर्घजीविता का एक राज है।

''शुद्ध रहे –फेफड़ा, साफ रहे पेट।
सौ वर्ष लगे नहीं, काल की चपेट ॥''

यह केवल श्लोगन ही नहीं है वाकई में आरोग्य का सुख देने वाला मूल मंत्र है।

श्वास प्रेक्षा से मिलती है शक्ति –

मेरे स्वास्थ्य का दूसरा मंत्र है श्वास प्रेक्षा का प्रयोग। श्वास प्रेक्षा संभाषण नहीं बदलाव का विश्वास है। आत्म साक्षात्कार का अहसास है। अतीन्द्रिय ज्ञान का उजास है। सफलता का स्वर्णिम अध्याय है। H_2O की निश्पत्ति तय है। वैसे ही श्वास प्रेक्षा, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, समवृति श्वास प्रेक्षा, आत्मकल्याण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

का लक्ष्य हासिल कराने में मेरे सहयोगी रहे है। तुम्हें भी श्वास प्रेक्षा का प्रयोग करना चाहिए। यह हमारे धर्मसंघ की दुनिया को अनूठी देन है।

आपने अपनी साधना का खजाना प्रेक्षा प्रशिक्षण को बताते हुए कहा – मैनें योगक्षेम वर्ष में प्रेक्षा प्रशिक्षण वर्कशॉप में भाग लिया। एक माह की ट्रेनिंग मेरा खजाना है। प्रेक्षाध्यान प्रत्येक इंसान के लिए कल्पतरू की छांह है, सुख शांति समृद्धि का महासागर एवं छल, कपट, राग, द्वेष, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, भय, निन्दा जैसे निषेधात्मक भावों से छुटकारा दिलाने वाला है।

मैनें प्रेक्षाध्यान को बहुत बारीकी से सीखा है। अपनी निजी प्रयोगशाला में प्रयोग किया है। मैनें देखा – आप कई बार आँख बंद करके विराजे रहते। तब पूछने पर फरमाते – मैं ध्यान कर रही थी।

आसन प्राणायाम का आकर्षण –

''रोज करे योग – सदा रहे निरोग'' इस वाक्य मैं आपका विश्वास था। प्रेक्षा प्रशिक्षण में आपका आसन प्राणायाम का प्रशिक्षण भी अच्छा रहा। दीक्षा लेने के बाद व्यायाम करते। श्वासन करते। प्रेक्षा प्रशिक्षण में सीखे गए आसनों को आप करवाती। हलासन, चक्रासन, योगमुद्रा, पश्चिमोत्तान, पेट की क्रियाएं, कमर की क्रियाएं, यौगिक क्रियाएं आप करते हुए प्रसन्नता की अनुभूति करती। इसी प्रकार मूलबंध, जालन्दरबंध, उड्डीयान बंध का भी आपको अभ्यास था। अनुलोम–विलोम, उज्जाययी, चन्द्रभेदी, सूर्यभेदी, शीतली सीत्कारी, कपालभात्ति आदि प्राणायाम आपने सीखे और प्रयोग करते हुए 94 वर्ष तक तंदुरूस्ती का अनुभव करते रहे।

ब्रह्म मुहूर्त्त में जल्दी उठना, तनामुक्त–आवेश मुक्त जीवन जीना, सीधा बैठना, रात को आत्म चिन्तन माला–जाप करते हुए दस बजे शयन करना प्रातः 3–4 बजे उठना, आत्मा को भावित करना– ये नियम है आपकी स्वस्थ दिनचर्या के।

आदर्श दंत पंक्ति –

साध्वी राजकुमारी जी ने अपनी 94 वर्ष की उम्र में न कोई पेस्ट किया। न ही ब्रुश काम मे लिया। एक दो घूंट पानी मुंह में लेते बस इतना कुल्ला करते। फिर भी आपके दांत मोती की तरह चमकते दिखायी देते। दांतों से कभी दुर्गन्ध भी नहीं आती। लगभग 80 वर्ष तक पूरी बतीसी ने आपका साथ दिया। कभी–कभार दांत निकालने का काम पड़ा। 94 वर्ष की वृद्धावस्था में भी आपके मुंह में 8–10 दांत मौजूद थे। हालांकि दांतों में चबाने की शक्ति पहले जितनी नहीं थी। ऐसा दांतों का सुलभ सौभाग्य किसी विरले को ही मिलता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तनाव, चिन्ता, डिप्रेशन से बहुत सारी बीमारियां शरीर पर उतर जाती है। साध्वी राजकुमारी जी हर हाल में मस्त रहते। तनाव मुक्त, आवेश मुक्त, साधना युक्त आपका जीवन था। तब भला बीमारियां शरीर पर हमला क्यों करे ?

उन्हें 94 वर्ष की उम्र में भी एक अस्थमा के सिवाय कोई खास तकलीफ नहीं थी।

शिकवा शिकायत से दूर –

''मंजिल को पाना जिन्हें, वे शिकवा नहीं करते।
जो करते है शिकवा, वे पहुँचा नहीं करते ।।''

दस में से नौ व्यक्ति सिर्फ सपना देखते है, योजना बनाते है। हवाई ख्वाबों को ठंडे बस्ते में बन्द कर देते है। विकास के नाम पर कुछ नहीं करते। सिर्फ शिकवा शिकायतों में कीमती क्षणों को बर्बाद कर देते है। हम सबने अनुभव किया – आप कभी किसी से शिकवा शिकायत नहीं करती। हम कुछ भी आपका काम करते तो आप 'कृपाकरायी' शब्द से हमारा उत्साहवर्धन अवश्य करते। शिकवा शिकायत जैसी आदत से आप कोसो दूर रहते। ये श्रेष्ठ वृत्ति उन्हें विशिष्ट बनाने वाली थी।

संघीय कला का नमूना –

आपका समग्र जीवन कलापूर्ण था। रहन–सहन, खान–पान, वस्त्र धारण, शयन–आसन में खासियत झलकती। आपको हड़बड़ी पसंद नहीं थी। हड़बड़ी में गड़बड़ी की संभावना आप देखती।

आपकी अंगुलियों का स्पर्श पाकर कला निखर जाती। आपने सैकड़ों रजोहरण का निर्माण किया। कई पूंजणिया निर्मित की। पातरी, टोपसी कल्प कुशलता से संपादित करना आपका सहज काम था। जिस काम को करने में किसी को घंटे लगे उसे मिनटों में कर देना आपके बाएं हाथ का खेल था। वस्त्रों की सिलाई इतनी बारीकी से होती कि मशीन की सिलाई भी उसके सामने नगण्य हो जाती।

लिपि कला में माहिर –

आपके अक्षर सुन्दर मोती जैसे थे। आपने सूक्ष्माक्षरों मे सैकड़ों पन्ने लिखे है। आप सुबह हस्तलिखित प्रतियों के लेखन के लिए विराजती कि शाम तक लेखनी चलती रहती। आपके सधे हुए हाथों से लिखी हुई प्रतियां संघ के भंडार की शोभा बन रही है। लाडनूं के भंडार में आप द्वारा लिखित अन्तकृतदशा, अनुत्तरौपपातिकदशा, ज्ञाता धर्मकथा, भगवती की जोड़ आदि कई ग्रन्थ है। सिलाई, रंगाई, मुहपत्ति का निर्माण करते हुए आपने कभी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

थकान का अनुभव नहीं किया। निर्जरा की नीति से किया गया कार्य कौशल आपकी कलात्मकता का परिचायक है। आपके द्वारा लिखित सुन्दर पन्ने वर्ण विन्यास के नमूने है आपके हाथ से लिखित पन्नो के सूक्ष्म अक्षरों का एक नमूना–

पदयात्रा से प्रभावना–

पदयात्रा श्रमण जीवन का अभिन्न अंग है। आपने तिन्नाणं तारयाणं का ध्येय लिए हजारों किलोमीटर की यात्राएं की। 10 वर्ष गुरूकुलवास में गुरूदेव कालूगणि के साथ यात्राओं का आनन्द लिया। उसके बाद साध्वी खूमांजी के साथ मारवाड़, मेवाड़, हरियाणा, पंजाब, गुजरात में यात्रा करते हुए जिनवाणी के स्वस्तिक उकेरे। भिक्षु शासन की प्रभावना की। तत्पश्चात् साध्वी पानकुमारी जी के साथ आपने यात्राएं करते हुए सैकड़ों लोगों को गुरूधारणा करायी सैकड़ों को सम्यक्त्वी बनाया। कई लोगों को नशामुक्ति का संकल्प कराया। किसी को बारहव्रतों का बोध दिया, किसी को 14 नियमों की जानकारी दी। कितनों को प्रतिक्रमण, तेरापंथ प्रबोध, अष्टकम् भक्तामर, पचीस बोल आदि सीखाएं। संस्कार निर्माण शिविर, व्यक्तित्व विकास शिविर, स्वस्थ परिवार, कार्यशालाएं आयोजित करायी। कितनों को सुलभबोधि बनाया। कितनी कॉलेज, स्कूल में प्रोग्राम देते हुए अणुव्रत प्रेक्षा, ध्यान, जीवन विज्ञान का संदेश दिया।

सतरह बार किए गुरूदर्शन –

वि.स. 2014 में आपकी लाडनूं चाकरी थी गुरूदेव तुलसी का प्रवास

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सुजानगढ़ में था। पावन प्रवास के दौरान आपने 17 बार लाडनूं से विहार कर सुजानगढ़ में गुरूदर्शन किए। चतुर्मास में रात्रि प्रवास अन्यत्र करना अकल्पनीय है। अतः आप सुबह सूर्योदय के समय विहार कराती, शाम को पुनः गुरूदर्शन का पाथेय लिए लाडनूं सेवा केन्द्र में पहुँच जाती। गुरूदेव के प्रति अगाध आस्था ही आपको बार–बार गुरूदर्शन के लिए आकृष्ट करती। अपने शारीरिक कष्टों की परवाह किए बिना आपने 17 बार गुरूदर्शन का दुर्लभ इतिहास बनाया।

एकदा आप साध्वी खूमांजी के साथ राजलदेसर में विराजित थी। आचार्य श्री तुलसी का चातुर्मास रतनगढ़ था। उस चातुर्मास में आपने आठ बार गुरूदर्शन किए।

कच्छ, बाव यात्रा में आपने लम्बे विहारों की श्रृंखला में कइ बार 36 किलोमीटर का विहार भी किया।

स्थिरवास केन्द्र में न रहना पड़े –

आपकी हार्दिक अभिलाशा थी मुझे कभी किसी स्थिरवास केन्द्र में न रहना पड़े। विहार करते करते ही संयमी जीवन का आनन्द लेना है। धर्म का प्रचार प्रसार करना है। आपकी भावना सफल हो गयी गुरूकृपा से। कभी गुरूदेव ने उन्हें स्थिरवास में रहने के लिए नहीं फरमाया। हालांकि 80–90 वर्ष की उम्र के दौरान लम्बा प्रवास होता रहा। उदासर में तीन वर्ष रहने का, कालू में 19 माह, चूरू में 11 माह, लूणकरणसर में दो पावस का सुअवसर आराध्य अनुग्रह से मिला। आपकी इच्छाएं सीमित थी पर इच्छा शक्ति मजबूत थी। आपके 86 वर्षीय साधना काल के पावस प्रवास की तालिका इस प्रकार है –

❋ वि.स. 1985 से 1992 तक के पावस परम पूज्य कालूगणि के सान्निध्य में हुए।

❋ वि.स. 1993 का बागोर साध्वी श्री जुहारांजी (बीदासर) के साथ।

❋ वि.स. 1994–95–96 आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में।

❋ वि.स. 1997–98 साध्वी सोनां जी साजनवासी के साथ।

❋ वि.स. 1999 साध्वी केसर जी श्री डूंगरगढ के साथ।

❋ वि.स. 2000 से 2036 तक क्षमा की प्रतिमूर्ति साध्वी खूमां जी के साथ।

❋ वि.स. 2032 ईडवा में अग्रगण्य के रूप में।

❋ वि.स. 2037 से 2070 तक शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी (प्रथम) के साथ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्योतिष की ज्ञाता–

साध्वी श्री ज्योतिष ज्ञान की जानकारी रखती थी। वार, तिथि, दुघड़िया, सुयोग, कुयोग, राहू–काल, योगिनी, चंद्रमा विचार, नक्षत्र, सिद्धि योग, रवियोग, गुरू पुष्य अमृत योग, रिक्तापूर्णा तिथियों का ज्ञान आपके मस्तिष्क के प्रकोष्ठ में रमा हुआ था। इस ज्ञान का उपयोग आप साध्वाचार के संदर्भ में कराती। कभी किसी गृहस्थी को फलाफल बताना आगम विहित नहीं है। आपने कभी किसी गृहस्थी को इस विषय में बताना जरूरी नहीं समझा। कभी कोई आपसे इस विषय में प्रश्न करता–आप साफ कह देती। भगवान की आज्ञा जिस संदर्भ में नहीं है वह काम मैं कभी नहीं कर सकती। भले ही कोई सामने वाला नाराज हो। किसी की नाराजगी को कम करने के लिए आपने अपने संयम में दोष नहीं लगाया। भगवान की वाणी लोगों को सुनाती –

''नक्खतं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं।
गिहिणो तं ण आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥''

तुला ज्यों न्याय प्रवण –

आपकी जन्मकुड़ली के अनुसार आपकी तुलाराशि थी। तुला का काम माप–तौल करना होता है। तुला में कोई पक्षपात नहीं होता। तुलाराशि होने की वजह से खरी खरी बात कहने में आपको कभी संकोच नहीं होता। जहाँ जिसे जो न्याय संगत कहना उसमें उन्हें हिचकिचाहट नहीं होती। भले ही सामने वाला व्यक्ति कितना भी प्रतिष्ठित क्यों न हो ?

कल्प–अकल्प के विषय में आपकी स्पष्टवादिता देखकर हम चकित हो जाते। हम उन्हें कई बार विनोद मे कहत–आप इतनी खरी बात फरमा देते है ऐसे नहीं कहना चाहिए। आपका एक ही वचन होता – खरी बात आचार सम्मत बात कहने में संकोच कैसा ?

प्राचीन समय की अद्‌भूत मापक –

प्राचीन समय में घड़ी का साधन सर्व सुलभ नहीं था। रेत की घड़ी से सामायिक जाप ध्यान का प्रचलन था। उस समय सूरज का ताप, छाया, चन्द्रमा, तारों के हिसाब से काल का माप होता। साध्वी राजकुमारी जी ने नन्हीं वय से कानसति, झमकूसति के साथ रहते हुए कालमान करने का अवबोध प्राप्त कर लिया। कानसति झमकूसति आपको फरमाते –नानकी ! छाया को मापकर आवो और बताओ प्रतिलेखन आ गयी क्या ? रात कितनी आयी है सूर्योदय में कितना समय शेष है ? ये ज्ञान उस समय सहज होगा पर आज नई पीढ़ी के लिए तो महान् आश्चर्य है। साध्वी राजकुमारी, साध्वी खूमां

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जी के ठिकाने में श्रेष्ठ कालमापक के रूप में रही। हम लोगों को कालमान की ये बातें आप बताती रहती।

त्यागतप की दीप्ति –

आपका पूरा जीवन तपोमय रहा है। 86 वर्ष का संन्यासकाल तपस्विता का प्रतीक है। साधु जीवन में विहार, गोचरी, बाईस परीषहों को सहना, स्वाध्याय, जाप, ध्यान की तेजस्विता के परमाणुओं से आपका जीवन सजा संवरा था। लगभग 60 वर्ष तक की उम्र तक आप उपवास बेला आदि करती। उसके बाद विगय वर्जन का क्रम बना हुआ था। खाते–पीते मोक्ष त्याग की संकल्प चेतना का आयाम है। आप बहुत सारे त्याग प्रत्याख्यान करवाती। प्रतिदिन भोजन के बाद कई घंटों तक त्याग करना, प्रतिदिन दो पोरसी करना आपके जीवन का अभिन्न अंग था। वि.स. 2017 तेरापंथ द्विशताब्दी में आपने कई संकल्प ग्रहण किए। सम्पूर्ण तम्बोल का आपके त्याग था। जीवन की संध्या में 21 द्रव्य, 11 द्रव्य, फिर 7 द्रव्य फिर एक द्रव्य में आ गयी। आपने पांच विगय, छः विगय वर्जन इतनी ज्यादा की है जिसका आंकड़ा नहीं किया जा सकता। आप द्वारा की गयी तपस्या का विवरण इस प्रकार है –

उपवास	–	लगभग 1300
बेला	–	15
तेला	–	15
अठाई	–	01
दस प्रव्याख्यान	–	पन्द्रह बार

हर महीने में पांच दिन छः विगय , 10 दिन पांच विगय परिहार।

सेवा से महानिर्जरा –

जो वृद्ध, रूग्ण शैक्ष की सेवा करता है वह मेरी सेवा करता है ऐसा तीर्थकरों ने कहा है। सेवा शाश्वत धर्म है। सेवा भेद विसर्जन की साधना है। सेवा आत्मकल्याण का राजमार्ग है। ज्ञानी होने का महान् फल है। सेवा साधना से केवल ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। आपकी सेवा भावना उल्लेखनीय रही है। आपको जन्मघूंटी में सेवा के संस्कार मिले थे।

साध्वी जुहांरा जी (मोमासर) की सेवा में एक चातुर्मास तक रही। साध्वी श्री सोना जी (सरदारशहर) की सेवा में 18 माह पड़िहारा रही। साध्वी भानूमति (गंगाशहर) की 8 माह तक बोन टी.बी. की बीमारी में परिचर्या की। साध्वी श्री संतोकाजी (लाडनूं) को 35 मील तक एवं साध्वी पानकुंवर जी (सरदाशहर) को तीन मील तक अन्य साध्वियों के साथ झोली में उठाकर लाने का काम पड़ा। सेवा भावना के द्वारा आपने कर्मों की महानिर्जरा की।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी श्री खूमां जी की सेवा का मेवा –

साध्वी श्री खूमां जी ने मातुश्री छोगां जी की तेसीस वर्ष तक सेवा की। साध्वी श्री खूमां जी तेरापंथ शासन में नामी लब्धप्रतिष्ठ, गंभीर, सूझबूझ की धनी, संघ हितैषी साध्वी थी। खूमां जी की सन्निधि मिलना सौभाग्य का सूचक माना जाता था। कालूगणिराज के द्वारा साध्वी खूमांजी को 7 साध्वियों की बख्शीश थी। चाकरी की, बोझभार की, समुच्चय के कार्यों की बख्शीश प्राप्त थी। वि.स. 2000 की साल में आप खूमांसति के साथ आयी। वि.स. 2036 तक उनके साथ रही। साध्वी श्री खूमांजी के इंगित की आराधना करना, उनके दाएं बाएं हाथ की तरह सहयोगी बनकर धर्म प्रचार करना, उनकी वृद्धावस्था में प्रातः सायंम् प्रवचन करना, उन्हें नेत्र ज्योति न होने से स्वाध्याय शास्त्र सुनाना, आपका निजी सेवा का दायित्व था। आप साध्वी खूमांजी के तन की पछेवड़ी बनकर रही। साध्वी खूमांजी की परछायी ज्यों साथ रहती। हर पल उन्हे चित्त समाधि पहुँचायी। वृद्धावस्था में साध्वी खूमांजी सीमित द्रव्यों का प्रयोग करते। आप जो द्रव्य आसेवन करती वो नहीं मिलता तो पूरी गवेषणा करके लाती। गोचरी से ठिकाने तक आने में देर हो जाती। साध्वी खूमां जी को तब चिन्ता हो जाती। आप गेट के पास आकर खड़ी हो जाती। आने जाने वाले भाई–बहिनों से पूछती –राजकंवर गोचरी गयी हुई है अभी तक आयी नहीं। जरा पता करो क्या बात है ?लेट कैसे हो गयी। जब आप गोचरी लेकर ठिकाने पधारती, तब साध्वी खूमां जी कहती –राजकंवर! इतनी लेट मत किया कर। तू लेट हो जाती हैं तब मुझे चिन्ता हो जाती है। हम साध्वियों से खूमांजी महासतियां जी फरमाती – राजकंवर को किसी चीज को लाने के लिए कह दिया जाए तो वह तीजे गाँव चली जाती है आप विनोद में फरमाती।

36 वर्ष रही 63 ज्यों खूमां जी के साथ –

साध्वी राजकुमारी जी महासति खूमांजी के साथ 36 वर्ष रही। 63 के अंक की तरह घुलमिल कर रही। क्षमा की प्रतिमूर्ति से आपने ऋजुता, मृदुता, सहजता, सरलता की सौरभ हासिल की। उन्हीं के चरणों में विभिन्न राग–रागनियों को सीखा। तेरापंथ की मर्यादा व्यवस्था परम्परा की जानकारी उनके पास की। आपने खूमासति से सीखा –आत्मा के आस–पास रहना, तत्त्वज्ञान का अमृत फल खाना, स्वाध्याय करना, लिपि कौशल, शास्त्रों का सार, कलात्मक जीवन और मृत्यु को महोत्सव बनाने की कला।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वी पानकुमारी जी प्रथम के साथ सत्तर वर्ष –

साध्वी राजकुमारी जी ने बताया कि मुझे सत्तर वर्ष तक पानकुमारी जी प्रथम के साथ रहते हुए संयमी जीवन के सुनहरे पल जीने का आनन्द मिला। मैं मेवाड़ देश की थी, वे थली प्रान्त में श्रीडूंगरगढ की रहने वाली थी। एक प्रान्त नहीं, एक देश नहीं, सगी बहनें नहीं, पर सगी बहनों से ज्यादा शान्त सहवास सौहार्द, परस्पर तादात्म्य का मैंने अनुभव किया। भिक्षु शासन की छाँव तले मुझे पानकुमारी जी का बेहद सहयोग मिला। साध्वी पानकुमारी जी फरमाती है– हर कार्य को निष्ठापूर्वक करने की ललक उनकी सराहनीय थी। आपके द्वारा तैयार की गई भेंट सामग्री गुरू चरणों में उपहृत करने का सुखद संयोग मुझे लम्बे समय तक मिला।

हम दोनों वि.स. 2000 के साल से सहभागी बने – साध्वी खूमां जी के सिंघाडे से। वे 36 वर्ष तक खूमां जी के साथ एवं अग्रिम वर्षों में वि.स. 2070 के साल तक हम दोनों साथ–साथ रहे। स्वाध्याय, ग्रन्थ वाचन, ध्यान, जाप हमारा साथ में होता। दोनों पास–पास में बैठते पर बातें नही करते। सीखना, धारना, चितारना – यही हमारा असली साथ का प्रेरक इतिहास है। ऐसा कहते हुए साध्वी पानकुमारी जी भाव विह्वल हो गई।

पान + राज की अद्भूत इकतारी – मैनें (परमयशाजी) दोनों साध्वी जी की अद्भूत इकतारी देखी है। गर्मी के मौसम में लू भी दोनों को एक साथ में ही लगती। सर्दी में कफ खाँसी का प्रकोप भी दोनों को एक साथ ही होता। ड्रिप दोनों को कई बार एक साथ में ही लगती। साध्वी पानकुमारी जी के उपवास होता, उस दिन आप प्रतिक्रमण के बाद अंदर कमरे में पधार जाते। जब साध्वी राजकुमारी जी कक्ष में पधार जाते। हम मनोविनोद करते –''आप क्यों पधार रहे हो ?'' आप सहजता से कहते – ''बड़ा महाराज पधारग्या जणां मैं जास्यूं।'' हमने आपका सात्विक स्नेहभरा नजारा लम्बे समय तक देखा। एक बार साध्वी प्रमुखा जी ने पूछा –''पानकुमारी जी से मोह है क्या ?'' आपने कहा – मेरा उनसे मोह –राग नहीं है। उन्होंने मुझे कितनी चित्त–समाधि दी है। उनका असीम उपकार मैं कभी नहीं भूल सकती।

स्वामी जी की अनुकम्पा से नई ज्योति –

साध्वी राजकुमारी जी की आस्था के आराध्य थे – भिक्षु स्वामी। उनके अधरों में भिक्षु, धड़कनों में भिक्षु व रोम–रोम में भिक्षु स्वामी बसे हुए थे। आपके जीवन में आस्था श्रद्धा भक्ति के चमत्कार कई हुए है। आप शासनश्री साध्वी पानकुमारी जी के साथ धन्यता का अनुभव कर रहे थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपकी आँखों में मोतियाबिन्द हो गया। फलस्वरूप नजर कम हो गई। आसीन्द में आपकी एक आँख का ऑपरेशन हुआ। दूसरी आँख का ईलाज लाडनूं चाकरी मे हुआ। हालांकि उस समय लैंस का प्रचलन ज्यादा नहीं था। अतः आपके लैंस नहीं लगाया गया। आँख की कारी में हमने (साध्वी पानकुमारी जी उनकी सहयोगी साध्वियों) एवं क्षेत्रीय लोगों ने सजगता से सेवा की। आप उस समय भी विश्राम के दौरान ऊँ भिक्षु का जाप ही ज्यादा करती। स्वामी जी के सुमिरन से अचिन्त्य चमत्कार घटित हुआ। आपकी नेत्र ज्योति बहुत अच्छी हो गयी। आपके चश्मा भी 12–13 नंबर का लगता था। लगभग 75–80 वर्ष की उम्र में नयनों के मोतियाबिन्द का ईलाज हुआ। फिर जीवनभर आपकी आँखे स्वस्थ रही। आप अमृत वचन फरमाती – स्वामी जी के प्रताप से मैने नई ज्योति प्राप्त की है। मैनें ऑपरेशन करा लिया। अतः जीवन भर वाचन विहार स्वाध्याय सभी कार्यों में मुझे असीम प्रसन्नता की अनुभूति होती है।

70 वर्षीय जोड़ी छोड़ चले –

संथारे के दौरान आपने एक दिन कहा – ''हमारी 70 वर्ष से जोड़ी रही है। सुखद जोड़ी रही है। मैं तो उस जोड़ी को छोड़ कर जा रही हूँ।

मैने (साध्वी पानकुमारी जी) निवेदन किया – ''आप मुझे छोड़कर क्यों जा रहे है ? साथ में लेकर चलो।'' तब साध्वी राजकुमारी जी ने कहा –''साथ में आपको नहीं ले जाऊँगी। अभी आपके देरी है।''

मैने (साध्वी पानकुमारी जी) कहा –''आपको कितना प्रभावशाली संघ प्रभावक संथारा आया है। वैसे ही मुझे भी संथारा करवाना।'' तब आपने कहा –''अभी संथारे की देरी है संथारे का साझ देने का भाव है।''

साध्वी पानकुमारी जी के सहयोग से अच्छा साधुपन पाला –

साध्वी पानकुमारी जी की आप भूरि–भूरि तारीफ करते हुए फरमाती – मुझे आज यह कहने में अतिश्योक्ति नही लगती कि मैनें पानकुमारी जी के सहयोग से अच्छा साधुपना पाला है। मुझे इनका बेहद सहकार, सामंजस्य अच्छा लगा। इनके शुभ संयोग से मेरे संयम पर्यवों की निर्मलता पवित्रता बढ़ी है। संथारे में बहुत बार फरमाते –''पानकुमारी जी को तो कोई मुकाबलो ही कोनी।'' ''आंरी तो कोई होड़ ही कौनी हुवै। आंरी कुंण बराबरी कर सकै। आंरे जोग स्यूं मनैं घणी चित समाधि मिली है।''

साध्वी पानकुमारी जी की विनम्रता याद आएगी –

साध्वी राजकुमारी जी साध्वी पानकुमारी जी से दीक्षा पर्याय में रत्नाधिक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

थी। साध्वी पानकुमारी जी अगवानी पद पर होते हुए भी व्याख्यान के सिवाय कभी पट्ट पर नहीं विराजी। साध्वी राजकुमारी जी की सेवा में तैयार रहती। साध्वी राजकंमारी जी को बहुत वर्षों तक टाइफाइड होता था उस दौरान चिकित्सा की व्यवस्था करना, घासा बनाकर देना, बार–बार बुखार देखना, धर्म ध्यान का साझ देना आपकी अनुकरणीय विशेषताएँ हैं। आप साध्वी राजकुमारी जी का आदर सम्मान बहुत करती। साध्वी राजकुमारी जी हमें शिक्षा का रसायन पिलाते हुए कहती –''बड़ों के प्रति विनय–विवेक, श्रद्धा–समर्पण पानकुमारी जी से सीखा जा सकता है। साध्वी पानकुमारी जी की विलक्षण सेवा भावना का आप खास तौर से बयान करती। प्रमोद भावना भाते हुए हमें सेवाभाव, श्रद्धा समर्पण का संस्कार प्रदान कराती। ऐसा विनय एवं वात्सल्य का संगम तेरापंथ शासन में ही देखने को मिलता है।'' साध्वी पानकुमारी जी का छोटों के प्रति भी वात्सल्य भाव अनुकरणीय है। बहुत बार दोनों साध्वी जी फरमाते – तुम तीनों कितनी सेवा करती हो। हमें चित्त समाधि देती हो। तुम्हारे सहयोग से ही हमारा काम चलता है। ऐसा मैंने (साध्वी परमयशा) अनुभव किया कि दोंनो साध्वी जी का सद्भाव बेजोड़ था।

काली मिर्च और नीम का अनुपान –

साध्वी राजकुमारी जी को प्रारंभिक कई वर्षों तक टाइफाइड होता रहा। फिर आपको किसी ने बताया पांच काली मिर्च और ढ़ाई नीम के पत्तों का सेवन करने से बुखार नहीं आता। आपने उस बात की गांठ बांध ली। आप नववर्ष प्रवेश पर वि.स. की चैत्र शुक्ला एकम को लेती। हमें भी काली मिर्च और ढ़ाई नीम के पत्तें दिराती। गजब का चमत्कार कहना होगा – काली मिर्च व नीम के पत्तों के सेवन से आपको टाइफाइड होना बंद हो गया क्योंकि नीम को एंटीबायोटिक माना जाता है। उससे शारीरिक दोषों का उपशमन होता है। साध्वी राजकुमारी जी ने भी आरोग्य की उपलब्धि नीम–काली मिर्च से प्राप्त की।

ईडवा चातुर्मास गुरू कृपा का प्रसाद –

साध्वी श्री खूमां जी की सेवा में आप प्रसन्नमना थी। इसी बीच आपका वि.स. 2032 का चातुर्मास गुरूदेव श्री तुलसी ने ईडवा घोषित किया। उस साल साध्वी हरकंवर जी एवं साध्वी केशर जी का चौमासा घोषित किया था। किन्तु किसी कारणवश वे दोनों सिंघाडे वहाँ नहीं पधार सके। तब आपको अग्रगण्य के रूप में पावस करने का अवसर गुरूकृपा से प्रसाद के रूप में मिला।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपका अगवानी बन कर जाने का यह प्रथम अवसर था। साध्वी खूमांजी से आपने कहा –''मैं नयी नयी हूँ। वहाँ कैसे काम करना है ?'' साध्वी खूमां जी ने फरमाया – ''तुम अगवानी की दृष्टि से नयी हो, पर अनुभवों की दृष्टि से प्रौढ़ हो। जैसे यहां मेरे पास काम करती हो। उससे सवाया काम तुम वहाँ करना। गुरूदेव का आशीर्वाद तुम्हारे मस्तक पर है। इसीलिए चिन्ता की कोई बात नहीं है। किसी भी काम को प्रारम्भ करने से पहले नमस्कार महामंत्र एवं ऊँ भिक्षु का नाम लेना, तुम्हें सर्वत्र सफलता मिलेगी। आपने साध्वी श्री खूमां जी का मंगलपाठ श्रवणकर ईडवा पावस करने के लिए नम नयनों से प्रस्थान किया क्योंकि क्षमा की प्रतिमूर्ति स्नेहमयी साध्वी खूमांजी की सन्निधि छोड़ना सहज कार्य नहीं था।

बाढ़ की चपेट से गाँव जलजलाकार –

साध्वी राजकुमारी जी , इन्दू जी, हरकंवर जी, मुक्तिप्रभा जी– आप चार साध्वियाँ विहार करते हुए खाटू पहुँची। तब रास्ते में मूसलाधार वर्षा शुरू हो गयी। जाखेड़ा ग्राम में डेढ़ दिन रहना पड़ा क्योंकि आगे पूरा गाँव जलजलाकार हो रहा था। जिस घर में आप रहे, वहाँ भी पानी आ गया था। जिस कमरे में आप रूके उसमें भी बैठने की जगह नहीं रही। अगले दिन विहार किया। पानी के प्रवाह में साध्वी इन्दू जी गिर गयी। पुनः उन्हें हाथ का सहारा देकर उठाया। घुटनों तक पानी था। उसमें चार साध्वी जी, तीन बहनें एवं एक काशीद चल रहा था। किरोदा ग्राम आया, वहाँ तीन दिन रहे, वहाँ जैनों के घर नहीं थे। गोचरी पानी की सुविधा नहीं। जिस घर में ठहरे, वह एक मास्टर का घर था। उसने भक्तिभाव से सबकी व्यवस्था की।

पूरा गाँव जलमग्न हो रहा था। जिस कमरे में साध्वियाँ विराजित थी, उसकी छत से पानी टपकने लगा। आप प्रायः दिन–रात खड़े रहे, पर पुस्तकों व उपकरणों को भीगने नहीं दिया।

अथाह पानी को देखते हुए विहार का मन नहीं हो रहा था पर श्राविका विदामीबाई ने कहा –''महाराज विहार करो। भिक्षु स्वामी हमारे साथ में है। आपको कोई डर भय नहीं है।'' विदामीबाई के अति आग्रह से विहार किया। पानी में कदम गिनते–गिनते विहार कर रहे थे। कासीद पिथोजी पानी के भंवर में फंस गये। लकड़ी से जोर लगाकर बहनों के सहयोग से वे बड़ी मुश्किल से भंवर से बाहर निकल पाये।

दो बालक आए –चमत्कार दिखा गए –

आप उत्साह के साथ साहस बटोरकर पानी को पार कर रहे थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अचानक दो छोटे छोटे लड़के आए। उन्होंने पूछा – ''महाराज! आप कहाँ जा रहे है ? पूरा गाँव खेत, नदी, नाले जलमग्न हो रहे हैं। रास्ते में चलना कठिन होगा। आप ऐसे कैसे जाएंगे ? कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। उन बालकों ने कहा – महाराज! आगे गहरी खाई है। आप ध्यान रखना। मैनें पूछा –खाई का पता हमें कैसे चलेगा ? उन लड़कों ने हमें सही रास्ता बताया। वे कुछ देर हमारे साथ चले। खाई का रास्ता पार होने पर दोनों लड़के गायब हो गये। सबने उनको खोजा पर वे कहीं नजर नहीं आए। यो लगा मानों स्वामी जी साक्षात् बच्चो का रूप बनाकर रास्ता पार कराने पधारे हो। स्वामी जी के प्रताप से मैने संकटों की घाटियों को पार किया। ऊँ भिक्षु जप जपते हम आषाढ़ शुक्ला तेरस को अपने पावस स्थल पर सही सलामत पहुँच गये। यह था गुरूदेव की शक्ति का प्रताप और आचार्य श्री भिक्षु की आस्था का चमत्कार।

ईडवा चातुर्मास में आपने धर्म ध्यान का ठाठ लगा दिया। आपकी प्रेरणा सें वहाँ अध्यात्म जागृति का मेला लग गया। वहाँ खूब तपस्याएं हुई। त्याग – प्रत्याख्यान संवत्सरी उपवास पौषध का रिकॉर्ड बना। गुरूदेव ने आपकी योग्यता पर विश्वास किया। आपने अपनी क्षमता का भरपूर उपयोग करते हुए शासन का गौरव बढाया। चातुर्मास समाप्त होने पर आपने गुरूदेव के दर्शन किए। गुरू चरणों में ईडवा पावस से पूर्व की रोमांचकारी भयावह जल विप्लव की घटना बतायी पानी में चलने के दौरान लगभग 1500 पैर लगे। गुरूदेव से प्रायश्चित की माँग की। गुरूदेव तुलसी ने फरमाया –''तुमने मुश्किल घड़ी में साहस का परिचय दिया है। अथाह पानी में चलते हुए भी कितने पैर लगे – यह गिनती की है। बहुत बड़ी बात है। तुम्हें जितना धन्यवाद दे उतना कम है। प्रायश्चित्त क्या दे ?तुम सब जीवित आ गई सौभाग्य की बात है।'' ईडवा चातुर्मास से पूर्व हुई जल विप्लव की घटना का आपने एक व्याख्यान बनाया। विभिन्न राग–रागनियों से गुम्फित व्याख्यान का नाम है – ''नीर परीक्षा।'' आप बहुत बार इस व्याख्यान को लोगों के समक्ष पेश करती। श्रावक श्राविकाएं बहुत आकर्षण से आपका व्याख्यान श्रवण करते आपकी डायरी में सुन्दर सूक्ष्माक्षरों में ''नीर परीक्षा'' व्याख्यान लिखा हुआ है।

वात्सल्य की सुखद सरिता ने कराया एम.ए. –

अपने से बड़ों के प्रति विनम्रता और छोटों के प्रति वात्सल्य का भाव आपके रोम–रोम में बसा हुआ था। वात्सल्य की छाँव तले आपने कितनी भव्य आत्माओं को संस्कारी बनाया। मेरी (साध्वी परमयशा) एम.ए. जैन दर्शन की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परीक्षा जैन विश्व भारती संस्थान से आयोजित हो रही थी। आप मुझे अध्ययन की सतत् प्रेरणा प्रदान करती। पढ़ने के लिए समय नियोजन का विधान फरमाती। मैं जब कभी पछेवड़ी की सिलाई करने बैठती। आप मुझे सिलाई नहीं करने देती। आप फरमाती – सिलाई का काम तो मैं भी कर दूंगी। तुम अपनी पढ़ाई करो। तुम्हे फर्स्ट डिवीजन आना है। अपने ठिकाने का गौरव बढ़ाना है। आपकी कृपा करूणा की सुखद सरिता का प्रवाह निर्मल निश्छल था जो मेरे जीवन का मधुर संस्मरण बन गया।

मेरी एम.ए. की परीक्षा चल रही थी। शाम को लाईट चली जाती तो आप फरमाती – अभी तुम सो जाओ। फिर प्रकाश होगा तब मैं तुम्हें उठा दूंगी। रात को जैसे ही 1–2 बजे रोशनी का संचार भवन में होता, आप मुझे जगा देतीं। पढ़ने के लिए बैठा देती। आप स्वयं इष्ट सुमिरन के लिए विराजमान हो जाती। आपको ऐसा लगता – कि मेरी (परमयशाजी) परीक्षा क्या हो रही है मानों उनकी (राजकुमारी जी) भी परीक्षा हो रही है। साध्वी धर्मयशाजी और मैंने (परमयशाजी) साथ–साथ परीक्षा दी।

जब हम परीक्षा देने के लिए परीक्षा हॉल में जाते आप परीक्षा कक्ष में हमें पानी पिलाने के लिए पधारती। जितनी देर हमारी परीक्षा होती, नवकार मंत्र एवं ऊँ भिक्षु का जाप करती रहती। मैनें पूछा –परीक्षा हमारी हो रही है। आप जाप क्यों करते हो ?आप फरमाती –मैं जाप इसीलिए करती हूँ ताकि तुम्हारी परीक्षा सानन्द सम्पन्न हो अच्छा पेपर हो। मैनें अनुभव किया – आप एक ममतामयी माँ है। धर्मसंघ की हम नन्हीं साध्वियों को विकास के सोपान पर आरूढ़ देखने की आपकी तीव्र तमन्ना है।

जब हमारा एम.ए. का रिजल्ट आया, फर्स्ट डिवीजन पास एवं मेरिट की मार्कशीट को देखकर आपने फरमाया – ''मैनें पहले की कह दिया था कि तुम दोंनो फर्स्ट आओगी। तुम्हारे फर्स्ट आने से शासन की गरिमा बढ़ी है। हमारी भी महिमा बढ़ी है।'' हमें एम.ए. के रिजल्ट से जितनी प्रसन्नता थी, आपको उसे ज्यादा खुशी थी।

तुम्हें पीएच.डी. करना है –

साध्वी राजकुमारी जी की हार्दिक भावना थी कि तुम्हें (परमयशाजी को) एम.ए. के बाद पीएच.डी. करना है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में राजगढ़ में पीएच.डी. का फॉर्म भरा। उसकी स्नोपसिस तैयार की। गाईड रूप में डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी को स्वीकृत किया गया। विषय था ''आचार्य श्री महाप्रज्ञ का नैतिक दर्शन।'' तब साध्वी राजकुमारी ने फरमाया – ''तुम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पीएच.डी. आचार्य महाप्रज्ञ जी पर कर रही हो, यह मेरे लिए प्रसन्नता का हेतु है। तुमने अच्छा विषय चुना है। आप आचार्य प्रवर के साहित्य का सतत् अध्ययन–स्वाध्याय करती रहती। जब कोई पृष्ठ पर नैतिकता से सम्बद्ध आचार्य प्रवर का मन्तव्य आता। तब आप मुझे बताती, देखो यह विषय तुम्हारे काम आ सकता है। ऐसे कई संदर्भ नैतिक दर्शन के आपने मुझे इंगित किये। जिसे मैनें अपनी थीसिस में एड किया। आपका आशीर्वाद मेरी संयमी यात्रा पथ मे मार्गदर्शक है। पीएच.डी. की पुस्तक में एवं मेरी गीतो की पुस्तक "श्रुत वंदना" एवं "अलौकिक –आभा" में साध्वी श्री पानकुमारी जी एवं साध्वी राजकुमारी जी ने अपना आशीर्वचन प्रदान कराया। जो मेरे लिए आदरणीय एवं स्तुत्य है।

जब पीएच.डी. का थीसिस पास हो गया, उसका वायवा (इंटरव्यू) लाडनूं जैन विश्व भारती संस्थान में आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित हुआ। यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर सुधामही जी की टीम ने कई सवाल पूछे। वायवा का अच्छा सुपरिणाम रहा। शासन श्री जी मेरी उपलब्धि को देखकर सुनकर अत्यन्त हर्षान्वित हो गयी।

जब देशनोक चातुर्मास में यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टरेट की डिग्री का प्रोग्राम आयोजित किया गया। डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी डिग्री प्रत्यर्पण के लिए प्रोग्राम के मुख्य वक्ता की हैसियत से यूनिवर्सिटी द्वारा भेजे गये। संघ प्रभावना का आयोजन और डॉक्टरेट की उपाधि से सभी हर्ष विभोर रोमांचित थे। साध्वी राजकुमारी जी ने फरमाया –आज मेरा सपना साकार हुआ है तुम्हें डॉ. की उपाधि मिली है। इस गण प्रभावना के कार्यक्रम से मैं इतनी उल्लासित प्रफुल्लित हूँ, जिसे शब्दों में कहा नहीं जा सकता। आज तुमने साध्वी पानकुमारी जी के सिंघाडे का गौरव शतगुणित कर दिया है। आपने मुझे शुभ भविष्य की शत शत बधाईयाँ दी। मैनें अनुभव किया–"मैं सौभाग्यशाली हूँ जो मुझे गुरूकृपा से दो–दो वयोवृद्ध साध्वियों की छत्रछाया मिली।"

द्वितीया के चन्द्रदर्शन की शौकीन –

शुक्ल पक्ष के दूज के चन्द्रमा को भारतीय परम्परा में शुभ सौभाग्यसूचक समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। आप दूज के चन्द्र दर्शन के बड़े शौकीन थे महीने की शुक्ल पक्ष की द्वितीया को आप याद रखते। शाम को चाँद देखने का प्रयास करते।

मैनें प्रश्न किया –"चाँद दर्शन से क्या लाभ होता है ? आपके भीतर चन्द्र

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दर्शन का आकर्षण क्यों है ?क्या आपको ज्योतिष्क देवता अच्छे लगते हैं ?'' आपने समाधान करते हुए फरमाया –''शुक्ल पक्ष के दूज के चाँद की कलाएं क्रमशः बढ़ती है। पूर्णिमा के चाँद की कलाएं निःशेष हो जाती है ?चन्द्र दर्शन के माध्यम से हम अभिलाशा करते हैं कि हमारे जीवन में ज्ञान–दर्शन, चारित्र गुणनिधि का ग्राफ ऊँचा उठे। जैसे –चन्द्रमा की कलाओं का विकास होता है। इस दृष्टि से चन्द्रमा को देखने का रिवाज रहा है। मैं भी देखती हूँ। मुझे ज्योतिष्क देवों से कोई आकर्षण नहीं है।

मैनें प्रश्न किया–चन्द्र दर्शन के वक्त क्या बोलना चाहिए ? आपने फरमाया – मैं नवकार मंत्र बोलती हूँ। नवकारमय बनने की भावना करती हूँ। आगम का सूक्त–

''नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहे व य
खंतीए मुत्तीए वडढ़माणो भवाहि य ॥''

हम ज्ञान, दर्शन, चारित्र क्षमामुक्ति, आर्जव मार्दव आदि गुणों से वर्धमान बने–यह चाह रखती हूँ । हमारी गुण मंजूषा गुण रत्नों से भरी भरी रहे। इस दृष्टि से मैं द्वितीया के चन्द्र दर्शन की शौकीन हूँ।

भिक्षु शासन का सहारा –

साध्वी राजकुमारी जी 87 वर्ष तक जमीन पर कंबल बिछाकर पालथी लगाकर विराजती। प्रेक्षाध्यान में जितने आसन प्रणायाम है, उतने सारे योग आप लगभग 80–82 की उम्र तक करने मे समर्थ थी। यहीं वजह है कि आपके कभी घुटनों मे दर्द नहीं हुआ। न कमर दर्द की समस्या खास तौर से सामने आई।

एक बार (साध्वी पानकुमारी जी प्रथम) मैंने फरमाया – आप वयोवृद्ध है, सहारा दीवार का लेकर विराजे तो आराम रहेगा। आपने तपाक से जबाब दिया – साध्वी जी का फरमाना उचित है, पर हम दीवार का सहारा क्यों लें ?हमारे तो भिक्षु स्वामी का, भिक्षु शासन का, गुरूदेव का सहारा काफी है। सहारा लेने से तो रीढ़ की हड्ड की शक्ति कम हो जाती है। बुढ़ापा जल्दी आता है। अतः मै सहारा लेना पसंद नहीं करती। गुरू से बढ़कर इस दुनिया में असली सहारा कोई नहीं होता। संघं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। मेरं शरणं गच्छामि। गुरूवरम् शरणं गच्छामि। जब यह शरण चतुष्पदी मेरे साथ है, फिर किसी दीवार का भौतिक सहारा क्यों ग्रहण करे।

कोई बेड शोर का संकट नहीं –

लंबी उम्र में लंबे समय तक एक आसन में विराजना। एक मुद्रा एक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करवट में लेटना –ऐसी स्थितियों में भी आपके कभी बेडशोर जैसी प्रोब्लम नहीं हुई। डॉ. रामदेव जी कहते – साध्वी श्री का ध्यान रखना, कहीं बेडशोर न हो जाए।

तब आप फरमाती –मैनें कालूगणिराज के युग का अन्न खाया है। कालूगणिराज से ओज आहार प्राप्त किया है। मेरे गुरूदेव परमप्रतापी परमभाग्यवान थे। उनके आभावलय के सबल सक्षम परमाणु मुझे मिले है। मेरे माता–पिता की मैं इकलौती संतान हूँ। उनके स्वास्थ्यप्रद संस्कार मुझे मिले हैं। मैं राणा प्रताप के देश की वीरांगना हूँ। अतः मेरा शरीर मजबूत और फौलादी है, तब बेड शोर आएगा कहाँ से ?

हाथ पकड़कर ऊपर चढ़े –

आप सन् 2007 में बीकानेर में सादुलगंज में विराज रहे थे। गर्मी के मौसम में लू का प्रकोप हो रहा था। आप दोपहर में शयन कर रही थी। नींद में एक सपना आया। साध्वी श्री सोना जी और केशर जी सीढ़ियों में खडे थे। उन्होंने आपको आवाज देते हुए कहा – राजकुमारी जी आ रहे हो क्या ? साध्वी राजकुमारी जी ने कहा – मुझे लू लगी हुई है। इन दिनों भूख भी नहीं लगती। आहार आदि कम चलता है अतः शरीर अस्वस्थ व कमजोर हो रहा है। मैं ऊपर सीढ़ियों पर नहीं चढ़ सकती। (उस समय आपकी उम्र 87 वर्ष की थी) एक बार तो उन्हें मनाही कर दी। फिर मैं विनम्रशा जी, मुक्ताप्रभा जी, का हाथ पकड़कर ऊपर चढ़ गई। दोपहर को आपने हमें यह सपना बताया। हमने सोचा – यों ही जंजाल आ गया होगा। आप आहार के लिए शाम को पधार रही थी। अपने आसन से उठी कि वापिस गिर गयी फिर उठा ही नहीं गया। हमने पकड़कर उठाया, कुर्सी पर बिठाया। डॉ. जी.एस. विजय को बुलाया। डॉ. साहब ने एक्स रे के लिए बोला। एक्स रे में कूल्हे की हड्डी में क्रेक आया। 21 दिन का ट्रेक्सन लगाया गया पर हड्डी ठीक नहीं हुई। आचार्य श्री महाश्रमण जी उस समय युवाचार्य प्रवर थे। आपके निर्देशानुसार डॉ. जी.एस. विजय ने आपका सफल ऑपरेशन किया। उस दौरान डॉ. धनपत कोचर, डॉ. स्वाति फलोदिया, डॉ. सोहिनी कोचर, डॉ. मंजू कच्छावा की सेवाएँ भी सराहनीय रही। शांतिलालजी सुराना की सेवाभावना जागरूकता उल्लेखनीय रही। आपने 36 दिन बाद जमीन पर पैर रखे। 6 माह से आप पूर्ण ठीक हुए। इस वक्त साध्वी पानकुमारी जी के सान्निध्य में लालकोठी, बीकानेर में चातुर्मास हुआ। सघन चिकित्सा सेवा से आपने नया जीवन प्राप्त किया। ऑपरेशन के बाद सात साल तक अच्छा उपयोगी साधनामय जीवन जीया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दोपहर को सपना देखा। शाम को फ्रेक्चर हो गया उसी दिन से आपने साध्वी विनम्रयशा जी व मुक्ताप्रभा जी का हाथ पकड़ लिया। यानि उनके बिना आपका कोई शारीरिक क्रियाकलाप नहीं हो पाता। अंतिम सात वर्षों में दोनों का हाथ पकड़कर सीढ़ियों पर चढ़ने ज्यों देवलोक गमन तक का सफर तय किया।

सतरह घंटा कुर्सी पर आसिका –

लगभग 87 वर्ष तक आप जमीन पर गत्ता आसन लगाकर पालथी लगाकर विराजती। कोई पैरों में, घुटनों में, कमर में दर्द नहीं होना एक सुखद आश्चर्य था। शरीर हल्का था। वजन कम था। भोजन का संयम था। योग प्राणायाम मन प्राणों में रमा हुआ था। अतः उठने बैठने में 87 वर्ष तक बचपन जैसी चुस्ती स्फूर्ति ताजगी थी।

ऑपरेशन के बाद नीचे बैठना सर्वथा निशिद्ध था आप कुर्सी पर प्रातः 4–5 बजे विराजमान होती एवंरात्रि में 8–9 बजे शयन करती। उस बीच में लगभग 16–17 घंटे आप कुर्सी पर विराजित रहती। 16–17 घंटे स्थिरता से मूर्ति की तरह कुर्सी पर विराजमान होना एक बड़ी साधना है। पैरों में कई बार सूजन आ जाती। कुर्सी पर विराजमान होकर आपने सात वर्षों में नवकार मंत्र का कोटि जप किया। हजारों पृष्ठों का स्वाध्याय किया। हजारों आगम गाथाओं का पुनरावर्तन किया। कितनी सद्शिक्षाएं हमें प्रदान की। कालूयशोविलास, माणकमहिमा, मगनचरित्र, डालिम चरित्र आदि की रागों का ज्ञान व ऐतिहासिक तत्त्वों का ज्ञान आपने हमें कुर्सी पर बैठकर दिया। आपके संघ हित, आत्महित, पर–हित इरादों का आँकड़ा लम्बा है। जिसे बहुत कुछ कहने पर बहुत कुछ अधूरा रह जाता है।

''वक्त पड़ने पर जो किसी के काम आता है
जमाना सदा उसी के गीत गाता है।''

न शुगर, न प्रेशर, न हॉर्ट प्रॉब्लम –

94 वर्षीय साध्वी जी को यदा कदा सर्दी–गर्मी का प्रकोप हो जाता। एक बार चूलिए की हड्डी का ऑपरेशन हुआ। दो बार मोतियाबिन्द की वजह से आँखों का ईलाज हुआ इसके सिवाय कोई बीमारी नहीं थी। इतनी लम्बी उम्र में उनके पास ना शुगर आई, न प्रेशर आया और न ही कोई हॉर्ट प्रॉब्लम रही कोई बीमारी आपकी निरन्तर जीवन शैली के साथ न जुड पायी।

उन्होंने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की पुस्तक ''जीवन की पोथी'' पढ़ी। वह पुस्तक पढ़ी ही नहीं बल्कि आत्मसात कर ली। जिसकी वजह से आपने बुढ़ापे के साथ मैत्री कर ली। रोगों के साथ मैत्री कर ली। बुढापा और रोग

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उनके पास आने से घबराते थे। कभी कभार भूलचूक से आ भी जाते तो आप उन्हें शांति सहिष्णुता से समझाते हुए अलविदा कह देते। ऐसा आरोग्य का सुयोग आपको गुरू कृपा से मिला।

साध्वी राजकुमारी जी को दवा आसेवन की खास जरूरत ताउम्र नहीं रही। कभी–कभी कोई तकलीफ होती तो आपका विश्वास होम्योपैथिक पर ज्यादा था। सामान्यतया खाँसी, सर्दी, जुकाम, एलर्जी आदि कभी होती तो आप होम्योपैथिक दवा में श्रद्धा होने से उसी को काम में लेती।

आप फरमाती – अंग्रेजी दवाईयों के कई साईड इफेक्ट होते हैं पर होम्योपैथिक का कोई साईड इफेक्ट नहीं होता। बीमारी भी जड़ सहित मिट जाती है। होम्योपैथिक की मीठी गोलियों की शीशियां अपने पास रखते। दवा ग्रहण करते और कुछ दिनों बाद लाभ की अनुभूति हमें बताते।

होम्योपैथिक के लिए आप फरमाते –

होम्योपैथिक दवाई दूर करती है डिफेक्ट,
तन–मन का स्वास्थ्य करती है इफेक्ट,
मुझे तो बेहतर विश्वास है इस पर,
इसीलिए मैनें इसे किया है सेलेक्ट।

आप जहां भी पधारती, वहाँ होम्योपैथिक डिस्पेन्सरी तो प्रायः मिल ही जाती है। जब भी दवा का काम पड़ता, होम्योपैथिक ही लेते थे। जीवन के अंतिम संध्याकाल में उदासर में डॉ. बंगाली की दवा आपको जल्दी असर करती। आप फरमाते – बंगाली डॉक्टर जी नै बुलावो। बांरी दवाई म्हारै काम करे।

सोना समय को खोना है –

श्रम और विश्राम का संतुलन है –योग निद्रा। प्रायः सभी को दिन में शयन करने की आदत होती है। हमने देखा –साध्वी पानकुमारी जी और राजकुमारी जी को सोना अच्छा नहीं लगता। दिन में लेटकर आराम करना तो आपको कतई नापसन्द था। सुबह 4 बजे से रात्रि 9 बजे तक विश्राम न करना। वृद्धावस्था में भी नहीं पोढ़ना आपके जीवन की महानता का घटक तत्व था। आप फरमाती –सोना खोना है। जो सोता है उसका समय व्यर्थ प्रमाद में चला जाता है। ''जो सोवत है वो खोवत है। जो जागत है, वो पावत है।'' यह फरमाते हुए आप हमें आत्मजागरण का संदेश प्रदान कराती।

एक करवट में सोने की कला –

हालांकि आपका ज्यादा सोने मे विश्वास नहीं था। जागरण आपका आत्मसूत्र था। फिर भी रात्रि को एक करवट में सोने की कला आपकी अद्भूत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

थी। आप जीवन भर दांयी करवट में पोढ़ाते रहे। रात को कभी पसवाड़ा नही फेरते, चाहे सर्दी हो चाहे गर्मी हो। स्थिरता से योग निद्रा का आनन्द लेते हुए एक करवट में सोने की कला आपकी अलबेली थी। जो किसी विरले ही योगियों को उपलब्ध होती है। एक करवट में सोना, प्रातः स्फूर्ति के साथ जागना आपकी अप्रमतता का द्योतक था। हम आपकी एक करवट से सोने की कला को देखकर अभिभूत थी।

अल्पौपधि और अल्प बिछौना –

साध्वी राजकुमारी जी आगमोक्त विचारधारा के अनुसार अल्पौपधि, अल्पभाषी, अल्पशायी थी। संयमी यात्रा के आवश्यक उपकरणों की भी आप सीमा करती थी। आपका रात्रि शयन चंद घंटों का होता। उसमें भी आपका बिछौना पतला, हल्का और छोटा सा होता। एक बिलांग का आपका बिछौना देखकर हम कह देते – इस पर तो हमारा एक पैर भी पूरा नहीं आता। रात को सोना तो बहुत मुश्किल है आपकी दुबली पतली काया थी। एक पार्श्व शयन से बिछौने में सलवट नहीं आती। आप जितने घंटे योग निद्रा में होती, आनन्द मगन होती। हड्डियों का ढांचा मात्र शरीर होने से छोटे से बिछौने में भी आप सुख शय्या का अनुभव करती। 86 वर्षों तक आपके वहीं छोटे से बिछौने का क्रम रहा। जब 87 वे वर्ष में कूल्हे की हड्डी का ऑपरेशन हुआ। उधर वृद्धावस्था का आगमन हुआ। तब हमने एक छोटा सा स्पंज लगाना शुरू किया। वह भी आपको काफी दिनों तक नहीं जमा।

जापान की गुडिया –

आपका मुनित्व दीपता नजर आता जब आप सौष्ठवपूर्ण ढ़ंग से वस्त्र धारण करती। आपकी साड़ी की प्लेट्स हो या पछेबडी की प्लेट्स (पटलियां) बहुत सुन्दर घेरदार नजर आती। आपकी प्लेट्स 24 घंटों बाद भी वैसी की वैसी ही रहती, मानों अभी–अभी वस्त्र धारण किये हो। वस्त्रों में मैल नहीं के बराबर आता। वस्त्रों में सलवटें नहीं पड़ती, चाहे रात्रिशयन करके उठी हो। जीवन के संध्याकाल में कुर्सी से उठना भी मुश्किल हो गया था। उस समय आप कुर्सी पर विराजे इतनी सुन्दर प्लेट्स लगाती कि उन्हें देखकर हम चकित हो जाती। स्वच्छता केवल तन में, वस्त्र में नही थी, मन में भी बसी थी।

आपके करीने से धारण किये गए वस्त्र अंदाज को देखकर शासन गौरव साध्वी कमलूजीबहुधा फरमाती – राजकुमारी जी तो बनी बनायी जापान की गुड़िया है। इन्हें कभी भी देखो साफ सुथरी सजी संवरी लगती है। यह इनकी अद्भूत कला है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साता में असाता का उदय –

आपके साता वेदनीय का उदय प्रचुर पुण्योदय का प्रतीक था। आपका मन शान्त, संतुलित सकारात्मक भावों से भावित रहता। अतः असाता वेदनीय आपके पास आने से घबराता। जीवन में संध्याकाल में लगभग 90 वर्ष की वय में थोडी–थोड़ी अस्थमा की तकलीफ रहने लगी। आपने उसे समभाव से सहन किया। दीर्घश्वास प्राणायाम का प्रयोग जारी रखा। 92 वर्ष की उम्र में भी दमा का प्रकोप कई बार होता, उपचार से ठीक हो जाता। 93–94 की अवस्था में तो फेफड़ों ने काम करना बंद ज्यों कर दिया। आपको हिलने से भी सांस में तकलीफ होने लग जाती। इतना सांस उठता कि नया व्यक्ति तो देखने मात्र से घबरा जाए। आपको दिन में 3–4 बार सांस के लिये इन्हेलर दिया जाता, फिर सांस जमावट पर आ जाता। सिर्फ यह एक सातापूर्ण जीवन में असाता की लहर आयी पर आपके साधनामय जीवन को अस्त व्यस्त नहीं कर पायी।

सर्दी मे पैरों में घाव –

वयोवृद्ध शासन श्री जी के नरम पैरों में सर्दी की वजह से घाव हो जाते। अंगुलियों में पस हो जाती। शरीर सुकुमार हो गया। सर्दी के मौसम में घाव जन्य अंगुलियों में मरहम पट्टी करते। रात को नींद नहीं आती। हम दवा सेवन के लिए निवेदन करते। तब आप फरमाती – ये शरीर अपना काम करता है, शरीर साधना में सहायक है। वेदना को समभाव से सहने से कर्मों की निर्जरा होती है। कर्म निर्जरा का सहज मौका मिला है, उसे मैं खोना नहीं चाहती। आपकी वेदना में सहिष्णुता सबके लिए प्रेरक थी।

गैस क्या होती है –

हम बहुधा कहते है आज पेट में गैस हो गयी। बैचेनी हो रही है। जीदोरा हो रहा है। आप हमारी बात को सुनते हमें ''संति कुन्थू अरहो अरिट्ठणेमि जिणंद पासो य। समरंताणं णिच्चं सव्वं रोगं पणासेई''यह मंत्र सुनाती। यह अचूक मंत्र आपके सधा हुआ था। उक्त मंत्र के प्रभाव से हमारे पेट की तकलीफ ठीक हो जाती। इस मंत्र के जाप के लिए आप हमें प्रेरणा दिराती। यह मंत्र विघ्न बाधाहारी है। कालूगणिराज की इस मंत्र के प्रति अगाध श्रद्धा थी। मेरी भी असीम श्रद्धा है। तुम्हे भी इस सिद्ध मंत्र को सदा मन मस्तिष्क में बसाए रखना है। समय–समय पर काम में लेना है। आप मनोविनोद करते हुए कहती – तुम लोग गैस–गैस करती हो। गैस क्या होती है ?ये मैं तो जानती भी नहीं। हम लोग कहते– साध्वी जी आप पुण्यवान है। बड़ी–बडी बीमारियाँ भी आपके पास आने से कतराती है। तब पेट की गैस जैसी व्याधि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भला आपके पास क्यों आएगी ?आपका खानपान सीमित संयमित है। जीवन शैली सौम्य है।

चिकनाई क्यों लगाएँ ?

सर्दी के मौसम में त्वचा रूखी हो जाती है। पैरों की बिवाइयाँ फट जाती है। उसकी परिचर्या में हम कभी वैसलीन, बोरोलीन, ग्लिसरीन जैसी कोई चिकनाई लगाते। अल्पकालिक आराम का अनुभव करते। आप फरमाते – रोजाना चिकनाई लगाते हो फिर भी पैर फटे रहते हैं। मैं तो कभी चिकनाई नहीं लगाती। चिकनाई क्यों लगाएँ ?वो तो हमारे भीतर है। शरीर सारी व्यवस्थाएँ स्वयं करता है। ऊपर से चिकनी दवाएँ लगाने की जरूरत भी नहीं है। जब ऊपर से चिकनी दवा लगाना शुरू कर देते है तो शरीर की प्राकृतिक सम्पदा भी स्वतः काम करना बंद कर देती है। जब आपने संथारा ग्रहण कर लिया – तब आप फरमाती – कोई चिकने हाथ मेरे न लगाए। चिकने हाथों वाला मेरे हाथ लगाकर वंदना न करे। अब मैनें संथारा ले लिया है हम आपकी जागरूकता को देखकर हतप्रभ रह जाती। आपने शास्त्रों को केवल पढ़ा ही नहीं था बल्कि उसका हार्द हृदयंगम किया था। यही वजह है उन्होंने पूरा जीवन अनासक्त योग का जीया। अनशन में खासतौर से निर्लेप जीवन जीने की साधना की।

एक माह से वस्त्र प्रक्षालन –

साध्वी राजकुमारी जी ने अतीत के उस युग को काफी वर्षों तक जाना और जीया था जब वस्त्र प्रक्षालन की हमारे संघ में परम्परा नहीं था। जब तंतु प्रक्षालन की विधि शुरू हो गई, तब भी आपको वस्त्र ज्यादा धाना अच्छा नहीं लगता। मैं जब दीक्षा लेकर वि.स. 2040 में आयी तब से मैनें लम्बे समय तक देखा – हमारी शासन सम्मत प्रणाली से 10 दिनों से वस्त्र धो सकते हैं पर आप लगभग एक माह से वस्त्र प्रक्षालन करती। हम कई बार निवेदन करते – हमारी परम्परा के अनुसार आप वस्त्र धो सकती है। तब आप इतना लेट क्यों धोते हो ?आप मधुर वाणी से फरमाते –मैं कान सति झमकू सति के युग की हूँ। उस समय वस्त्र धोने का सिलसिला नहीं था। अतः मैं उसी साँचे में ढ़ली हुई हूँ। मेरे भीतर आज भी वो ही संस्कार है। मुझे वस्त्र प्रक्षालन अच्छा नहीं लगता है। सब कहते है – इसीलिए एक माह से धो लेती हूँ। थोड़े पानी में अल्प समय में अपने वस्त्रों को धोना एवं उन्हें स्वच्छ रखना आपके नैपुण्य का नजारा था। जो मैनें अपनी आँखों से लम्बे समय तक देखा है।

बुढ़ापे में बचपन की झलक –

कहा जाता है कि बुढ़ापे में बचपन आ जाता है। यह हमने सुना था, पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपके जीवन से साक्षात् अनुभव किया। आपके जीवन व्यवहार में बचपन जैसी सरलता, सहजता, निश्छलता प्रतिबिम्बित होने लगी। उन्होंने सन् 2007 से सन् 2014 तक अंतिमवय में अपने निजी उपकरणों की देखरेख छोड़ दी। सारा काम हमें सौंप दिया कि तुम जानो तुम्हारा काम जाने। उन्हे आहार में अरूचि हो गयी। हम उन्हें मुंह में कौर देकर जबरदस्ती खिलाते। उनका हर क्रियाकलाप हम लोगों पर आश्रित हो गया। आपका आहार, नीहार, विश्राम आदि गतिविधियां बाल सुलभता की कोटि में आने लगी। बचपन की सौम्य मुस्कुराहट, बचपन की सरल, सौहार्दपूर्ण वार्ताएं हमें उनके बुढ़ापे में बचपन जैसी झलक देती प्रतीत होती, पर वैसे वे साधना के क्षेत्र में सावधान थी। आचार–विचार में जागरूक थी, विधि–विधान संबंधित बात कहने में निर्भय थी। यादाश्त शक्ति आपकी अंत तक बेजोड़ रही।

न्यूज पेपर पढ़ने की शौकीन–

साध्वी राजकुमारी जी खास तौर से आगम वाड्मय संघीय साहित्य, पत्र–पत्रिकाएं पढ़ने की शौकीन थी। आत्मा के आस–पास रहने वाले साहित्य में आपका बेहद विश्वास था। न्यूज पेपर पढ़ने का भी आपको शौक था। बड़ी–बड़ी खबरों का कॉलम आप पढ़ते। देश–दुनिया में क्या हो रहा है हमें जानकारी देते रहते।

हम कई बार पूछते – आप अखबार क्यों पढ़ते है ?आपने कहा –अखबार से सारी न्यूज मिल जाती है। न्यूज पेपर पढ़ने से हम संसार भर की खबरों से वाकिफ हो जाते हैं। मैनें कहा – हम अपनी आत्मा में रहे। हमें संसार से क्या लेना देना। आपने बताया –सुबह–सुबह अखबार नहीं पढ़ना चाहिए क्योंकि उसमें नकारात्मक बातें ज्यादा होती है। अखबार में अच्छे कॉलम भी बहुत होते हैं जिसे पढ़ने से उत्तम विचार भी मिलते है। वैसे देश के बारे में खबर रखनी चाहिए। बाहर की इतनी खबर में न रहें जो हमें बेखबर बनाएं।

गुरू कृपा का वरदान – ''शासन श्री'' अलंकरण –

वि.स. 2069 आषाढी पूनम जसोल चातुर्मास के शुभारंभ में आचार्य श्री महाश्रमण जी ने आपको "शासन श्री" अलंकरण प्रदान कराते हुए अमूल्य वरदान बरसाया। पूज्यपाद गुरूदेव श्री महाश्रमण जी ने साध्वी राजकुमारी जी के जीवन का, संयम पर्याय का, कालूकृपा का मूल्यांकन कराते हुए फरमाया –

''पूज्य कालूगणि द्वारा दीक्षित साध्वी राजकंवर जी (गोगुन्दा) अभी उदासर में है। उन्हें मै ''शासन श्री'' साध्वी राजकंवर जी (गोगुन्दा) के रूप में स्वीकार कर रहा हूँ। ऐसा करके एक तरह से मैं कालूगणि को श्रद्धा अर्पण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कर रहा हूँ। वह श्रद्धा कालूगणि तक पहुँच जाए, ऐसी मेरी भावना है।'' यह संवाद रतनलाल जी चौपड़ा द्वारा हमें मिला। गुरू का आर्शीवाद पाकर हमने धन्यता का अनुभव किया–

''शासन श्री'' गौरव से सर्वत्र खुशनुमा मौसम था। उस समय साध्वी पानकुमारी जी ने गुरू चरणों में श्रद्धा भक्ति का इजहार करते हुए निवेदन करवाया –''शांतिदूत पूज्य गुरूदेव! आप महान है। वात्सल्य के महासागर है। आपने आमेट के 148 वें मर्यादा महोत्सव पर मुझे ''शासन श्री'' अलंकरण प्रदान कराया। आषाढी पूनम वि.स. 2069 तेरापंथ स्थापना दिवस पर प्रवचन सभा में साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) को ''शासन श्री'' गौरव दिराया। भंते! यह सम्मान हमारा नहीं, शासन का सम्मान है। गुरूकृपा का सम्मान है। शांतिदूत महातपस्वी की कृपा का अमृत बरसता रहे। हम सभी साध्वियाँ आपकी कृपा के लिए नतमस्तक एवं हर्ष विभोर है।

उदासर, आषाढ़ी पूनम
वि.स. 2069

प्रणत
साध्वी पान (प्रथम)
श्रीडूंगरगढ़

''शासन श्री'' अग्रगण्य तुल्य है –

मेरी हार्दिक इच्छा थी आपको अग्रगण्य पद पर प्रतिष्ठापित किया जाए क्योंकि उनमें अग्रगामी की बहुत सारी योग्यताएं थी।

मैनें आचार्य महाश्रमण जी से उदासर में निवेदन किया – पूज्यपाद गुरूदेव! आप कृपा कराएं। साध्वी राजकुमारी जी को अग्रगण्य पद बगसाए। गुरूदेव ने स्मित मुस्कान बिखेरते हुए कहा – ये शासन श्री साध्वी है। शासन श्री को अग्रगण्य तुल्य माना गया हे। अतः शासन श्री साध्वी राजकुमारी अग्रगण्य तुल्य ही है। साध्वी राजकुमारी जी ने फरमाया – अग्रगण्य पद में क्या धरा है ?भाई जी महाराज चम्पालाल जी स्वामी फरमाते – पद सारे रद्द है। हमें पद के पीछे नहीं दौड़ना चाहिए। यहीं आचार्य श्री भिक्षु ने फरमाया – पद के योग्य बने– उम्मीदवार नहीं। साधु का पद बड़ा होता है। साधु का पद हमें जिनशासन भैक्षवशासन में गुरूकृपा से मिला है तो दूसरे पदों की महत्वाकांक्षा मन मे ही नहीं आनी चाहिए। मैं संघ कल्पतरू की छाँह में साधुपद की सन्तता में रहती हूँ। जो आलोक और उपलब्धि मुझे मुनि पद में मिली है वह अकथ्य है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जागृत संयम की प्रतिनिधि –

कुछ व्यक्ति सिंह की तरफ साधुत्व ग्रहण करते है, सियाार की तरह पालन करते हैं। कुछ व्यक्ति सियार वृत्ति ज्यों संयमी जीवन अंगीकार करते है सिंह वृत्ति से पालन करते हैं कुछ व्यक्ति सियार सम साधना पथ पर आते हैं। सियार सदृश ही पालन करते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो सिंह वृत्ति से साधु बनते है सिंह वृत्ति से पालन करते है।

साध्वी राजकुमारी जी ने सिंह वृत्ति ज्यों उच्च परिणामों से संयम कालू कृपा से पाया और सिंह वृत्ति सम आजन्म जागृत संयम पर्याय का प्रतिनिधित्व किया। आपका 86 वर्षीय संन्यास जैन शासन मे, तेरापंथ शासन मे रिकॉर्ड संन्यास काल रहा है। 2 फरवरी 2014 तक जिनशासन भिक्षुगण में आपने संयम राजपथ में जो उड़ान भरी वह दुर्लभ दस्तावेज है। यह गौरवशाली पृष्ठ स्वर्णक्षरों में आपने रचा जो इतिहास की तेरापंथ शासन की अमूल्य निधि है।

''धर्म धुरन्धार प्रभु की शासना में आपका हर दिन रहा आनंदमय
अध्यात्म आदित्य की अर्चना में आपकी हर घड़ी हर पल था मंगलमय
श्रद्धापूरित नमन के साथ आपकी हर भोर थी पावन प्रेरणामय
संघ सरताज की अभ्यर्थना में आपकी हर शाम थी उपलब्धिमय।''
भिक्षु गण को है आपके पावन पवित्र जीवन पर नाज
गुरू दृष्टि सुख सृष्टि से पाया आपने अभिनव राज ।।

दो–दो शासन श्री – महामहिम का प्रसाद

गुरू की कृपा बरसती है, भाग्य प्रबल होता है। तब छप्पर फाड़कर खुशियां मिलती है। महामहिम आचार्य श्री महाश्रमण ने अनुकम्पा अनुग्रह से 148 वें मर्यादा महोत्सव आमेट में साध्वी पानकुमारी जी को शासन श्री अलकंरण प्रदान कराया। फिर जसोल पावस प्रारम्भ के पहले दिन साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) को शासन श्री गौरव वरदान स्वरूप दिया।

सुखद आश्चर्य का विषय था एक ग्रुप में दो–दो शासन श्री जी का महाप्रसाद हमें मिला। महामना आचार्य प्रवर के प्रताप व प्रभाव से किसी ग्रुप में दो शासन श्री उस समय एक साथ है क्या ?खोज का प्रसंग था।

हम गौरव के साथ गर्व की अनुभूति करते। हमें दो–दो शासन श्री जी की सेवा सन्निधि का स्वर्णिम अवसर मिला है। हम प्रसन्नता मे नव आगन्तुकों को बताते – हमारे यहां करूणा सागर की कृपा से दो–दो शासन श्री है। बाहर से आने वाले आगन्तुक श्रद्धालु दो–दो शासन श्री जी के एक साथ दर्शन पाकर धन्य कृत्यपुण्य हो जाते। किसी भाग्यशाली को भगवन की भावना का फल मिलता है। उन भाग्यशालियों की पंक्ति मे हम तीन साध्वियाँ थी जिन्हें

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गणमहानायक–दया करूणा मृदृता के मंदार से अद्भूत दो–दो शासन श्री जी श्री सुरम्य सन्निधि मिली।

तेरापंथ में एक नम्बर रत्नाधिक –

साध्वी राजकुमारी जी तेरापंथ शासन में रत्नाधिक परम्परा में 1 नम्बर तक काफी अर्से तक रही। यह गौरव आपको जन्म जन्मान्तर की प्रबल पुण्याई से मिला। यह भी आपके अनुत्तर चारित्र का एक अनूठा कीर्तिमान था। आप कभी कभार सर्दी–गर्मी, लू की वजह से अस्वस्थ हो जाती। मैं विनोद करते हुए कहती आपको एक नम्बर हुए बिना देवलोक नहीं जाना है, यह प्रतिज्ञा करो। आप मृदु मुस्कान के साथ फरमाती – जीना मरना किसी के हाथ की बात नहीं है जो भाग्य में लिखा है वह कोई नहीं टाल सकता है।

कभी–कभी सहज मन से कई बात सत्य हो जाती है यही हुआ साध्वी राजकुमारी जी के साथ। जिस दिन आप तेरापंथ शासन में संयम पर्याय की दृष्टि से एक नम्बर की पंक्ति मे आये। आपने कहा – देखो तुम्हारी भावना सफल हो गई। आज अब मैं एक नम्बर पर आ गई हूँ। तुमने जो चाहा, वो साकार हो गया।

महाश्रमण जी ने फरमाया –''भिक्षु शासन में 86 वर्ष का संयम पर्याय साध्वी राजकुमारी जी के सिवाय (वर्तमान) अब तक किसी का नहीं रहा है।

आपको शतक बनाना है –

कन्हैयालाल जी चोरड़िया (एडवोकेट) उदयपुर अपने 94 वर्षीय बुआजी महाराज को अक्सर निवेदन करते – साध्वी श्री आपने कई कीर्तिमान गढ़े है। एक कीर्तिमान और रचना है वह है शतक बनाने का। भिक्षु शासन में 100 वर्ष की उम्र में कोई नहीं हुआ है। आप 94 वर्ष में आ गये हैं। अब आपको शतक बनाना है। जब संथारा ग्रहण करने की आपकी भावना हुई, तब कन्हैयालाल जी का भारी आग्रह रहा – आप पारणा करें। आप शतक बनाएं। आप भिक्षुशासन का गौरव बढाएं। साध्वी राजकुमारी जी ने फरमाया –अब समय आ गया है। अब शतक यहाँ नहीं, वहाँ बनेगा। हम सबके शतक बनाने के आग्रह को आपने अस्वीकार कर दिया।

कालूगणि की शिष्या को देख आनन्दमग्न –

जे.टी.एन. के संयोजन महावीर सेमलानी उदासर में दर्शन करने आए। दर्शन सेवा के पश्चात् आपने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा – आज मैनें कालूगणि द्वारा दीक्षित साध्वी श्री के दर्शन किये हैं। तेरापंथ में संयम पर्याय में वरिष्ठ साध्वी श्री के दर्शन किये है। मैं इतना आनन्द मग्न हूँ जिसका बयान नहीं कर सकता। कालूगणि की शिष्या साध्वी श्री जी के दर्शन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करना मेरे जीवन का दुर्लभ क्षण है। आज मैं एक ऐतिहासिक अलौकिक शक्ति की सन्निधि में हर्ष की अनुभूति कर रहा हूँ।

ऐसे ही सैकड़ों दर्शनार्थी कालूगणि के युग की अद्भूत कृति के दर्शन करने आते तब धन्यता के साथ खुशी का इजहार करते हुए अपने भाग्योदय की सराहना करते।

हमारा भाग्य तेज था जो हमें गुरूदेव की कृपा से कालूगणि द्वारा दीक्षित संयम पर्यव, वरिष्ठ शासन श्री जी की सत्यनिष्ठ, साधनानिष्ठ, आगम निष्ठ, मर्यादा निष्ठ, मंगलमय पंचामृत सन्निधि मिली। आपकी उपासना से हमने गण बगियां मे पंचाचार का रसायन पीया। कालूयुग की दीक्षित साध्वी तुलसी गणि, महाप्रज्ञ गणि एवं महाश्रमण गणिवर के शासन में अनमोल आचार निधि बनते हुए एक यह भी कीर्तिमान बना गए।

साधन द्धारा यात्रा का आदेश –

संघीय उपयोगिता की दृष्टि से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने आपको साधन द्वारा यात्रा की स्वीकृति फरमायी। लगभग 75–80 वर्ष तक आप स्वस्थ, सक्षम रहते हुए पदयात्राएं करती रही। फिर वृद्धावस्था की वजह से आपको साधन का आदेश प्राप्त हुआ आपने कई वर्षों तक पूर्ण रूप से साधन का प्रयोग नहीं किया। 4–5 किलोमीटर पैदल चलने के बाद साधन में विराजती। साधन से यात्रा का आदेश प्राप्त करना आपके सौभाग्य की श्रेष्ठता का परिचायक था।

पांच चाकरी का अहोभाग्य –

सेवा केन्द्रों में अक्षम ग्लान आदि की तीन चाकरी करना आवश्यक है। सर्व साधु साध्वियों के लिए करणीय है। अगर कोई चाकरी किये बिना देवलोक हो जाता है तो उसके सिर पर चाकरी का ऋण रह जाता है। साध्वी राजकुमारी जी को सेवा केन्द्रों में पांच चाकरी करने का अहोभाग्य प्राप्त हुआ। आपने एक चाकरी साध्वी टमकू जी के साथ, एक चाकरी केशर जी के साथ और तीन चाकरी साध्वी पानकुमारी जी प्रथम के साथ की। पांच चाकरी का सुयोग मिलना एक सुखद गुरूकृपा का अहसास कहा जा सकता है। इस प्रकार पांच चाकरी के माध्यम से आपने कई वृद्ध ग्लान साध्वियों को साता पहुँचायी।

चार पाटों की सेवा का अवसर –

कुछ व्यक्ति इतने दुर्लभ होते हैं जिन्हें प्रलम्ब जीवन में अपूर्व सेवा का अवसर प्राप्त होता है। साध्वी राजकुमारी जी इस मायने में किस्मतवाली थी। आपने चार आचार्यों का शासनकाल देखा। अष्टमाचार्य कालूगणि के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करकमलो से दीक्षा स्वीकार की। कालूगणि की अनपार स्नेहिल शुभाशीष आपको मिली। नवम अनुशास्ता युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी का समग्र शानदार शासनकाल देखा। दशम अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ की यशस्वी शासना एवं अविरल कृपा दृष्टि आपने प्राप्त की। एकादशवें अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी की दिव्य दृष्टि का आपको वरदान मिला ''शासन श्री'' के रूप में। इस दृष्टि से आपने कालू युग को देखा। तुलसीयुग को देखा। महाप्रज्ञ युग को देखा। महाश्रमण युग के रूप में धर्मशासन की चौथी पीढ़ी के युग को देखा।

चार आचार्यों के शासनकाल की गौरवमयी वार्ताएं बताते आप गद्‌गद् हो जाती और पुरानी नयी परम्परा की जानकारी हमें प्रदान करती।

चार साध्वी प्रमुखाओं की पावन समाधि –

आपके सौभाग्य की जितनी सराहना करे उतनी कम है। साध्वी प्रमुखा कानसति जी की कृपा दृष्टि, साध्वी प्रमुखा झमकू सति की वत्सलता, साध्वी प्रमुखा लाडसति की सहिष्णुता, सौम्यता एवं साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी की कार्य कुशलता को देख आप नतमस्तक थी। महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी ने आपको बेहद सम्मान प्रदान किया। समय–समय पर आपको कृपा पूर्ण संदेश बगसाए। संघ निदेशिका महाश्रमणी जी की साक्षात सन्निधि पाकर आपका रोम–रोम रोमांचित हो जाता।

सात आचार्यो के साधु साध्वियों को देखा –

साध्वी राजकुमारी जी ने मधवा युग के साधु साध्वियों को देखा। जिसकी नजीर है आचार्य कालूगणि, मंत्री मुनि मगनलाल जी स्वामी आदि। आपने माणकगणि युग के साधु साध्वियों को देखा। डालगणि के साधु साध्वियों में एक दीपता नाम है क्षमा की प्रतिमूर्ति साध्वी खूमांजी का। आपने डालिम युग के अनेकशः साधु साध्वियों को देखा। तुलसी युग के महाप्रज्ञ युग के एवं महाश्रमण युग के साधु साध्वियों को आप देखकर प्रमोद भावना के प्रवाह मे प्रवाहित हो जाती।

तुलसी जन्म शताब्दी पर आचार्य श्री महाश्रमण द्वारा मुनि दीक्षा के शतक की उद्‌घोषणा से आपको अत्यन्त आह्‌लाद हुआ। आपने बीदासर के महाचरण समारोह मे आचार्य प्रवर को वृहद् दीक्षा समारोह में एक बधाई पत्र भिजवाया। जिसमे आचार्य प्रवर के मुनि दीक्षा के शतक अभियान की सवा सौ फीसदी सफल होने की कामना की।

चार महामाताओं को देखा –

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी के अनवरत सौभाग्य श्रृंखला की खास

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बात है चार महामाताओं का दर्शन सेवा का लाभ होना। मातुश्री छोगां जी के सान्निध्य में आपको साधनामय जीवन के कीमती क्षण सहेजने का कई बार सुअवसर मिला।

आपने मातु श्री वदनाजी की ऋजुता मृदुता ओर भद्रता को देखा। मातुश्री बालूजी को मातुश्री के रूप में तो नहीं देखा, पर साध्वी बालू जी के रूप में आपने देखा है। आचार्य श्री महाश्रमण जी की मातुश्री नेमा देवी को श्राविकारत्न के रूप में आपने देखा।

क्या मुझे संथारा आएगा –

साध्वी राजकुमारी जी के पास कोई ज्योतिषी आता। तब आपका एक ही प्रश्न होता क्या मुझे संथारा आएगा ?मेरा हाथ देखकर बताओ। जितेन्द्र जी नाहटा कालू एक अच्छे ज्योतिष के ज्ञाता है। उन्होंने आपकी कुण्डली के आधार पर बताया – शासन श्री जी को संथारा आएगा।

लूणकरनसर के एक प्रसिद्ध युवा ज्योतिषी ललित पंवार ने आपकी कुण्ड़ली का फलादेश बताते हुए कहा –महाराज आपको संथार आएगा, आपकी भावना अवश्यक फलवान होगी। आपको अच्छा संथारा यशस्वी मंथारा आएगा।

कैलाश जी छाजेर ने, महावीर जी सुखानी ने, अमीचन्द जी दूगड़ ने और भी कई व्यक्तियों ने बताया आपकी भावना प्रबल है तब आपको संथारा जरूर आएगा। आपका संथारा विलक्षण होगा। क्या विलक्षण होगा यह कोई नहीं जानता था। आचार्य प्रवर ने उदासर पधारकर शासन श्री जी को संथारा कराया और संथारे को विलक्षण विशिष्ट बनाते हुए भविष्यवाणियों को सही साबित कर दिया।

अस्थमा का अटैक 8 जनवरी को –

शासन जी की दिनचर्या के अभिन्न अंग थे –स्वाध्याय, ध्यान, जप और मौन। अर्हम् की अनवरत आनन्द यात्रा में 8 जनवरी को रात्रिकाल मे लगभग 12.00 बजे अस्थमा का अटैक आया। सांस का उठाव ज्यादा हो गया, बैचेनी, घबराहट बेसुमार थी। शयन में आपको दिक्कत थी। हम सब आपको नवकार मंत्र, ऊँ भिक्षु, विध्न हरण मंगल करण, संतिकुन्थू अरहो मंत्र सुना रहे थे, पर आपको पल भर के लिए भी चेन नहीं था।

9 जनवरी को प्रातः जीवराज जी महनोत डॉ. रामदेव जी को लेकर आये। उनका उपचार प्रारंभ किया। बीकानेर से डॉ. माणक गुजरानी 10 जनवरी को आये। उन्होंने विनोद करते हुए कहा हमारे शासनश्री जी अस्वस्थ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कैसे हो गये ? ये कालूगणिराज द्वारा दीक्षित है। आप हमारे संघ की अनमोल निधि है। डॉ. गुजरानी ने आरोग्य की कामना के साथ ईलाज प्रारंभ किया। थ्री टाइम डोज आपको लगी। चौथी बार आपने इन्जेक्शन आदि लेने से मना कर दिया।

13 जनवरी को संथारे की भावना –

13 जनवरी को शासन श्री मुनि विमल कुमार जी, मुनि श्री सुरेश कुमार जी स्वामी अपने सहयोगी संतों के साथ शासन श्री जी को दर्शन देने, शासन श्री जी से आशीर्वाद लेने उदासर पधारे।

शासन श्री पानकुमारी जी आदि की सुखपृच्छा गुरूदेव के संवाद आदि बताते हुए संघ में सर्वाधिक संयम पर्याय साध्वी जी से मिलकर प्रसन्नता व्यक्त की। मुनि श्री धन्य कुमार जी मेरे संसारपक्षीय भतीजे महाराज है। उन्होंने अपने बुआसा महाराज की सेवा उपासना का लाभ लिया। इसी बीच नवोन्मेष अंगड़ाई लेने लगा। आपकी संथारे की भावना हो गई। मुनि श्री पुनः शाम को सेवा कराने पधारे। विमल मुनि ने पूछा –आप संथारा क्यों कर रहे हो ? तब आपने कहा कि मेरी अन्तः प्रेरणा है। विमल मुनि ने पूछा –संथारे में क्या लेगे ? तब आपने कहा समता का रसायन। मुनि श्री सुरेश कुमार जी ने पूछा– आप संथारा क्यों ले रहे है ? शासन श्री अब मेरी अन्न में, दवा में रूचि नहीं है। आत्म कल्याण के लिये संथारा लेना है। मुनि श्री क्या सेवा में कमी है?

शासन श्री –सेवा मेरी बहुत हो रही है। सेवा में कोई कमी नहीं है। अन्तः प्रेरणा संथारे की है। मुनि धन्य कुमार जी मेरे बुआसा महाराज को भी सेवा का अवसर प्रदान करे।

शासन श्री – परमयशाजी मेरे सामने छोटी से बड़ी हुई है। इन्होंने मेरी बहुत सेवा की है। धन्य मुनि – शासन श्री आप शतक बनाओ, हमारी इच्छा है। संबोध मुनि – आपको शतक बनाना है, फिर संथारा करना। शासन श्री –अब समय आ गया है संथारे का।

गुरू चरणों में हर दिन नई दृष्टि, नई सृष्टि का अभ्युदय होता है। शासन श्री जी के जीवन दर्शन को नई दृष्टि, नई सृष्टि का समीकरण देने वाला हुआ 13 जनवरी का दिन। उस दिन भिक्षु स्वामी की मासिक पुण्यतिथि पौष शुक्ला त्रयोदशी थी। साध्वी पानकुमारी जी का उपवास था।

मैं हर सुबह सूर्योदय के बाद हर रोज की तरह चाय लेकर आयी। शासन श्री जी को चाय विनम्र यशा जी पिलाने लगे। आपने कहा –मेरी रूचि नही

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

है। हमने आग्रह किया तब आपने कहा –मेरे 10 बजे तक त्याग है। फिर हम 10 बजे दूध लेकर आये। दो–चार घूंट मुश्किल से उन्हें पिलाया फिर उन्होंने 12 बजे तक त्याग कर दिया।

दूसरे प्रहर की गोचरी आयी। मैनें छोटे प्याले में राबड़ी दूध मिलाकर दिया। आपने इन्कार कर दिया। मैने सूप के लिये निवेदन किया। आपने उसे भी अस्वीकार कर दिया। तब हमने पूछा – आज आप क्या कर रहे है ?जो कोई भी चीज खाना नहीं चाह रहे है।

साध्वी श्री जी ने फरमाया – मैं संथारा करूंगी, अब मुझे कुछ नहीं खाना है। मैनें नम नयनों से कहा – आप ऐसा क्यों फरमा रहे है ?क्या आपकी सेवा में कोई कमी हैं। तब आपने कहा – मेरी सेवा जितनी हो रही है उतनी सेवा भिक्षु शासन में सभी की हो। तुम सब मेरी इतनी सेवा कर रही हो। उसे मैं कैसे उऋण होऊंगी। गुरूदेव के प्रताप से मेरी बहुत सेवा हो रही है पर मेरा अब आहार करने का भाव नही है। आहार में रूचि नही है। आहार नीरस लगता है। मुझे संथारा करना है। तुम मेरी भावना गुरूदेव को निवेदन करो। कुछ देर पूर्व आपके गले से बोला नहीं जा रहा था। अब आपके भीतर के स्त्रोत खुल गये। आपने उस वक्त जो लिखवाया वो वचन इस प्रकार है–

13 जनवरी प्रातः 12.55 पर आपने फरमाया –''गुरूदेव आप मनैं दर्शन दिरावो। संथारो करावो। आप इत्ता नेड़ा पधार गया मनैं दर्शन जरूर दिराओ। म्हारै मन में कोई चाह शेष कोनी। सिर्फ आपरै दर्शन करने की इच्छा है। साध्वी प्रमुखा श्री के दर्शन की इच्छा है। मंत्री मुनि के दर्शन की इच्छा है। आप कृपा करो। मनैं संथारो करावो। म्हारा कारज सारो। म्हारी आहार की दवाई की रूचि कोनी। आप एक संदेश में फरमायो –मैं दर्शन देवण आवां।

साध्वी पानकुमारी आदि जी के लिये आपने कहा – साध्वी पानकुमारी जी प्रथम मनैं घणो साझ दिरायो। घणी चित्त समाधि उपजायी। ओ शासन नन्दनवन है। ई शासन में गुरवां रै प्रताप स्यूँ म्हारी घणी सेवा हुयी। तीनूं सत्यां म्हारी घणी सेवा करी है। मनैं पल पल चित्त समाधि उपजायी है। छोटे टाबर ज्यों म्हारी सेवा करी है। थे आछी तरह स्यूँ रहिज्यो। चोखी साधना करीज्यो। शासन री प्रभावना करीज्यो। बड़ा माराज (पानकुमारी जी) रो घणो घणो ध्यान राखीज्यो। म्है थानै किया भूल सकूं। थे म्हारी घणी सेवा करी हो।

गुरूदेव ने म्हारो आशीर्वाद भेज दीज्यो। गुरूदेव ने वंदना मालूम करीज्यो। दर्शन दिरा देवै तो भावना फल ज्यावै। मनै विश्वास है गुरूदेव दर्शन देवण नै जरूर पधारसी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवराज जी महनोत म्हारी घणी सेवा करी है। समय समय पर काम आया है। याद करता ही आ ज्यावै। चिकित्सा रो पूरो ध्यान राखै।

गुरूदेव पांच संतां ने भिजाया है घणी कृपा करायी है। साध्वी श्री ने गीत की पंक्तियों का संगान किया –

म्हारै अन्तरमन री भावना संथारो प्यारो लागै
संथारो प्यारो लागै, आहार खारो लागै।
गुरू इषारो प्यारो लागै, भिक्षुगण प्यारो लागै॥

गुरू चरणों मे सविनय निवेदन – एक दिन में तीन संदेश

भंते! शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) 12.55 से आज संथारे की मांग कर रही है। चेतना पूर्ण जागृत है। गुरूदर्शन की उनकी हार्दिक इच्छा है। वे एक ही बात दोहरा रही है गुरूदेव मुझे दर्शन दिराए संथारा कराए मेरा कारज सारे। कल सुबह तक उन्होंने तिविहार त्याग कर दिया है। गुरूदेव कृपा करांए। दर्शन दिरांए।

दिंनाक–13.01.2014 शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी (प्रथम)
उदासर श्री डूंगरगढ़

उपरोक्त निवेदन के बाद पूज्यप्रवर का संदेश प्राप्त हुआ जो इस प्रकार है।

अर्हम्

साध्वी श्री राजकुमारी जी (गोगुन्दा) को आराधना आदि ग्रन्थ यथासंभव सुनाया जाए। साध्वी पानकुमारी जी आदि साध्वियाँ उन्हें खूब चित समाधि पहुँचाने का प्रयास करती रहे।

दिनांक –13.01.2014 आचार्य महाश्रमण
नाल

साध्वी राजकुमारी जी ने गुरूदेव के संदेश पत्र को अपना छत्र मानकर मस्तक पर लगाया। हाथ जोड़कर असीम उपकार के लिए धन्यता की अनुभूति करने लगी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उन्होंने गुरूदेव को फिर निवेदन करने के लिए कहा। तब हमने उनके अनशन ग्रहण की भावना गुरू उपपात मे प्रेषित की। तब पूज्यपाद का 13 जनवरी को दूसरा संदेश मिला जो साध्वी श्री के आह्लाद को शतगुणित करने वाला था। वह संदेश इस प्रकार है –

अर्हम्

दिनांक 13.01.2014

साध्वी पानकुमारी जी (प्रथम) के लिए –

साध्वी राजकुमारी जी को पहले उपवास, बेला, तेला आदि करवाया जा सकता है और उचित लगे तो तिविहार संथारा पचखाया जा सकता है।

आचार्य महाश्रमण
नाल

आचार्य प्रवर 13 जनवरी को नाल विराजमान थे। आगामी कार्यक्रम तय थे। फिर भी पूज्यप्रवर ने शासन श्री की तीव्र भावना का समादर करते हुए ऐतिहासिक फैसला लिया। जो साध्वी श्री के जीवन वृत्त का नव उपहार बन गया। 13 जनवरी को पूज्य श्री का तीसरा संदेश हमें मिला जो इस प्रकार है –

अर्हम्

दिनांक 13.01.2014

मेरा 16 जनवरी को उदासर जाने का भाव है।

आचार्य महाश्रमण
नाल
सायं 8.30 बजे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य श्री महाश्रमण जी के दर्शन पाकर शासन श्री पानकुमारीजी (प्रथम) साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) डॉ. साध्वी परमयशा जी, साध्वी विनम्रयशाजी एवं साध्वी मुक्ताप्रभाजी।

इस संदेश की ऐतिहासिक उद्घोषणा से द्वय साध्वी श्री जी का, हम सब का एवं उदासरवासियों का रोम–रोम उत्फुल्ल हो गया। अपार खुशी से गण भक्त श्रावक, श्राविकाओं के पैर धरती पर नहीं टिक पा रहे थे।

14 जनवरी को श्रावक समुदाय ने गुरूदर्शन किए। गुरू उपनिषद् में प्रसन्नता की अनुभूति को व्यक्त किया एवं 16 जनवरी की योजना का प्रारूप चाहा। पूज्य श्री ने अभिनव अंदाज देते हुए फरमाया –

16 जनवरी को दिन रात उदासर रहने का भाव है। लगभग शताधिक साधु साध्वी एवं समणी जी के आगमन का संकेत मिला। साध्वी श्री जी के निवेदन पर साध्वी प्रमुखा श्री जी एवं मुख्य नियोजिका जी के शुभागमन का भी तय हो गया।

उदासर में अभूतपूर्व तैयारियां स्वागत की –

16 जनवरी को परमप्रतापी पूज्यपाद आचार्य प्रवर के पावन पादार्पण की अभूतपूर्व तैयारियों के लिए श्रावक समाज कटिबद्ध हो गया। गांव, गली, चौराहे, तिराहे सर्वत्र श्रावकों का उत्साह परिलक्षित हो रहा था। जैसा पहले कभी नहीं हुआ वैसा अद्भूत नजारे का रोमांच हर मन को आह्लादित कर रहा था। साध्वी श्री जी की गुरूनिष्ठा की महक सर्वत्र फैल रही थी।

साध्वीश्रीजी की दो लाईनों की भावभीनी अर्ज पर गुरू की महरबानी से सब विस्मित पुलकित थे। कन्या मंडल, महिला मंडल, किशोर मंडल, युवक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परिषद ज्ञानशाला सभी तेरापंथ सभा उदासर के नेतृत्व में एकजुट होकर धर्म–धुरन्धर के स्वागत की तैयारियां कर रहे थे।

पौष शुक्ला पूर्णिमा को पूज्य प्रवर उदासर में –

सधे कदमों से चरैवेति–चरैवेति चलता पूज्यवाद का काफिला उदासर की ओर अग्रसर हो रहा था। साध्वी श्री जी को दर्शन देने की तीव्र भावना गुरूदेव के अन्तस्तल में थी।

लगभग 9 बजे मुख्य नियोजिका जी संघ सेनानी के शुभ गमन की प्रथम संदेश वाहिका के रूप में पधारी। साध्वी श्री जी के दर्शन करके धन्य–धन्य हो गयी।

प्रातः 9.30 बजे अपने ज्योतिवलय से जन–जन को ज्योतित करने वाली अध्यात्म दीपशिखा अपनी धवल वाहिनी के साथ महाश्रमणी साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी तेरापंथ भवन उदासर में पधारी। वंदनीय महाश्रमणी जी ने संयम पर्याय वरिष्ठ साध्वी राजकुमारी जी को दर्शन दिये। द्वय साध्वी श्री को वंदन किया। पौष शुक्ला पूर्णिमा का अमृत बरसने लगा उस कक्ष में, जहां साध्वी राजकुमारी जी कुर्सी पर जगमग ज्योति ज्यों विराज रही थी। आपका रोम–रोम मुखर हो रहा था संघ भक्ति के अद्भूत सैलाब को देखकर हजारों नयनों ने कैद किया उस नजारे को। सैकड़ों ने अपने कैमरों में उन प्रभुता भरे क्षणों को रीलबद्ध किया।

पूज्यपाद की अगवानी में पलक पावड़े बिछा दिये साध्वी श्री जी ने

गुरूदर्शन की चिर प्रतीक्षा को तब विराम मिला जब 16 जनवरी 2014 को प्रातः 11:00 बजे शान्तिदूत महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी तपस्विनी साध्वी राजकुमारी जी को तारने, दर्शन दिराने, संथारे का प्रत्याख्यान कराने सीधे तेरापंथ भवन उदासर में पधारे। साध्वी पानकुमारी जी, साध्वी राजकुमारी जी अपने आराध्य की अर्चना अगवानी में पलक पावड़े बिछाए श्रद्धानत थी। जिनशासन के सरताज ने साध्वी श्री से सुखपृच्छा की। करूणा के महासागर ने अमृत रस का चशक पिलाते हुए कहा–बोलो क्या चाहती हो ?

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी ने करबद्ध निवेदन किया –भंते !मेरी गुरू दर्शन की चिर अभिलाशा आपने साकार की। अब मेरी दूसरी अभिलाशा है – संथारा ग्रहण करने की। आप मेरी अनशन ग्रहण की चाह को राह प्रदान कराएं।

आपकी हार्दिक भावना का मूल्यांकन कराते हुए पूज्यवर ने उद्बोधन में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

फरमाया – शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी की संथारा स्वीकार करने की उदग्र भावना है। आज हम इनकी भावना को पूरा करने आए है।

महासृजन के देव ने बनाया महाअध्याय –

अद्भूत अपूर्व विलक्षण दुर्लभ क्षण था, वह जब परम पावन धर्म धुरन्धर गुरूदेव ने 11:41 बजे प्रातः शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी को देव गुरू धर्म की साक्षी से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान कराया। हजारों नयनों ने इस नयनाभिराम दृश्य को अपने नयनों से निहारा। तेरापंथ भवन श्रद्धालुओं से खचाखच भरा था।

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी साध्वी राजकुमारीजी को संथारा का प्रत्याख्यान कराते हुए।

आचार्य महाश्रमण जी, महाश्रमणीजी, साध्वी राजकुमारीजी, साध्वी पानकुमारीजी संथारे के नयनाभिंराम अवसर पर प्रसन्न मुद्रा में।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उदासर भवन का विशाल परिसर छोटा पड़ गया। महाश्रमणी जी, मुख्य नियोजिका, मुनिवृंद, साध्वीवृंद, समणीवृंद के मध्य विराजित शासन देव ऐसे सुशोभित हो रहे थे मानो स्वर्गधरा पर उतर आया हो। शासन नन्दनवन की अलौकिक छटा निखर रही थी।

टी.एम.सी., जे.टी.एन., नेट, मीडिया ने इस महनीयता को जन–जन तक विश्वव्यापी बनाया। उदासरवासियों की किस्मत का सितारा बुलन्दियों पे था। साध्वी पानकुमारी जी हर्ष में सरोबार थे। साध्वी राजकुमारी जी के हर्ष का पारावार अमाप्य था। महाश्रमण के जय जयकारों से धरा गगन अनुगूंजित निनादित था।

कीर्तिमान व्यक्तित्व आचार्य श्री महाश्रमण –

आचार्य श्री महाश्रमण का जीवन कीर्तिमानों की वर्णमाला है। ऐसा इतिहास में आचार्य श्री महाश्रमण के नेतृत्व में पहली बार हुआ। साध्वी राजकुमारी जी इस अभूतपूर्व कृपा से निहाल हो गयी । हम सबके सौभाग्य में चार चांद लग गए।

साध्वी श्री करबद्ध मुद्रा में आचार्य श्री कालूयुग के अतीत के पृष्ठ खोल रहे थे। परम पूज्य अतीत के दिलचस्प प्रसंग शासन श्री से सुनकर प्रसन्न नजर आ रहे थे। भवन गूंज उठा, कन्याओं, महिलाओं साध्वीवृंद और समणीवृंद के बधाई गीत के सुरों से –

''संथारो शासन श्री रो प्यारो प्यारो लागै रे।
प्यारो लागै रे तारणहारो लागै रे।।''

जिनशासन के महायशस्वी सरताज लगभग 11 बजे से 11.45 बजे तक तेरापंथ भवन में विराजमान रहे। 45 मिनट तक साध्वी श्री जी को अध्यात्म का ओजस्वी प्रकाश दिया। महाप्रभु ने साध्वी श्री के साथ एक नया इतिहास रच दिया। कीर्तिमान व्यक्तित्व शासन देव के ऐतिहासिक क्षण सदा याद आएंगे। दोपहर को पूज्य निर्देशानुसार मुनि श्री दिनेश कुमार जी ने साध्वी श्री को स्वाध्याय कराया। महाश्रमणी जी, मुख्य नियोजिका जी, समणी नियोजिका, ऋजु प्रज्ञा जी, पूर्व नियोजिका मधुर प्रज्ञा जी, कुलपति चारित्र प्रज्ञा जी आदि सैकड़ों समणियों साध्वियों ने गीतो की गूंजन से शासन श्री के संथारे का अनुमोदन किया। 17 जनवरी प्रातः विहार से पूर्व परम श्रद्धास्पद गुरूवर ने साध्वी श्री को 15 मिनट तक अध्यात्म का अनुपान बगसाया। जिसे देख हम गद्‌गद् थे।

शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी प्रथम ने अभिवंदना में कहा – आज

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हमारे प्रांगण में स्वर्णिम सूरज उगा है। अध्यात्म कल्पतरू आचार्य प्रवर की महनीय करूणा वत्सलता हमारी अमूल्य धरोहर बन गयी है। गुरूदेव अत्यन्त कृपा करके हम दोनों को दर्शन देने पधारे है। हम महामहिम के असीम उपकार को किन शब्दों में किन छंदों में अभिव्यक्त करे। मेरे पास ऐसा कोई शब्द नहीं है जिससे मैं महागुरू के उपकार को प्रदर्शित कर सकूं। ''शब्दकोश के शब्द अधूरे महामानव का गौरव गाने। सुर सरगम के साज फीके प्रकाश पुंज का तेज बताने।'' कविता की पंक्तियों से महामहिम महापुरूष महाश्रमण जी को नमन किया।

शासन श्री के नेतृत्व में साध्वी परमयशा जी, विनम्रयशा जी, मुक्ताप्रभा जी ने ''नई भोर आंगन में छायी है नई बहार। शासन श्री को दर्शन देने पधारे गण मंदार।'' गीत का संगान करते हुए शांतिदूत चारित्र चक्रवती का स्वागत किया।

दर्शन लाभ लिया प्रमुख व्यक्तियों ने –

उस समय आचार्य श्री महाश्रमण जी बीकानेर प्रवास कर रहे थे। वर्धमान महोत्सव का अवसर था। अतः देश के विभिन्न भागों से लोग दर्शनार्थ आए। उदासर बीकानेर का निकटवर्ती गांव है। इसलिए सहज ही हजारों लोगों ने अनशनस्थ साध्वी श्री राजकुमारी जी के दर्शनों का लाभ लिया एवं साध्वी श्री के संथारे को ऐतिहासिक गौरवशाली बताया। इस अवसर पर तेयुप राश्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश जी नाहर, सूरज देवी महिला मंडल की राश्ट्रीय अध्यक्ष, प्रसिद्ध उघोगपति मूलचंदजी बोथरा, सुमेरमलजी दफ्तरी, बसंत जी नौलखा कल्याण मित्र चिकित्सा प्रभारी सेवाभावी शांतिलाल जी सुराणा, तेयुप पूर्वाध्यक्ष मर्यादा कोठारी, श्रेश्ठ संगायक प्रकाश जी श्रीमाल आदि ने अनशन धारी के दर्शन कर अपने सौभाग्य की सराहना की। साध्वी जसवती जी के ग्रुप को पांच दिन सेवा का मौका मिला।

पूज्य प्रवर के द्धारा अनशन अनुमोदना में प्रत्याख्यान –

महिमामय गणमंदार महानायक 17 जनवरी को समुपासना की श्री सन्निधि प्रदान करके उदासर से बीकानेर पधारे। बीकानेर की प्रवचन सभा में परमपूज्य गुरूदेव श्री महाश्रमण जी ने धर्मसंघ के साथ संथारे के उपलक्ष्य में बाजरी की रोटी खाने का त्याग कराया। हजारों श्रद्धालुओं ने भक्ति निष्ठा का परिचय देते हुए पूज्यप्रवर के त्याग प्रत्याख्यान का अनुसरण करते हुए बाजरी की रोटी का एवं स्वेच्छानुसार त्याग प्रत्याख्यान किये । पूज्यप्रवर ने धर्म संघ के साथ साध्वी श्री को त्यागमय भावांजलि अर्पित की।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भक्ति भीड़ से तेरापंथ भवन उदासर खचाखच भरा रहता। हर वक्त भवन में रंगरली रहती। गीतों की गूंजन से, जाप की स्वरलहरियों से तेरापंथ भवन का चप्पा चप्पा गुंजायमान था। पूज्यपाद के सान्निध्य में दर्शनार्थ आए श्रद्धालुओं का उदासर मे दर्शन हेतु आवागमन हर दिन जारी रहा। प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में भाई–बहन साध्वी श्री के संथारे का यश गौरव देखने आते। त्याग प्रत्याख्यान का रजिस्टर त्याग की महक से महकने लगा। लगभग 5 हजार लोगों ने संकल्प ग्रहण करते हुए शासन श्री को अन्तरमन की निष्ठा समर्पित की। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष आनन्दमल जी महनोत, जीवराज जी महनोत, डॉ. रामदेव जी, तिलोक चंद जी महनोत, कमल जी, हडमान जी, गोपीचंद जी, भँवरलाल जी चौपडा, सुन्दर लाल जी आदि ने जागरूकता से सेवा का लाभ लिया।

गुरूवर अब मोय तारो जी –

साध्वी राजकुमारी जी ने मुझे कहा – तुम गुरूदेव से मेरे संथारे का निवेदन कालूयशो विलास की इन पंक्तियों के साथ करना –''गुरूवर अब मोय तारो जी, अब मोय तारो, पार उतारो, कारज सारो जी। गुरूजी बिनवूं बेकर जोड़ विनतड़ी उर धारो जी।''

मैने आपकी भावना के अनुरूप पूज्यपाद की प्रवचन सभा में आपका जीवन परिचय प्रस्तुत किया एवं परिषद् में इस गीत की पंक्तियों का संगान किया। आपके आस्था आदर्श जैसे कालूगणि राज थे वैसे ही आपने आचार्य महाश्रमण को अपना आराध्य मानते हुए उनमें कालूगणि की दिव्य छटा छवि देखने का प्रयास किया।

दीपता संथारा–भजन मंडलियों का जयकारा –

साध्वी पानकुमारी जी की सहवर्ती साध्वी राजकुमारी जी के संथारा संलेखना के मंगलमय माहौल में तेरापंथ भवन में भजन मंडलियों की गूंज, गीतों की झंकार, जाप की स्वरलहरिया, आराधना के गीतों की आलोयणा, चौबीसी की चिन्मयता चरम शिखर पर रही। गंगाशहर महिला मंडल, गंगाशहर डाकलिया बन्धु, उदासर महिला मंडल, बीकानेर तेयुप मंडली, उदासर तेयुप मंडली, भीनासर डागा बंधु, देशनोक कालू – लूणकरनसर तेयुप मंडली ने शानदार गीतों का संगान किया एवं मृत्यु के महोत्सव की सराहना की।

महातपस्वी को जो कहा–कर दिखाया –

संथारे के प्रत्याख्यान से पूर्व पूज्य प्रवर ने पूछा – आप पक्के है ना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संथारा करवा दे ? साध्वी श्री ने कहा – गुरूदेव! 21 दिन आए तो भी पक्की हूँ। आपके पास क्या गजब की वचन सिद्धि थी या कोई पूर्वाभास था। यह तो आप स्वयं ही जानती थी। जब संथारा संलेखना सहित 21 दिन आपको आए। तब हमने अनुभव किया। आपने गुरू चरणों में जो निवेदन 21 का कहा वैसा ही 21 दिन का संथारा आपको आया। धर्मसंघ की ख्यात में आपका संथारा देदीप्यमान 21 ही रहा।

शांतिदूत के आदेय वचन सत्य के साक्षी –

महातपस्वी गुरूदेव ने साध्वी श्री जी के निवेदन को ध्यान में रखते हुए कहा – उन्हें उपवास बेला या तेला कराया जाए। संलेखना के रूप में उनको तेला ही आया। यह गुरूदेव के आदेय वचन का पहला जीवन्त साक्ष्य था। गुरूदेव ने एक संदेश फरमाया – अगर उचित लगे तो तिविहार संथारा कराया जा सकता है। वाकई में गुरू वाणी का कमाल हुआ कि शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी ने शासन श्री साध्वी राजकुमारी को 16 जनवरी को प्रातः 4:41 बजे तिविहार संथारा उनकी तीव्र भावना को देखते हुए करवाया। हालांकि गुरूदेव पधारने ही वाले थे पर राजकुमारी जी के प्रबल आग्रह पर शासन श्री पान ने अनुग्रह कराया। यह पूज्य श्री आचार्य महाश्रमण जी के आदेय वचनों का दूसरा अद्भूत निदर्शन था।

चौविहार संथारे की मांग पर पूज्य गुरूदेव ने फरमाया –पहले एक दिन चौविहार कराके देख लिया जाए। आचार्य प्रवर के अतीन्द्रिय कल्प के आधार पर एक दिन चौविहार का अभ्यास हुआ। एक फरवरी रात्रि को पूज्यपाद का संदेश आया –''शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी की उत्कट भावना है चौविहार संथारे की। अतः चौविहार संथारा करा दिया जाए।''

हर आदमी जीना चाहता है। मरना कोई नहीं चाहता। मौत आती है उसे अपने जबड़ों में जबरन पकड़कर ले जाती है। साध्वी राजकुमारी जी ने हंसते हंसते मृत्यु का स्वागत किया। चौविहार संथारे का प्रत्याख्यान कर मृत्यु को हार्दिक आमंत्रण दिया। साधनामयी जीवन शैली से शासन मन्दिर पर सुयश का कलश चढ़ा दिया।

समता की वादियों में साधना की महक –

साध्वी श्री का वेदना में समभाव बेजोड़ था। पैरों में सर्दी की वजह से घाव हो रहे थे। मुंह में छाले हो रहे थे। जीभ पत्थर जैसी कठोर हो गयी थी। संथारे में शरीर ने परीक्षा लेने में कोई कसर नहीं छोड़ी। शासन श्री साध्वी राजकुमारी संकल्प के रथ पर सवार थी। तन सुकुमार था पर मन का संकल्प

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सुकुमार नहीं था। यही वजह है संथारे में हर दिन आपके परिणामों की बाजी उच्च कोटि की रही।

''जिन्दगी कांटों का सफर है, हौंसला जिसकी पहचान है।
रास्तों पर तो सभी चलते है जो रास्ते बनाएं वहीं इंसान है।''

मैं मेरू ज्यों मजबूत हूँ –

साध्वी पानकुमारी जी ने पूछा –आपको संथारा कितने दिन आएंगा। साध्वी राजकुमारी जी ने फरमाया – भले कितने ही दिन संथारा आएं। मुझे कोई डर भय नहीं है। मेरे कण–कण में संथारा बसा है। मेरी हर कोशिका में संथारा बसा है। मैं मेरू ज्यों मजबूत हूँ। मैं एकदम सैठी हूँ। मुझे कोई विचलित नहीं कर सकता। साध्वी पानकुमारी जी ने हमें बताया –आपने केवल शास्त्रों में अनशन की गरिमा महिमा को पढ़ा ही नहीं हैं बल्कि उसे आत्मप्रदेशों में आत्मसात किया है। संथारे में मनोबल की मेरू जैसी मजबूती ही नाव किनारे लगाती है।

मेरी क्या ताकत–गुरूदेव की ताकत है –

साध्वी विनम्रयशा जी ने एक दिन पूछा – आपको संथारे में दुर्बल शरीर मे भी ऐसी विलक्षण शक्ति कैसे मिलती है। कहाँ से मिलती है। आप इन दिनों में तो एक नवकारसी भी नहीं कराते। एक छमछरी का उपवास भी आपसे मुश्किल से होता। अब इतनी शक्ति कैसे आ गयी ? आप बात–बात में फरमाते – मेरी क्या ताकत है गुरूदेव की ताकत है। शासन की ताकत है। मेरे लिए गुरूदेव शक्ति संप्रेषित कर रहे है। गुरूदेव का प्रताप है। गुरूदेव की कृपा हैं। गुरूदेव का अनुग्रह है। गुरूदेव ही माता–पिता है। गुरूदेव ही त्राण शरण है। गुरूदेव ही रक्षा कवच है।

साध्वी विनम्रयशा जी ने पूछा –आपने इतनी सारी बातें कहां सीखी। तब आप श्री ने कहा – ये सब बाते गणभक्ति की गण के प्रताप से अन्तरात्मा से निकलती है। ये सब गुरूदेव का प्रताप है। मेरे में क्या शक्ति है। हमें गुरूदेव का आधार है। गुरूदेव ही तारणहार है। हमारे लिए शक्ति का संसार गुरू का दरबार है। गुरूदेव महाश्रमण जी! उम्र से भले छोटे है पर शक्ति सम्पन्न है। गुरूदेव को दस आचार्यों की सम्पदा शक्ति सामर्थ्य साहस संदेश मिला है।महाश्रमण जी जन्म जन्मान्तर की शक्ति साधना का संचित कोष लेकर आए है। महाश्रमण जी गुरूदेव को कभी छोटा मत समझना। तुम देखना –हमारे ये गुरूदेव कितने नये–नये उन्मेष दिखाएंगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

13 से 23 तक कुर्सी पर –

94 वर्षीय साध्वी श्री जी ने 13 जनवरी को संथारे का संकेत दिया। तब से 13 जनवरी से 23 जनवरी तक संथारा स्वीकार करके आप दिन भर कुर्सी पर विराजमान रहते। रात को बड़ी मुश्किल से पाटे पर शयन कराया जाता। आपको कुर्सी पर बैठने से कमर दर्द में आराम रहता। संथारे में 23 तक कुर्सी पर विराजमान होना आपके आत्मबल का साक्ष्य था। 24 जनवरी को उदय चन्द जी चौपड़ा ने कहा – आज कुर्सी पर नहीं विराजे क्या ?साध्वी श्री ने कहा –कुर्सी पर बहुत बैठ गयी। अब नहीं बैठना है।

एक जनवरी तक हाथ ऊँचा करके जीकारा देते रहे –

साध्वी श्री जी एक फरवरी तक दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं को हाथ ऊँचा करके जीकारा दिराते रहे। आने वाले श्रद्धालुओं को त्याग प्रत्याख्यान की प्रेरणा करते रहे। श्रद्धालु उत्साह उमंगों से दर्शन के लिए आते। आपके दर्शन पाकर सहस्त्रगुना उल्लास से भर जाते।

साध्वी परमयशा जी का संसार पक्षीय भाई प्रकाश गोलछा को साध्वी श्री ने याद किया। तब प्रकाश हैदराबाद से दर्शन करने आया। शासन श्री का आशीर्वाद पाकर हर्ष विभोर हो गया। कोलकता से साध्वी परमयशा जी के काकीसा नोरती देवी एवं धनपत की धर्मपत्नी स्नेहा दर्शन करने आए।

ज्योतिषी वास्तुशास्त्री राजेश बांठिया अहमदाबाद से दर्शन करने आए अपनी सास चन्दा देवी जैन को साथ लेकर आए। उन्होंने ज्योतिष के आधार पर जो बताया वह प्रायः सत्य का स्तर बन गया।

साध्वी पानकुमारी जी की संसार पक्षीया पुत्री सुशीला, दोहिती आदि ने दर्शन सेवा आशीर्वाद का लाभ लिया। साध्वी मुक्ताप्रभा जी के सिंघी परिवार श्रीडूंगरगढ के मांजी आदि प्रायः सभी सदस्यों ने सेवा दर्शन का लाभ प्राप्त किया। साध्वी विनम्रयशा जी की संसार पक्षीया भाभी रचना एवं बहन विनोद बाई ने अन्तिम सेवा उपासना का अनुग्रह प्राप्त किया।

साध्वी राजकुमारी जी के संसार पक्षीय भतीजे कन्हैयालाल जी, एडवोकेट शासन सेवी एवं रोशन जी चोरड़िया के पूरे परिवार ने समय समय पर सेवा दर्शन का अन्तिम यात्रा तक लाभ लिया। सभी भक्तिमान भक्तों को अन्तिम दिन तक साध्वी श्री हाथ ऊँचा करके जीकारा देते रहे।

अन्तिम सांस तक जागरूक –

साध्वी श्री जी ने फरमाया –मैं बेहोश नहीं होऊंगी। मैं कोमा में नहीं जाऊंगी। मैं अंतिम सांस तक पूर्ण सजग रहूँगी। भिक्षु स्वामी मेरे सिरहाने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खड़े है। मेरे पिताजी चम्पालाल जी स्वामी सेवा मे उपस्थित है। मेरी मां फूलाजी सेवा में मौजूद है। मेरे अग्रगण्या साध्वी खूमांजी सेवा में हाजिर है। साध्वी परमयशा जी का भाई पन्नालाल (पितरजी) मेरी सेवा में हाजर नाजर रहता है। मुझे एक एक बात बताता रहता है वह छोटा सा बालक है पर बड़ा होशियार है और भी कितने कितने देवगण सेवा में रहते है सहजतया मेरी आत्मशक्ति उदीप्त है। ये देवी देव मुझे प्रोत्साहित प्रेरित करते हुए साहसिक बना रहे है इसलिए मैं आखिरी सांस तक पूर्ण सचेष्ट रहूंगी। जैसा साध्वी श्री ने फरमाया –वहीं यथा तथ्य हमने देखा। अन्तिम सांस तक आपकी पूर्ण जागरूकता बनी रही। ये तथ्य राजकुमारी जी के कथन के साक्ष्य है।

अद्भूत याद्दाश्त क्षमता –

आपकी अद्भूत यादाश्त क्षमता दो फरवरी तक अन्तिम सांस तक कायम रही। संथारे के दौरान हमने कितनी बार चौबीसी का संगान किया। कितनी बार आराधना का गायन किया। कितनी बार दशवैकालिक का पारायण किया। छज्जीवणिया के द्वारा आपको कितनी बार आलोयणा का सुअवसर मिला। आप हमारे साथ स्वयं स्वाध्याय करती। कहीं भी हमारे द्वारा कोई भूल होती आप तत्काल उसका परिष्कार करा देती। मैनें अन्तिम रात्रि को आपको कालूयशोविलास के कई गीत सुनाए। आपने बड़े ध्यान से सुनते हुए आनन्दाभूति की। जहां कहीं राग की कमी नजर आयी आपने उसका परिमार्जन भी कराया।

शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी के साथ आपका विध्नहरण, मुणीन्दमोरा, विमल–विवेक आदि ढ़ालों के संगान का नित्यक्रम था। 1 फरवरी को शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी आपको स्वाध्याय करा रहे थे। सहसा कोई पद विस्मृत होते ही आप उन्हें बता रहे थे।

ब्रह्ममुहूर्त्त में किया हर मांगलिक कार्य का शुभारंभ –

आपके मन में संलेखना की शुरूआत का संकल्प पैदा हुआ ब्रह्ममुहूर्त्त मे। प्रातः ब्रह्ममुहूर्त्त में ही आपने तिविहार अनशन ग्रहण किया। ब्रह्ममुहूर्त्त मे ही 2 फरवरी को आपने प्रयाण किया क्योंकि ब्रह्ममुहूर्त्त में जागरण की दिनचर्या आपकी लगभग 86 वर्षों से चल रही थी। उसी की निश्पति हमने देखी ब्रह्ममुहूर्त्त में प्रयाण तक की मांगलिक कार्यों की पूर्णाहुति।

शास्त्र सम्मत संलेखना –

साध्वी राजकुमारी जी का आहार और अनाहार का संतुलन बेजोड था। आप कम खाने में विश्वास करती। आप वर्षों से अल्पाहार करती। सैंकडों

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खाद्य द्रव्यों के आपको त्याग थे। दिन में दो प्रहर भोजन के बाद आप कराती। सन् 2007 से आप संलेखना के विशेष प्रयोग कराने लगी। संलेखना पूर्वक संथारे का शास्त्रीय विधान साध्वी श्री जी ने अपनाया। सब कुछ ब्रेन के कम्प्यूटर में मानो फीड कर रखा था जैसे ही अवसर आया लाभ उठाया।

संथारे का चमत्कार बिना चश्मे के देखना –

साध्वी श्री जी की आंखों पर 10–12 नम्बर का चश्मा लगा रहता था क्योंकि मोतियाबिन्द ऑपरेशन में लैंस नही लगा था। बिना चश्मे के आपको कुछ भी दिखाई नहीं देता। संथारे में कमाल का चमत्कार हुआ। आपको बिना चश्में के दिखायी देने लगा। अन्तर की ज्योति प्रकट हो गयी। कोई भी आता तो आप उसे नाम लेकर जीकारा दिराती। मैंने पूछा –क्या आपको बिना चश्में के दिखायी देता है ?आपने फरमाया – अब चश्मे की क्या दरकार है। अब तो अन्तर के पट खुल गए।

गुरूदेव ने संथारे का इन्हेलर दे दिया –

संलेखना संथारे से पूर्व आपको 4–5 दिन अस्थमा का भारी अटैक हो गया। आपका सोना उठना, बैठना दुश्वार हो रहा था। जैसे ही आप में संलेखना की शक्ति जागी। आचार्य प्रवर से संथारे का प्रत्याख्यान किया। तब से आपने कभी सांस के इन्हेलर को याद नहीं किया। जो इन्हेलर आप दिन में 4–5 बार लिराती। कई बार इन्हेलर लेने से भी सांस नहीं जमता। आपके पाटे पर ही हम रोटाकेप इन्हेलर रखते थे। संथारा लेने के बाद कफ खांसी सांस की सारी तकलीफें ठीक हो गयी। हमने पूछा – क्या आपको इन्हेलर याद नहीं आता?

साध्वी श्री जी ने फरमाया – इन्हेलर तो बाह्य उपचार है। आचार्य प्रवर ने मेरे पर इतनी कृपा बरसायी है। मुझे अध्यात्म चिकित्सा का वरदान दे दिया है। अब बाह्य साधन रूप इन्हेलर की जरूरत ही नहीं है। गुरूदेव ने तो मेरी सारी तकलीफें ही मिटा दी। फिर मैं इन्हेलर को क्यों याद करूं। ऐसी अगाध आस्था थी शासन श्री में शासननाथ के प्रति।

पूज्यपाद गुरूदेव मुझे दर्शन देने पधारेगे –

साध्वी राजकुमारी जी ने आत्मविश्वास के साथ कहा – गुरूदेव मुझे दर्शन देने पधारेगे। हमने कहा – गुरूदेव श्री 14–15 फरवरी को उदासर में पधार रहे हैं तब दर्शन होगे। आपने कहा – महामहिम महामना करूणा सागर प्रभुवर तय कार्यक्रम से पहले मुझे दर्शन दिराने पधारेंगे। किसी को विश्वास नहीं था कि क्या आपकी अन्दरूनी आकांक्षा का कल्पतरू फलेगा। साध्वी श्री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

की दो पंक्तियों के निवेदन ने धर्म शासन के धोरी राजराजेश्वर को रिझा लिया। भक्तिभरी प्रार्थना से भगवान ने बिना किसी आग्रह के उदासर पादार्पण का 13 जनवरी को निर्णय ले लिया। यह साध्वी श्री के जीवन का स्वर्णिम पृष्ठ था। जहाँ तेरापंथ के महान अनुशास्ता एक साध्वी के लिए 25 किलोमीटर का चक्कर लेकर पधारे। साध्वी श्री जी के मुख से बारम्बार ये शब्द उच्चरित होने लगे –धन्य है। भिक्षु शासन, धन्य है आचार्य महाश्रमण जिन्होंने इस उद्घोषणा से मुझे धन्य बना दिया। एक छोटी सी साध्वी की छोटी सी अर्ज पर परम गुरू की महरबानी से आप गद्गद् थी। आपने कहा– मुझे तारने तारणहार पधारेंगे।

दो पूनम दो पक्खी मिली –

आचार्य श्री महाश्रमण जी का तय कार्यक्रम 14–15 फरवरी उदासर में होने वाला था। साध्वी श्री जी ने आचार्य प्रवर का एक दिन ओर दिला दिया उदासर वालों को। सोलह फरवरी को पूज्य श्री उदासर पधारे उस दिन पौष शुक्ला पूनम और पक्खी थी। पुनः आचार्य श्री उदासर पधारे उस दिन भी माह शुक्ला पूनम और पक्खी थी। गुरूकृपा और साध्वी श्री जी की महरबानी से उदासर वालों को सम्पूर्ण कलाओं से परिपूर्ण दो पूनम और दो पक्खी मिली।

21 जनवरी को आचार्य प्रवर का एक संदेष आया –

अर्हम्

दिनांक 21.01.2014

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा)

खूब आत्मस्थ रहने का प्रयास करे। समता भाव बना रहे। शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी (प्रथम) आदि साध्वियों का योग उनकी साधना में सहायक बना रहे।

आचार्य महाश्रमण

परमाराध्य के द्वारा प्राप्त संदेश को आप अपने मस्तक पर चढ़ाती। हाथ जोड़कर गुरूचरणों में असीम उपकार के लिए नतमस्तक हो जाती।

परिषद् के मध्य प्रभु ने दिया संदेष –

28 जनवरी 2014 को प्रातः प्रवचन की परिषद् के मध्य पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने साध्वी श्री के संथारे के उपलक्ष्य में संदेश दिराया –

''हमारी साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) उदासर में है। उनके संथारा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चल रहा है। हम यहाँ से उन्हें बार–बार धन्यवाद देते है साधुवाद देते है। उन्होंने संथारा स्वीकार किया है। उनकी अच्छी साधना चले । अनशन में परिणाम खूब निर्मल रहे।

साध्वी पानकुमारी जी (प्रथम) आदि साध्वियाँ वहाँ पास में है उनसे खूब आध्यात्मिक संबल मिलता रहे। आज संथारे का 13 वां दिन है। तपस्या सहित 16 वां दिन है। उदासर वाले आए है। साध्वी श्री कल्याण की दिशा में आगे बढ़े। मंगल कामना।''

आचार्य श्री महाश्रमण

प्रेक्षाध्यान से पादोगमन तुल्य स्थिति –

साध्वी श्री जी ने योगक्षेम वर्ष में प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रेक्षाध्यान के कई शिविरों में गुरू सन्निधि में भाग लिया। प्रेक्षाध्यान के कई शिविरों में आपने प्रेक्षा साधकों को प्रशिक्षण प्रयोग कराया। आपका स्वयं का जीवन प्रेक्षाध्यान की प्रयोगशाला था। हर दिन आधा घंटा आप ध्यान कराती। जीवन के सन्ध्याकाल में ध्यान के प्रति विशेष आकर्षण रहा।

संथारे की पावन घड़ियों में आप फरमाती – मुझे नींद नहीं आयी थी। मैं ध्यान कर रही थी। जाप का क्रम चलता तब आप कई बार फरमाती – अब मैं ध्यान करूंगी। ध्यान ने आपको आत्मसाक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ाया।

नवकार मंत्र के साधक कैलाश जी छाजेड़ बायतू वाले एवं प्रेक्षासाधक जीतमल जी गुलगुलियां ने साध्वी श्री जी को ध्यान का प्रयोग कराया।

आप लम्बे समय से एक पार्श्व शयन कराती। उस दिन ध्यान के दौरान आपकी शरीर की मुद्रा स्वतः बदल गयी। शारीरिक मुद्रा स्वतः बदल गयी। शारीरिक मुद्रा पादोपगमन सम हो गयी। आखिरी चार दिनों तक पादोपगमन संथारे जैसी स्थिति रही। वहीं मुद्रा अन्तिम सांस तक बनी रही। हमने अनुभव किया आप भक्त प्रत्याख्यान से पादोपगमन संथारे तुल्य स्थिति में अवस्थित हो गयी। ऐसा पादोपगमन ज्यों संथारा किसी विरले ही साधकों को प्राप्त होता है। साध्वी श्री जी ने पूर्ण सजगता से संथारे की अन्तर यात्रा करते हुए हमें पादोपगमन संथारे का स्वरूप दिखा दिया।

एक फरवरी की रात हमारी परीक्षा –

एक फरवरी की रात उनकी परीक्षा की रात बन गयी थी। रात्रि में 10 बजे तक धम्मजागरण के स्वर मुखर हो रहे थे। आपके परिणामों की बाजी अध्यात्म के शिखर को छू रही थी।

रात्रि के समय कुछ वेदना बढ़ने लगी। आत्मप्रदेशों में खिंचाव शुरू हो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गया। हम साध्वी श्री को शरण सूत्र, नवकार, आलोयणा आदि सुना रहे थे। अकस्मात् तीन बजे के आसपास आपके हाथ नीले पड़ने लगे। शारीरिक स्पन्दन मन्द होने लगे। आत्मप्रदेशों की हलचल कम होने लगी। हम तीनों साध्वियाँ शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी के नेतृत्व में अपने दायित्व के प्रति जागरूक थी।

उदासर के श्रावक, श्राविकाएं भी प्रातः 4:00 बजे के आसपास भवन में आ गए। हम सभी अरहंते शरणं पवज्जामि ..... सुना रहे थे। मैने पूछा –मत्थएण वंदामि। आप शरणे सुन रहे है ?आपने आंख से इशारा किया। गले से हां शब्द किया। हां मैं शरणे सुन रही हूँ। सबको शरण सूत्र सुनाने वाले शासन श्री जी शरणसूत्र सुनते सुनते शरणमय बन गए। तेरापंथ शासन में वरिष्ठ संयम पर्याय प्राप्त 94 वर्षीय शासन श्री जी सबके देखते देखते 2 फरवरी को प्रातः 5 बजकर 2 मिनट हमसे अलविदा हो गए। ललाट पर त्रिवली बनी। भुकृटियों में स्पन्दन हुआ। आंखे पहले से ही खुली थी। नयनपथ से वे खुली आंखों से अमरता का संदेश दे रहे थे।

हम सब खड़े खड़े देख रहे थे। देह वहीं मौजूद थी, चमक दमक पहले से ज्यादा देदीप्यमान थी पर कालू कर कमलों से 8 वर्ष 7 माह 14 दिन की उम्र में दीक्षित साध्वी राजकुमारी जी की आत्मा वहां नही थी।

शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी प्रथम श्रीडूंगरगढ की अनन्य सहयोगी साध्वी राजकुमारी जी नहीं रही। गोगुन्दा के चोरड़िया परिवार की राजकुमारी नहीं रही। साध्वी पानकुमारी जी ने साध्वी श्री की यश परिमल का जिक्र करते हुए पार्थिव देह का विसर्जन किया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मधुर मुस्कान, सकारात्मक सोच, अनवरत पुरूशार्थ, अदम्य आत्मविश्वास साध्वी राजकुमारी जी की सफलता के सूत्र थे। ब्रह्ममुहूत्त में जागरण, योग साधना, आगम स्वाध्याय, आपकी ताजगी के रहस्य थे। शांति, समाधि सहजता सौहार्द, समन्वय आपकी पहली और आखिरी पसन्द थे। पांच महाव्रत पांच समिति और तीन गुप्ति की सजगता से साधना आपका आत्मोदय का प्रतीक था गुरू के प्रति सर्वात्मना समर्पण से गुरूकृपा का आशीर्वाद आपको सदा मिलता रहा। आपका पसन्दीदा काव्य था कालू यशोविलास।

संथारे की तीव्र भावना को आचार्य श्री महाश्रमणजी ने साकार कराया। महातपस्वी के श्री मुख से अनशन ग्रहण कर साध्वी श्री राजकुमारी जी धन्य कृत्पुण्य हो गयी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कोऽहम् से सोहम् की यात्रा करने वाली, धम्मो मंगल मुक्किठं आर्ष वाक्य को आत्म सात करने वाली आचार्य श्री महाश्रमण जी के द्वारा शासन श्री से

गौरवान्वित साध्वी श्री राजकुमारी को शत् शत् नमन।

नयनों में अभिनव पुलकन रम्य सुरम्य नव उद्योत
अनुभवों की दिव्य सम्पदा गण निष्ठा की जगमग ज्योत

साध्वी श्री राजकुमारीजी के अंतिम दर्शन करते हुए संसारपक्षीय परिवारजन

अंतिम संस्कार का मेला –

2 फरवरी को गंगाशहर में प्रातः व्याख्यान में परमाराध्य आचार्य प्रवर के पावन सान्निध्य में दीक्षा महोत्सव का आयोजन आयोज्य था। इस दृष्टि से 2 फरवरी को उदासर में दोपहर 2 बजे अन्तिम यात्रा का प्रोग्राम तय किया गया। अंतिम यात्रा में उदासर गांव एक महानगर जैसा बन गया। देव विमान ज्यों बैकुंठी में विराजित साध्वी श्री जी की श्री सुषमा शत–गुणित हो रही थी।

परम पावन के उद्‌गार –

7 फरवरी को आचार्य प्रवर के सान्निध्य में चरण में गंगाशहर में स्मृति सभा का आयोजन रखा गया। विज्ञप्ति में जो विचार प्रकाशित हुए। वे इस प्रकार है –

साध्वी राजकुमारी जी गोगुन्दा के चोरड़िया परिवार से संबद्व थी। लगभग सवा आठ वर्ष की बालावस्था में वि.स. 1985 में उन्होंने अपनी संसार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पक्षीया मां के साथ परमपूज्य कालूगणि से दीक्षा ग्रहण की। वे पहले साध्वी खूमां जी और बाद में साध्वी पानकुमारी जी प्रथम के साथ लंबे समय तक रही। हमने उन्हें 'शासन श्री' के रूप में संबोधित किया। उनकी भावना पर 16 जनवरी को हम बीकानेर से उदासर गए। उस दिन उन्हें तिविहार संलेखना के चौथे दिन तिविहार अनशन का प्रत्याख्यान करा दिया गया था। हमारे वहां जाने के बाद हमने उन्हें पूर्वाह्न 11:41 बजे पुनः तिविहार अनशन का प्रत्याख्यान कराया। प्राप्त जानकारी के अनुसार 1 फरवरी को उन्होंने चौविहार अनशन स्वीकार किया। अगले दिन प्रातः 5:02 बजे पर उदासर में वे कालधर्म को प्राप्त हो गई। लगभग 86 वर्षों का उनका संयम पर्याय रहा। वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ के वर्तमान साधु–साध्वियों में उनका दीक्षा पर्याय सर्वाधिक था। महामना कालूगणि की चरण शरण में आने वाली संघ की एक अच्छी सदस्या चली गई। उनकी आत्मा शीघ्र मोक्ष श्री का वरण करे।

शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी प्रथम की सहवर्तिनी साध्वियों को सेवा का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ तथा उदासर श्रावक समाज ने भी जागरूकता पूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया। परमाराध्य आचार्य प्रवर ने साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) की स्मृति में चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगरस का ध्यान किया।

तन छूटे पर संकल्प न टूटे –

14 फरवरी 2015 को महामहिम गुरूदेव का उदासर की पावन धरा पर पादार्पण हुआ। 15 फरवरी को प्रवचन सभा में पूज्यपाद ने शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी के लिए उद्‌गार व्यक्त करते हुए फरमाया – आचार्य सोमप्रभ द्वारा प्रस्तुत मनुष्य जन्म रूपी वृक्ष के छह फल– जिनेन्द्र पूजा, गुरू पर्युपासना, अनुकंपाभाव, सुपात्रदान, गुणानुराग व आगम श्रवण का उल्लेख व विशद चर्चा करते हुए आचार्यवर ने कहा –मानव जीवन एक अवसर है साधना करने का। तन छूटे तो छूटे पर संकल्प न टूटे, साधना को मोह कर्म न लूटे। मानव जीवन का लाभ उठाते हए साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) ने अनशन किया और अपना काम सिद्ध कर लिया। वे शासन श्री संबोधन से संबोधित थी। वे कालूगणि से दीक्षित स्थविर साध्वी थी। हमने उन्हें संथारा पचखाया। दूसरे दिन हम पुनः वहां गए, दर्शन दिए कुछ क्षण बैठे और विहार किया। उदासर छोटा–सा गांव है। शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी प्रथम वयोवृद्ध साध्वी है। क्षेत्र के लोगों में अच्छी भावना भक्ति रहे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लय :– गुरूवर को निकट बुलाए .....
अनशन का गौरव गाए, गुरू आज्ञा शीश चढ़ाए
हम शासन श्री जी राजकुमारी की गरिमा महिमा गाए
अनशन से सुयश बढ़ाए
भैक्षवगण नमाम्यहम् / महाश्रमण नमाम्यहम् / शासन श्री नमाम्यहम्

गोगुन्दा की राजदुलारी राजकुमारी जी सौभागी
मात तात की इकलौती चोरड़िया कुल किस्मत जागी
चार प्रमुखा श्री के युग को निहारा निज नयनों से
चार गणिवर की कृपा का बयान करती वचनों से
सब कुछ विलक्षण पाया, उदासर भाग्य सवाया।

कालू कर कमलों से दीक्षित बालवय संन्यास है
तुलसी त्राण शरण सुहाए महाप्रज्ञ प्रकाश है
महाश्रमण प्रभु का क्या कहना, बनाया इतिहास है
अठारह दिन संथारा शुभ साधना की सुवास है
आराधक पद को पाए, मृत्यु का महोत्सव छाए।

मर्यादा में रहना सहना सीख सलोनी अमर है
आराधे गण गणि दृष्टि आस्था अनहद प्रवर है
सहजानन्द की छवि पुलकित जीवन पोथी प्रखर है
समतामय सूरत पावन, महिमामय अद्भूत जीवन।

अनशन के महायान से शिवपुर चले ध्रुवयोग से
बढ़ती चढ़ती भाव श्रेणी आत्मबल के योग से
हजारों दर्शनार्थी आए भाव भक्ति योग से
चकित विस्मित मनोबल से तपोबल जपयोग से
अरिहन्त शरण मनभाया, भिक्षु बाबा को ध्याया।

साध्वी पान की 70 वर्षीय अनुपम जोड़ी छोड़ चले
शासन श्री जी शासन श्री को आज अकेले कर चले
परमयशा जी विनम्रयशा जी, सेवाभावी मुक्ता मिले
आशीर्वाद दिराया सबको, उदासर नित फले फूल
गुरूकृपा से गुरूता आए, गणिवर वरदान दिराए।

डॉ. साध्वी परमयशा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पूज्यवरों के संदेष– शासन श्री को देते नव उन्मेष

अर्हम्

दिनांक 04.03.2005

साध्वी राजकंवर जी।

खूब चित्त समाधि में रहे।

स्वाध्याय, जप आदि का प्रयोग यथासम्भव चलता रहे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

युवाचार्य महाश्रमण

सुजानगढ़

संवाद मिला कि साध्वी राजकुंवर जी अस्वस्थ हो गई। अपेक्षित उपचार चले। चित्त समाधि बनी रहे। निर्भीकता बनी रहे। साध्वी पानकुमारी जी आदि साध्वियों का योग उनके स्वास्थ्य लाभ और चित्त समाधि में सहायक बना रहे और कोई आवश्यकता हो तो हमें जानकारी मिल जाए।

दिनांक 18.06.2007 युवाचार्य महाश्रमण

उदयपुर

अर्हम्

दिनांक 05.07.2007

साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा)खूब मनोबल रखे। निर्भीक रहे। आत्मबल रखे। चिकित्सा सेवा सम्यक्तया हो जाए। साध्वी पानकुमारी जी आदि साध्वियों का योग स्वास्थ्य लाभ और चित्त–समाधि में सहयोगी बना रहे।

तुलसी निकेतन युवाचार्य महाश्रमण

मंगलिक क्या सुनाएं –साध्वियाँ स्वयं मंगल है।

अर्हम्

दिनांक 24.06.2007

साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा) काफी अस्वस्थ है। खूब चित्त समाधि में रहे। अपेक्षित उपचार सम्यक्तया हो जाए। चातुर्मास की दृष्टि से साध्वी पानकुमारी जी कोई चिन्ता न करे। कुछ दिनों बाद अपेक्षानुसार पूछवा सकती है। उन्हें क्या करना है।

युवाचार्य महाश्रमण

उदयपुर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

दिनांक 19.02.2009

साध्वी राजकुमारी (गोगुन्दा)

खूब चित्त समाधि मे रहे।
स्वास्थ्य का ध्यान रखे।
प्रलम्ब संयम पर्याय आपके
जीवन की महती उपलब्धि है।
संयम पर्यव निर्मलतर रहे।
स्वाध्याय, जप आदि का प्रयोग चलता रहे।

युवाचार्य महाश्रमण
बीदासर

अर्हम्

दिनांक 17.02.2010

साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा)

लम्बो संयम पर्याय मिल्यो है।
खूब निर्मलता बणी रहवै।
स्वाध्याय, जप चालतो रहवै
चित्त समाधि बणी रहवै।

युवाचार्य महाश्रमण
श्रीडूंगरगढ

अर्हम्

साध्वी राजकुमारी जी

स्वास्थ्य का ध्यान रखें।
आध्यात्म की ओर आगे बढ़े
स्वयं में रहते हुए धर्मसंघ की सेवा करें।

युवाचार्य महाश्रमण

अर्हम्

दिनांक 07.07.2012

शासन श्री साध्वी जी राजकुमारी जी परम

पूज्य श्री कालूगणी द्वारा दीक्षित साध्वी है,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जिन्होंने चार पीढ़ियां देखली है।

खूब आत्मस्थ रहे, यथोचित उपचार करा लिया जाए।

मंगल कामना

आचार्य महाश्रमण

अर्हम्

दिनांक 10.03.2012

साध्वी राजकंवर जी (गोगुन्दा) संयम

पर्याय के 84 वर्ष सम्पन्न करने जा रही है।

बहुत ही महत्वपूर्ण बात है। अब ज्यादा से ज्यादा आगम स्वाध्याय व जप करें। खूब चित्त समाधि में रहे।

आचार्य महाश्रमण

अर्हम्

दिनांक 13.01.2014

साध्वी पानकुमारी जी प्रथम के लिए साध्वी राजकुमारी जी को

पहले उपवास, बेला, तेला आदि करवाया जा सकता है और उचित लगे तो तिविहार संथारा पचक्खाया जा सकता है।

आचार्य महाश्रमण

नाल

अर्हम्

दिनांक 13.01.2014

साध्वी श्री राजकुमारी जी (गोगुन्दा) को आराधना आदि ग्रंथ यथासंभव सुनाया जाए। साध्वी पानकुमारी जी आदि साध्वियाँ उन्हें खूब चित्त समाधि पहुँचाने का प्रयास करती रहे।

आचार्य महाश्रमण

नाल

अर्हम्

दिनांक 13.01.2014

मेरा 16 जनवरी को उदासर जाने का भाव है।

आचार्य महाश्रमण

नाल

सांय 8:30 बजे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

दिनांक 21.01.2014

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा)

खूब आत्मस्थ रहने का प्रयास करे समता भाव बना रहे। शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी प्रथम आदि साध्वियों का योग उनकी साधना में सहायक बना रहे।

आचार्य महाश्रमण
गंगाशहर

अर्हम्

दिनांक 28.01.2014

हमारी साध्वी श्री राजकुमारी जी (गोगुन्दा) उदासर मे है। उनके सथारा चल रहा है। हम यहाँ से उन्हें बार–बार धन्यवाद देते है साधुवाद देते है। उन्होंने संथारा स्वीकार किया है उनकी अच्छी साधना चले। अनशन में परिणाम खूब निर्मल रहे। साध्वी पानकुमारी जी प्रथम आदि साध्वियाँ वहाँ पास में है। उनसे खूब आध्यात्मिक सम्बल मिलता रहे। आज संथारे का 13 वां दिन है तपस्या सहित 16 वां दिन है। उदासर वाले आए है। साध्वी जी कल्याण की दिशा में आगे बढ़े। मंगल कामना।

आचार्य श्री महाश्रमण
गंगाशहर

अर्हम्

दिनांक 01.02.2014

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी गोगुन्दा को उनकी भावना हो तो चौविहार संथारा पचखाया जा सकता है।

आचार्य महाश्रमण
गंगाशहर
सायं 7.23 बजे
माघ शुक्ला द्वितीया 2070

अर्हम्

पूज्य कालूगणी द्वारा दीक्षित साध्वी राजकंवर जी (गोगुन्दा) अभी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उदासर में है। उन्हें मैं ''शासन श्री'' साध्वी राजकंवर जी (गोगुन्दा) के रूप में स्वीकार कर रहा हूँ। ऐसा करके एक तरह से मैं कालूगणी को श्रद्धा अर्पण कर रहा हूँ। वह श्रद्धा कालूगणी तक पहुँच जाए, ऐसी मेरी भावना है।

आचार्य श्री महाश्रमण
आषाढी पूनम
वि.स. 2069
जसोल चातुर्मास

अर्हम्

साध्वी राजकुमारी जी

अच्छी साधना करें।

आचार्य श्री महाश्रमण
दिनांक 25.07.2011

अर्हम्

साध्वी श्री राजकुमारी जी

संयम पर्याय में वर्तमान में सर्वाधिक साधना करने वाली साध्वी श्री राजकुमारी जी है। आपकी संयम साधना उत्तरोत्तर तेजस्विता प्राप्त करे और तेरापंथ धर्म संघ में संयम पर्याय का कीर्तिमान स्थापित करे।

इसी मंगल भावना के साथ।

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी खूब अच्छी साधना करें। शताब्दी मनाएं।

मंत्री मुनी
सुमेरमल जी स्वामी
दिनांक 25.07.2011

अर्हम्

दिनांक 16.02.2000

साध्वी श्री राजकंवर जी (गोगुन्दा)

संघीय उपयोगिता की दृष्टि से साधन के प्रयोग की प्रार्थना स्वीकृत की जाती है। बशर्ते सहवर्ती साध्वियों के स्वास्थ्य में कोई कठिनाई न हो उन्हें साधन चलाने की सुविधा हो।

इस स्वीकृति की अवधि दो वर्ष की होगी। भविष्य के लिए पुनर्विचार किया जा सकेगा।

आचार्य महाप्रज्ञ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी स्वस्थ रहें
प्रसन्न रहें। चित्त समाधि मे रहे।
स्वाध्याय, जाप से चेतना को भावित करे।
मंगल कामना। अच्छी साधना करें।

आचार्य श्री महाश्रमण

अर्हम्

दिनांक 03.07.2012

साध्वी राजकुमारी जी (गोगुन्दा)

खूब आत्मस्थ रहे, जप, स्वाध्याय आदि करते रहे। अस्वस्थता का यथोचित उपचार करा लें।

साध्वी विनम्रयशा जी गिर गये ऐसा ज्ञात हुआ, वे भी यथोचित उपचार करा लें।

आचार्य श्री महाश्रमण
जसोल

अर्हम्

दिनांक 11.04.2013

शासन श्री साध्वी पानकुमारी जी की सहवर्ती शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी दीर्घ संयम पर्यायवाली साध्वी है खूब आत्मस्थ रहे। ध्यान, जाप, अध्यात्म में रहे।

उन्हें साध्वियाँ खूब सहयोग देने का प्रयास करे।

आचार्य महाश्रमण
लाडनूं

अर्हम्

साध्वी श्री राजकुमारी जी (मोटे गांव)

शरीर का कद जितना छोटा, उत्साह उतना ही घना। आत्मविकास के पथ पर अभय होकर बढो। अनुप्रेक्षाओं का प्रयोग कर साधना के नए आयाम उद्घाटित करो। शरीर की दुर्बलता पर मत अटको। आत्मा की अनन्त क्षमता को ध्यान में रख अपनी साधना बढ़ाती रहो। यथाशक्ति कामकाज भी करती रहो।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
दिनांक 11.04.1997
बीदासर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

आदरास्पद साध्वी श्री राजकुमारी जी

आपने छोटी उम्र में साधना का पथ स्वीकार किया। आपकी साधना उत्तरोत्तर आगे बढ रही है। आप आगम–स्वाध्याय पर विशेष ध्यान दें। अन्तर्मुखता का विकास होता रहे, इस दृष्टि से आत्मनिरीक्षण और आत्मपरीक्षण का उपक्रम चलाती रहें। व्यवहार मे मधुरता बढे और अन्तरंग मे समत्व बढे, इसके लिए संवेगों का सन्तुलन अपेक्षित है। सात दशकों की साधना का निःश्यन्द आपकी चित्त समाधि में सहयोगी बनेगा, ऐसा विश्वास है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

अर्हम्

साध्वी श्री राजकुमारी जी,

आपने बाल वय में साधु जीवन स्वीकार किया गुरू कृपा से आप हर स्थिति में संतुलित रही। साध्वी श्री खूमांजी के दीर्घ कालीन सान्निध्य में आपने पूर्ण समाधि का जीवन जीया। अब साध्वी श्री पानकुमारी जी के साथ अच्छी साधना चल रही है। अवस्था के कारण पदयात्रा मे कठिनाई है। साधन यात्रा का पक्ष भी सरल नही है। फिर भी सापेक्ष सहयोग की भावना से काम चल रहा है।

आप अपने मनोबल को पुष्ट रखे। ध्यान, स्वाध्याय आदि का नियमित क्रम चलाती रहे। छोटी साध्वियों को संस्कार देती रहे। आपके स्वस्थ और समाधिमय जीवन के लिये मंगल भावना।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
टमकोर
दिनांक 20.03.2000

अर्हम्

साध्वी राजकुमारी जी

स्वाध्याय, ध्यान, अनुप्रेक्षा और जप– इस चतुष्टयी का आलम्बन लेकर हर क्षण आत्मस्थ बने रहें। आत्मा को देखने का प्रयास करें। गुरूदेव द्वारा रचित पद्य याद रखें–

मूल स्त्रोत है धर्म का, आत्मा की पहचान।
एके साधे सब सधे, यही परम विज्ञान।।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
सुजानगढ़
दिनांक 04.03.2005

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पुनश्च दीक्षा के आठ दशक सम्पन्न कर 81 वें वर्श प्रवेश पर बहुत मंगल कामना।

अर्हम्

साध्वी राजकुमारी जी गोगुन्दा कालू युग की वयोवृद्ध साध्वियों में से एक हैं। उन्होंने बहुत छोटी उम्र में दीक्षा ली और अपने सामने उपस्थित कठिन समय में बड़ी दृढ़ता का परिचय दिया। उनका स्वभाव भी बड़ा शान्त और सौम्य है। साध्वी श्री खूमां जी के साथ रहकर अपनी साधना को परिपुष्ट किया। अब अपनी ही साथी साध्वी पानकुमारी जी के साथ साधना को आगे बढ़ाए।

वकील साहब कन्हैयालालल जी ने याद दिलाया कि श्रावक शुक्ला अष्टमी को जीवन के 81 वर्ष पूरे कर 82 वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। 82 वें वर्ष के प्रवेश पर उनके प्रति यह कामना है उनकी साधना निर्विध्न चलती रहे। शरीर कमजोर है पर मनोबल मजबूत है। जप, ध्यान, स्वाध्याय में क्षण–क्षण का उपयोग करे।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
केलवा
दिनांक 25.06.2011

अर्हम्

दिनांक 04.07.2012

उदासर में शासन श्री राजकुमारी जी अस्वस्थ है। अच्छी तरह उपचार कराया जाये, उन्हें जप एवं आराधना सुनायी जायें।

साध्वी विनम्रयशा जी के भी गिरने के कारण चोट आ गई। काम करन वाली दो ही साध्वियाँ है। दोनों मनोबल रखें और विशेष सेवा का अवसर मानकर उत्साह से काम करे, देव, गुरू, धर्म के प्रताप से शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करे। यही मंगल भावना है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
जसोल

अर्हम्

साध्वी श्री राजकंवर जी !

इस बार बहुत अस्वस्थ रहीं। शरीर वैसे ही दुर्बल है। मनोबल के अभाव में कुछ भी कर सकना कठिन है। आप अपने मनोबल को बनाएं रखें। कर्मो के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कर्ज से उऋण होकर हल्केपन का अनुभव करें। संकल्प, जप आदि प्रयोगों से तथा औषधोपचार से स्वास्थ्य लाभ करें और आनन्द का अनुभव करें।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

अर्हम्

साध्वी श्री राजकुमारी जी!

आपका शरीर दुर्बल है, पर मनोबल ठीक है। उत्साह की तो बात ही अलग है। आपने छोटी उम्र मे दीक्षा ली। कई कसौटियां हुई। आप खरी उतरी। अब जीवन का सन्ध्याकाल है। क्षण–क्षण जागरूकता रहे। जप, स्वाध्याय आदि में समय को सफल बनाएं।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
दिनांक 18.02.2010
श्रीडूंगरगढ

अर्हम्

शासन श्री साध्वी श्री पानकुमारी जी की सहयोगिनी साध्वी श्री राजकुमारी जी मनोबली साध्वी है। फिलहाल उनको श्वास की तकलीफ हो रही है। उचित उपचार के साथ अनुप्रेक्षा का प्रयोग कर स्वास्थ्य –लाभ करें।

साध्वी परमयशा जी आदि तीनों साध्वियाँ उनकी सेवा और समाधि के प्रति पहले जागरूक है ही।

स्वास्थ्य लाभ के लिए मंगलकामना।

दिनांक 11.01.2014

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा
भीनासर

अर्हम्

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी जीवन–यात्रा के 93 वें जन्मदिन सम्पन्न कर अब 94 वें जन्म में जा रही है। आपकी अन्तर्मुखता बढ़ती रहे। स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि करती रहे। परम समाधि में रहे यही मंगल कामना। वहाँ आकर पूरी सेवा कराने का भाव है।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

अर्हम्

शासन श्री साध्वी राजकुमारी जी सौभाग्यशाली है जो आज आचार्य महाश्रमण जी के शासन में 94 वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। आप अतीन्द्रिय

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्ञान को प्राप्त करें। अपने अनुभवों से संघ का गौरव बढ़ाए।

शासन श्री साध्वी पानकुमारी (प्रथम)

अर्हम्

साध्वी श्री राजकुमारी जी !

शारीरिक क्षमता कम होने पर भी आप हिम्मत कर बीदासर आ गए। गुरू–दर्शन, प्रवचन, श्रवण तथा मर्यादा महोत्सव देखने का अवसर मिल गया। अब आपका समय जप, स्वाध्याय में बीत रहा है। एक–एक क्षण का समुचित उपयोग होता रहे। आत्मरमण का अनुभव करें। दीर्घ श्वास प्रेक्षा का प्रयोग कर निर्विचारता की स्थिति में प्रवेश करने का लक्ष्य बनाएं।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

बीदासर

दिनांक 17.02.2009

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीश्री राजकुमारी जी की जन्म कुण्डली

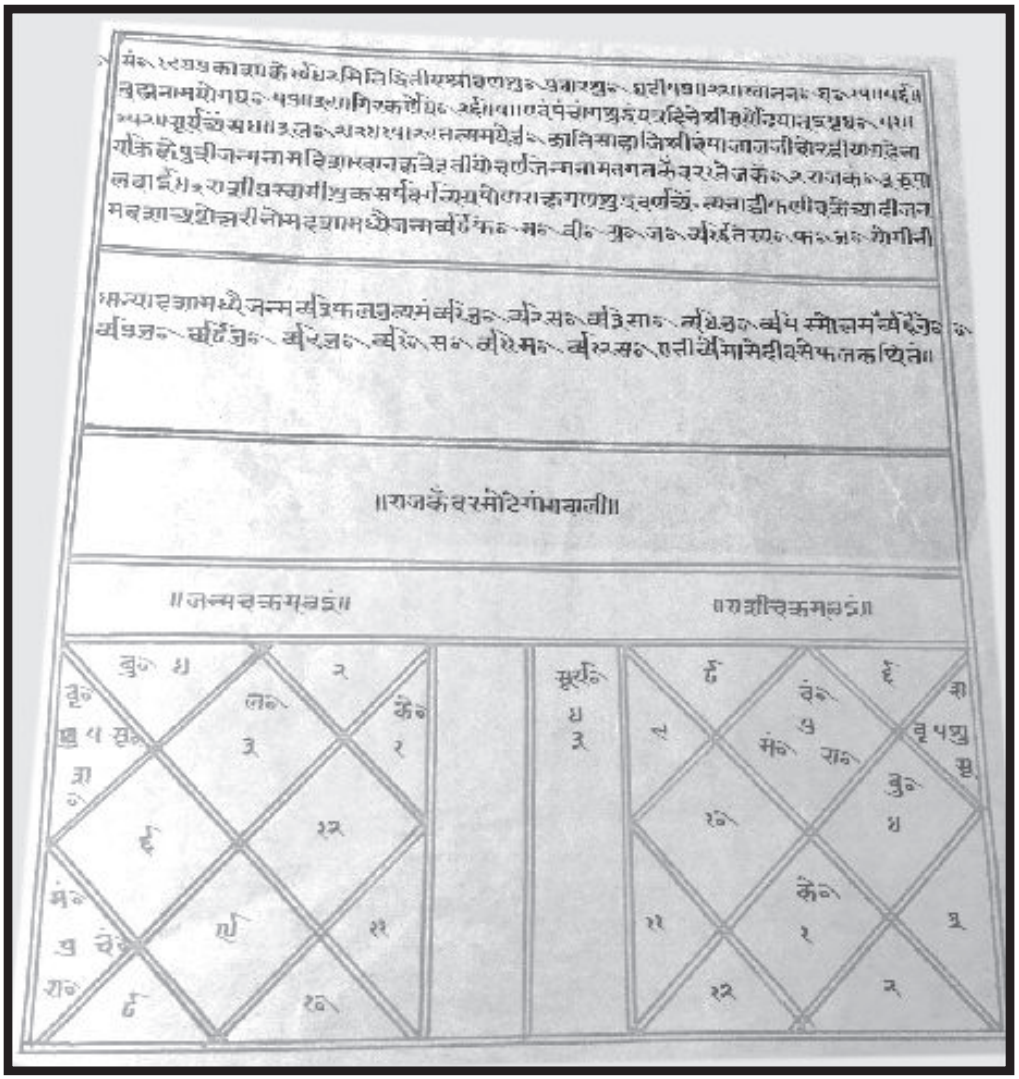

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमणजी साध्वी राजकुमारीजी को
संथारा का प्रत्याख्यान कराते हुए

साध्वी श्री राजकुमारीजी के अंतिम दर्शन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

'शासन श्री' साध्वी राजकुमारी जी गोगुन्दा
(जीवन परिचय)

जन्म	:	वि.सं. 1977 श्रावण शुक्ला अष्टमी (गोगुन्दा) उदयपुर, चोरड़िया परिवार
दीक्षा	:	वि.सं. 1985 चेत्र कृष्णा सप्तमी अष्टमाचार्य कालूगणिराज द्वारा 8 वर्ष 7 माह 14 दिन की बालवय में पड़िहारा में।
परिवार	:	साध्वी फूलां जी मातुश्री के साथ मां बेटी की युगल दीक्षा आपके पिताश्री चम्पालाल जी ढाई साल पहले दीक्षित हो गए।
गुरूकुलवास	:	10 वर्ष रहने का सौभाग्य मिला।
विशेष	:	क्षमा की प्रतिमूर्ति साध्वी खूमांजी के साथ 36 वर्ष तथा बाद में 'शासन श्री' साध्वी पानकुमारी जी (प्रथम) श्रीडूंगरगढ की सहयोगी।
शासन श्री अलंकरण	:	वि.स. 2069 में महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा जसोल में
संयम पर्याय वरिष्ठ	:	जैन धर्म तेरापंथ शासन में रिकॉर्ड संन्यास काल 86 वर्ष
कुल उम्र	:	94 वर्ष
यात्राएं	:	हरियाणा, पंजाब, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान
अनशन–प्रदाता	:	16 जनवरी 2014 पौष पूर्णिमा वि.सं. 2070 आचार्य श्री महाश्रमण जी द्वारा प्रातः 11:41 बजे
देवलोक गमन	:	2 फरवरी 2014 वि.सं. 2070 माघ शुक्ला तृतीया।
संलेखना संथारा	:	3+18 कुल 21 दिन
कंठस्थ	:	दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, बृहत्कल्प, आयारो, निशीथ, आवश्यक, शान्त सुधाररस, सिन्दूर प्रकर, पंचसूत्रम्, तेरापंथ प्रबोध, तुलसी प्रबोध, श्रावक संबोध, आचार–बोध, व्यवहार–बोध, संस्कार–बोध, चौबीसी–आराधना, भिक्षु–गीता, आलम्बन– सूत्र, समस्त अष्टकम् आदि।

ISBN 81-7195-306-9

₹50

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org